फरीदाबाद

मजदूर समाचार

पुस्तिका पाँच

जुलाई 2020

जनवरी 2015 से दिसम्बर 2015

सम्भव है
कुछ प्रस्थान बिन्दु मिलें।

सहयोग : पाँच–दस–बीस रुपये।

जनवरी 2015

नटखट गिलहरी ने जंगल उगाया

''जब होता है, तो यह होता है'' पिछले अंक के 'सात अरब में गोधूलि वेला का आगमन' को पढ कर, सोचते हुये एक महिला मजदूर बोली। आगे बोली, '' ये निष्कर्ष नहीं है किसी अनुभव का। बल्कि, ये एक करंट है जो जीवन को गति देता है।''

कैसे ?

'' अनुभवों की चोहद्दी को हर समय सब इन्सान तोड़ते हैं। उस में दरारें पड़ती हैं। उसे पार किया जाता है। ये इतना तेजी से होता है, इतने रूपों में होता है कि, पार करने वाले तक उसके पहलुओं को स्मृति में नहीं रख पाते। हर तरफ रिसाव होता है, चौतरफा दरारें पड़ती हैं — शब्द कम पड़ते हैं। धरातल उपजाऊ है, नये शब्द उगा देगा।''

क्या ये सब दिखता है ?

''आसपास गौर से देखिये। एक जीवंत करंट है, जो हर एक से प्रस्फुटित हो रहा है। एक थिरकन है ; प्रत्येक में दमक आती-जाती रहती है। ये करंट, ये थिरकन, ये आती-जाती दमक खलल पैदा करते हैं।

''अनुभव के दायरे कभी-कभी जकड़ लेते हैं। कुछ आदतें इन्हें कवच दे देती हैं। दूसरों से उभरते करंट इन दायरों और आदतों को अस्थिरता में लाते रहते हैं। मेरे मन में हर वक्त ये सवाल उठता है कि फिल्मों में कौन होता जो सब के लिये गाना गा पाता है ? किन में ये क्षमता होती है कि वे सब के लिये गा सकें ? जो सात अरब के लिये गा सकें ?''

ये ''दूसरे'' कौन हैं जिन से ये करंट उभरते हैं?

'' 'दूसरे' कोई भी हो सकते हैं। 'दूसरा' कुछ भी हो सकता है। पाँच सौ साल से चला आ रहा दोहा भी हो सकता है ; प्राचीन पहेली भी हो सकती है ; फुलझड़ी भी हो सकती है ; टूटता तारा भी हो सकता है ; गत्ते थामे, बातचीत में लीन, किसी फैक्ट्री के लोग हो सकते हैं ; एक खत हो सकता है ; एक पशु हो सकता है ; पक्षियों का झुण्ड हो सकता है ; समन्वय की लहर हो सकती है ; वायुयान द्वारा आसमान में छोड़ी धुँयें की लकीर, महासागर में उफनती लहरें, क्षितिज में लटका सूरज हो सकते हैं। उदार मन का एक आवेग हो सकता है ; मानसून के आगमन की गर्जन हो सकती है।

''दिन-रात, रात-दिन अनंत, अनगिनत करंट हम से होते हुये, बल देते और बल लेते हुये विद्यमान रहते हैं।

''गिलहरी को ही ले लो। दिन-रात, रात-दिन अनंत, अनगिनत गुठलियाँ यहाँ-वहाँ गाड़ देती है। कुछ को खा लेती है, कुछ छूट जाती हैं, कुछ को भूल जाती है'', वो हँसी। ''जंगल उग आता है।

''आप और मैं गिलहरी भी हैं, गुठली भी हैं, जंगल भी हैं।'' ■

''अस्वीकार-इनकार'' के मुखर करंट

1998 के ग्रीष्म-काल में मजदूर लाइब्रेरी में कई दिन लंबी बातचीतें हुई। इन में शामिल थे कई फैक्ट्रियों के 35-50 वर्ष आयु के, कई सालों से परमानेन्ट मजदूर। चर्चाओं में शामिल कुछ साथियों के नाम याद हैं – चिन्तामणि, दूधनाथ, हरिलाल, भूपेन्द्र, सुखबीर सिंह, रामसागर, मदन, प्यारे लाल, हारुण, गुरदीप, अशोक, रामधारी, रमेश, बाबू, नारस, इरशाद, रामचन्द्र, समय सिंह, सुरेन्द्र, राजनारायण, महेन्द्र, मढई, रघुवरदयाल, बासू, नानक, मोहन, राजेश, रामचेत, जानकी, अमर, सुरजीत, ब्रह्मप्रकाश, अकबर, पंचम, सतनाम, प्रीतम, जवाहर, प्रताप, प्रेम सिंह, भूपत, किशन, पातीराम, शीतला, सुभाष, उदय, दयाशंकर, सतबीर, धर्मपाल, बिरखा, सतीश, सुलेमान, रामदुलारे, राजेन्द्र प्रसाद, पीताम्बर, लालाराम, परमानन्द, ब्रह्मदेव, रामफल, शिव कुमार, विजय बहादुर, छोटेलाल, बाबूराम, भजनलाल, अक्लीम, रामतीरथ, राजबली, पुरुषोत्तम।

संवादों ने कार्यस्थलों के अनुभव और समझ से आरम्भ होते हुये एक विस्तृत रूप लिया। अगस्त 1998 के मजदूर समाचार के अंक में इनकी एक रूपरेखा चिन्हित की गई। यहाँ हम उसे फिर प्रकाशित कर रहे हैं। कहा जाता है कि जब भी कोई लड़की तरंग उत्पन्न करती है, उसकी पृष्ठभूमि में माँ से, दादी से, नानी से, मामी से, चाची से, ताई से, बहनों से, सहेलियों से अनेकों आदान-प्रदानों का बल होता है। आज परमानेन्ट वरकरों की काफी आलोचनायें होती हैं। पर एक ऐसा करंट अब भी उनके बीच है, जिस से सब लोग बल और ऊर्जा पाते हैं, पा सकते हैं।

———————————————————

जीवन में हम कई बातें, चीजें, राहें, व्यवहार अस्वीकार करते हैं। हमारे यह इनकार कोई ठहरे हुये, स्थिर प्रकृति के नहीं होते। जिन्हें हम एक समय अमान्य करते हैं उनमें से कुछ को बाद में स्वीकार करते हैं तो कई नये इनकार भी आरम्भ करते हैं। क्या स्वीकार करते हैं और क्या अस्वीकार करते हैं यह हमारे जीवन को गहरे तौर पर प्रभावित करते हैं। किस-किस को मानें तथा किस-किस से इनकार करें पर बार-बार आपस में चर्चायें करना स्वाभाविक तो है ही, अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है। यहाँ कुछ मजदूरों के बीच अस्वीकार-इनकार पर हुई चर्चाओं में उभरे कुछ पाइन्ट विचार-विमर्श तथा समृद्धि के लिये प्रस्तुत हैं।

- ***'' किसी वरकर की सुपरवाइजर से, मैनेजर से शिकायत नहीं करना।''***

'' किसी मजदूर के खिलाफ मैनेजमेन्ट की तरफ से गवाही नहीं देना।''

यह बहुत सामान्य इनकार हैं। इन आम अस्वीकारों के पीछे अनुभवों से उत्पन्न हुये तथा मजदूरों में व्यापक स्तर पर फैले यह अहसास, यह समझ हैं :

– गलती किस से नहीं होती? आज तुम्हें फँसाया तो कल मेरा नम्बर। अपने बीच विवादों के समाधान के लिये मैनेजमेन्ट को पँच बनाना अपने लिये काँटे बोना है।

– एक-दूसरे के प्रति निजी दुश्मनी का होना, एक-दूसरे पर शक करना मजदूरों के बीच तालमेल में आड़े आते कँटीले तार हैं। बिना आपसी तालमेल के मैनेजमेन्ट का मुकाबला करना बहुत ही मुश्किल है।

– और, मैनेजमेन्ट को मजबूत करना अपने पक्ष को कमजोर करना है।

जगह-जगह और बार-बार के लीडरों व लीडरी के अनुभवों ने इधर व्यापक स्तर पर लीडर-लीडरी को अस्वीकार बना दिया है। यह देख कर कि मैनेजमेन्ट और लीडरी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, आपसी विवादों को लीडरों के पास ले जाने से भी मजदूर बड़े पैमाने पर इनकार करने लगे हैं।

अपने बीच के विवादों को शीघ्र हल करने के लिये आपस में मिल-बैठ कर मामले निपटाना सरल, सस्ता और बिना खतरे का रास्ता है। यह राह चौड़ी होती नजर आ रही है और इसका आधार है अपने बीच गैरबराबरी को अस्वीकार करना। यह सही है कि सब बराबर नहीं हो सकते पर यह भी सही है कि आपस में हमारा व्यवहार ''गैरबराबरी नहीं'' पर आधारित होता है तो हमारे बीच बढिया तालमेल होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति की साझेदारी होती है। आपसी रिश्तों में '' गैरबराबरी नहीं'' की बुनियाद हर मजदूर द्वारा खुद कदम उठाने तथा मजदूरों की टोलियों के बीच तालमेल का भी आधार है।

- ***'' किसी की बराबरी करना अस्वीकार है। अगर 500 पीस निर्धारित हैं तो उतने ही बनाते हैं, यह नहीं कि वह 600 पीस बना रहा है तो हम भी बनायें।''***

'' होड़ वाला काम नहीं करते। मजदूरों की होड़ में अधिक माल निकालना अस्वीकार है।''

'' कभी भी वाहवाही के चक्कर में ज्यादा उत्पादन नहीं किया।''

यह भी बहुत सामान्य इनकार हैं। स्कूल, रेडियो, टी वी के द्वारा होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन के जो संस्कार देने के प्रयास होते

हैं उनके विपरीत फैक्ट्रियों में होड़ की यह आम अस्वीकृति मजदूरों के अनुभवों पर आधारित है :

– अपने सहकर्मियों के साथ कम्पीटीशन में पड़ने का सीधा नतीजा सब के लिये काम के बोझ का बढना, काम की रफ्तार का बढना होता है।

– ज्यादा काम, तीव्र काम स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

– तीव्रतर काम का एक और अर्थ है ज्यादा संख्या में हाथ-पैर कटना।

– अधिक काम करने का मतलब है कम लोगों की उत्पादन के लिये जरूरत। दरवाजे पर छँटनी की दस्तक।

– ज्यादा व तीव्र काम तन को तो खींचता ही है, मन को सिकोड़ता भी है। मात्र पैसों के लिये खटने के दौरान हँसी-मजाक व बातचीत के लिये वक्त नहीं हो तो पगला जायेंगे।

मजदूरों के बीच होड़ मैनेजमेन्ट की शक्ति में वृद्धि करती है और मजदूरों के लिये नुकसान ही नुकसान लिये है इसीलिये वरकर परस्पर प्रतियोगिता से नफरत करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर परेशानी उठा कर भी इसे रोकते–रोकती हैं।

तभी तो मैनेजमेन्टें होड़ पैदा करने के लिये विद्वानों को रिसर्च में लगाये हैं और मशीन के पुर्जों के विकास की तरह मजदूरों के वास्ते मानव संसाधन विकास (एच. आर. डी.) विभाग खोले हैं। इन्सानों को मशीन के पुर्जे की तरह देखने वाले यह लोग टाइम स्टडी, टी पी एम, टी क्यू एम, बी पी आर, आई ई नोर्मस् की डाइयों में मजदूरों को घिसा-घिसु कर फिट करने की कोशिश करते हैं।

फैक्ट्रियों में क्लासें लगा कर मैनेजमेन्टें विश्व विद्वानों के ज्ञान-विज्ञान की भूल-भुलैया के जरिये जो होड़ पैदा करने में लगी हैं उसे फुस्स करने के लिये होड़ की अस्वीकृति पर मजदूरों में व्यापक चर्चायें आवश्यक हैं।

● ***''आपसी रिश्तों पर पैसों की परछाई तक अस्वीकार है।''***

रुपये-पैसों के प्रति अनमनापन तो व्यापक है ही, आपसी रिश्तों में पैसों को पूरी तरह नकारना युवाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि अधिक व्यापक है। फ्री का फैलाव हो रहा है और रुपये-पैसों की अस्वीकृति तेजी से उभर रही है।.....

धरने पर बातचीत

आई.एम.टी. मानेसर में प्लॉट 192 सैक्टर-4 सिथत ***मुंजाल किरियु*** के 195 स्थाई मजदूर 24 सितम्बर 2014 से फैक्ट्री के बाहर धरने पर बैठे हैं और फैक्ट्री में उत्पादन कार्य जारी है। सन् 2013 से इस फैक्ट्री में मजदूरों और मैनेजमेन्ट के बीच तीखी खींचातान चल रही है। सितम्बर 2014 में योजना बना कर, तैयारी कर, उकसा कर कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को फैक्ट्री के बाहर किया। विवरण मजदूर समाचार के अक्टूबर 2014 अंक में है।

मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों से धरना-स्थल पर अक्टूबर और नवम्बर में विस्तार से बातचीत हुई। इधर 4 जनवरी को तीसरी बार मुंजाल किरियु फैक्ट्री गेट पर तीन महीने दस दिन से धरने पर बैठे मजदूरों से काफी बातें हुई। कड़ाके की सर्दी में कामचलाऊ प्लास्टिक शीटों से ढके स्थान पर दिन-रात धरने पर बैठने से ज्यादा चकित करने वाली बात है : समय बीतने के साथ अपनी स्थिति के कमजोर होते जाने पर भी इन मजदूरों का अड़े रहना, आडू बने रहना।

इस बार की बातचीत में फैक्ट्री मजदूरों से घनिष्टता से जुड़े रहे अमरीका से आये एक मित्र भी थे। एक जगह टिके हुये, ठहरे हुये, जड़ धरने का बहुत-ही कम प्रभाव पड़ता है। यह मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों ने भी खूब भुगता है। ऐसे में चलने वाले, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने वाले, गतिशील धरने पर विचार करना बनता है। सुबह की शिफ्टें आरम्भ होने के समय अपनी बातें लिखे गत्ते थामे दस-बीस मजदूरों का एक-दूसरे से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर उन रास्तों पर खड़े होना जहाँ से बड़ी सँख्या में मजदूरों का आना-जाना होता है। यह गतिशील धरना है। ऐसी एक राह पर एक दिन, दूसरे रास्ते पर दूसरे दिन, तीसरे दिन तीसरी राह पर इन्डस्ट्रीयल एरिया में गत्ते ले कर खड़े होना चलता-फिरता धरना है। भोजन अवकाश के समय 15-20 मिनट के लिये गत्ते लिये मुंजाल किरियु मजदूरों का मुंजाल शोवा फैक्ट्री गेट पर जाना, होण्डा गेट जाना, ओरियन्ट क्राफ्ट गेट जाना गतिशील धरना है। तारीख के दिन मजदूरों का गत्ते ले कर श्रम विभाग कार्यालय पर खड़े होना चलता-फिरता धरना है। लघु सचिवालय पर, सरकारी अस्पताल पर, बस अड्डे पर, स्कूल-कॉलेज के पास, अदालत के पास गत्ते ले कर खड़े होना गतिशील धरना है। चलते-फिरते धरने के लिये फैक्ट्री गेट का धरना-स्थल सुस्ताने और चर्चा करने का अड्डा बन जाता है। चलता-फिरता, गतिशील धरना एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों का मामला बनाने, व्यापक समाज का मामला बनाने की क्षमता लिये है।

अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स

प्लॉट 399 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री से 1 नवम्बर 2014 को अचानक निकाले गये ठेकेदारों के जरिये रखे 310 मजदूरों ने फैक्ट्री गेट के पास धरना आरम्भ किया था। श्रम विभाग में शिकायत-तारीखें, प्रदर्शन, पर्चा, ज्ञापन, मीटिंगों में लीडरों के भाषणों से बात बनती नहीं देख, 25

नवम्बर को 2 पुरुष और 5 महिला मजदूरों ने अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल आरम्भ की थी। विवरण मजदूर समाचार के दिसम्बर 2014 अंक में है। भूख हड़ताल किये 16 दिन हो गये तब बिना किसी समझौते के मजदूरों ने भूख हड़ताल समाप्त कर दी। ऐसे में हाई कोर्ट की राह सुझाने वालों को क्या कहेंगे ? मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के 147 मजदूर अगस्त 2012 से जेल में हैं और इस हाई कोर्ट ने उन्हें जमानत देने से मना कर दिया है। जनवरी 2015 के आरम्भ में भी मारुति सुजुकी मानेसर के 147 मजदूर जेल में हैं।

कागज नहीं आया है

उद्योग विहार गुड़गाँव, आई एम टी मानेसर, फरीदाबाद में कई फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 1 नवम्बर 2014 से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन की बात की तब कम्पनी अधिकारियों और यूनियन लीडरों ने एक स्वर में कहा कि सरकार से कागज नहीं आया है। कुछ प्रचारकों ने कहा कि हरियाणा में बनी नई सरकार ने नये ग्रेड कैन्सल कर दिये हैं, कुछ अन्य ने नये ग्रेड 1 जनवरी से, तो कुछ ने 1 अप्रैल से लागू होने की बातें की।

हरियाणा सरकार के श्रम विभाग की इन्टरनेट पर साइट पर 14 अगस्त 2014 का गजट छपा है। इस गजट में 1 नवम्बर से नये ग्रेडों का विवरण है और एतराज के लिये दो महीने का समय दिया है। इसलिये 14 अक्टूबर को एतराजों के लिये समय समाप्त हो गया। नये ग्रेडों पर किसी भी अदालत ने रोक नहीं लगाई है। हरियाणा में नई सरकार ने नये ग्रेडों में कोई फेर-बदल नहीं किया है। नये ग्रेड 1 नवम्बर 2014 से लागू समझें।

रही सरकार से कागज आने की बात, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करने का कागज सरकार से आये 80 साल हो गये हैं – 98 प्रतिशत फैक्ट्रियों में आज यह लागू नहीं है – साहबों से, लीडरों से पूछें। स्थाई काम-स्थाई मजदूर के कागज....

और बातें यह भी

★ ***राष्ट्रीय सहारा प्रेस मजदूर :*** '' प्लॉट सी-2, 3, 4 सैक्टर-11, नोएडा स्थित प्रेस में 2008 तक अखबार की सवा लाख प्रतियाँ प्रतिदिन छपती थी, घटते-घटते नवम्बर 2014 में चार हजार प्रतियाँ हो गई – अखबार बिकता ही नहीं। यहाँ सहारा परिवार की पत्रिका, सहारा बैंक के पासबुक व फार्म छपने के साथ-साथ बाहर का छपाई का काम भी होता है। सहारा प्रमुख सुब्रत राय 4 मार्च 2014 से जेल में और इधर तनखायें देने में देरी आरम्भ – अक्टूबर का वेतन 15 नवम्बर तक नहीं दिया था। मशीन विभाग में छपाई वाले 290 ऑपरेटर, कम्प्युटरों पर 250 वरकर, सम्पादकीय विभाग में 3-400 लोग, स्टोर, मार्केटिंग, डिस्पैच, गार्ड, ड्राइवर, सहारा समय टी वी के 250 वरकर – कुल मिला कर 4-5000 लोग और सब कम्पनी के रोल पर, सब स्थाई हैं। कम्पनी बन्द होने की कगार पर है। कैन्टीन ठेकेदार को कम्पनी ने 4 मार्च से भुगतान नहीं किया है, नवम्बर- मध्य तक 17-18 लाख रुपये बकाया। कर्मचारियों की भविष्यनिधि राशि कम्पनी अपने द्वारा बनाये ट्रस्ट में रखती थी। वरकरों के 51 करोड़ रुपये ट्रस्ट में होने चाहियें पर उसमें पैसे नहीं हैं, पी.एफ. ट्रस्ट का पैसा कम्पनी ने कारोबार में लगा दिया। कर्मचारियों द्वारा दबाव डालने पर भविष्य निधि संगठन ने कम्पनी से पी.एफ. के पैसे उसके पास जमा करवाने को कहा तो सहारा कम्पनी ने कहा कि पैसे नहीं हैं! वरकरों के पी.एफ. के 51 करोड़ रुपये गायब! हम ने काफी प्रयास किये हैं पर राष्ट्रीय सहारा प्रेस वरकरों की बातें कोई भी अखबार नहीं छापता।''

★ ***मंत्रा डॉट कॉम वरकर :*** '' दिल्ली-जयपुर मार्ग पर बिनौला गाँव, गुड़गाँव स्थित वेयरहाउस ई-मार्केटिंग का एक केन्द्र है। ऑनलाइन के करीब 4000 लोग एस के, ओम, राइजिंग आदि छह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। कम्प्युटर ऑपरेटर कह कर भर्ती करते हैं और फिर प्रवेश करते ही सब कामों में लगा देते हैं – पिकिंग, री-पिकिंग, बारकोड स्कैनिंग, रिजैक्ट को हटाना, क्रेट ढँग से लगाना, पैकिंग करना। भर्ती पर तनखा 20 हजार बताते हैं तो देते 12 हजार हैं। दो शिफ्ट, 9-9 घण्टे की बताते हैं और आर्डर ज्यादा होने पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर लॉजिस्टिक्स और क्वालिटी कन्ट्रोल वालों को तीन महीने किये ओवर टाइम के पैसे दिसम्बर-अन्त में तब दिये जब उन्होंने हल्ला मचाया – नये भर्ती क्यू सी भी यह कह कर साथ हो लिये कि हमारे साथ भी ऐसा होगा। भोजन कम्पनी सामान्य तौर पर देती है, सब को एक जैसा खाना और ज्यादा आर्डर के समय कम्पनी सुबह 8 बजे नाश्ता तथा दो बार चाय के साथ बिस्कुट देती है। कम्पनी ने स्वयं एक-दो स्टाफ वाले रखे हैं और वे भाषण देते हैं : कम्पनी ने तुम्हारे लिये बाराती वाला इन्तजाम किया है। ज्यादा आर्डर के समय साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं – बीमार होने पर भी छुट्टी नहीं, किसी प्रियजन की मृत्यु पर भी छुट्टी नहीं। जबरन ओवर टाइम। वरकर नौकरी छोड़ते रहते हैं। ठेकेदारों के दो-चार दिन किये काम के पैसे बचते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटे पैसे बचते हैं। ठेकेदारों के लोग गेट पर बैठे रहते हैं, काम ढूँढते वरकर आते हैं और ये लोग पकड़ लेते हैं।''

फरवरी 2015

''नटखट गिलहरी ने जंगल उगाया'' वितरण करने के पश्चात आई.एम.टी. मानेसर में शेयर्ड ऑटो में बैठ कर कई साथी चले। मित्सुबिशी फैक्ट्री में कार्य करता एक युवा बहुत मन लगा कर गिलहरी की स्मृति-अस्मृति के बारे में पढने लगा। पढ कर उसने कुछ सवाल उठाये।

पहला प्रश्न। औद्योगिक क्षेत्रों में नींव तक हिला देने वाली व्यापक क्रियाओं का जोश, सरूर, उत्कटता, मोहकता, ज्वार कहाँ जाते हैं ?

सवाल पर अनेक साथियों से विभिन्न स्थानों पर व्यापक, अस्थिर-चित्त करने वाले आदान-प्रदान हुये। एक साथी ने बतायाः आई.एम.टी. मानेसर में एक फैक्ट्री में प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन में सिर आने से हुई मृत्यु के 24 घण्टों के भीतर ही फरीदाबाद में दो फैक्ट्रियों में खलबली हुई और मैनेजमेन्टों को तत्काल कार्यस्थल पर सुरक्षा के उपाय लागू करने पड़े। इसे सुनने में एक सहमति थी कि प्रभाव स्थानीय नहीं रहते, उनका हस्तांतरण और स्थानांतरण लगातार होता रहता है। दुविधा इस पर थी कि इस हस्तांतरण के प्रभाव की उत्कटता और अवधि के उतार-चढाव का परिमाण और पैमाना क्या हैं। लेकिन यह मान्य रहा कि प्रभाव का छितराव अनियत, अनिर्धारित और अनिश्चित है।

दूसरा प्रश्न। नींव तक हिला देने वाली क्रियायें प्रचलित देखने और सोचने की आदतों का किस हद तक कब्जा हटा पाती हैं?

इस सवाल से सक्रिय हुये संवादों में बहुत उतार-चढाव रहा। ओखला से एक साथी की योजना फोकस में आई, जिसमें मारुति मानेसर के युवा राजनैतिक कैदियों को सोच में जीवंत रखने के लिये टी-शर्ट बनाना था। सब में सहमति थी कि घनिष्ठ और गतिशील, अदृश्य और प्रत्यक्ष जोड़ व मेल सब के बीच हैं। दुविधा इस पर थी कि ये भाषा में, माध्यमों में, अनेक रूपों में व्यापक अभिव्यक्ति और बल नहीं पाते। इस बार कोई मान्यता बन नहीं पाई, लेकिन ये सब का मानना था कि हालाँकि वे बाहर धुँधले पड़ जाते हैं, पर मिश्रित, घुमावदार, स्पिन लिये हुये, निराले कदम और सोच सब के कार्यस्थलों के भीतर व्यापक हैं।

तीसरा प्रश्न। गिलहरी रोई और नाची क्यों ?

ये सवाल पूछ कर वो मेट्रो स्टेशन पर उतर गया। बोला, नोएडा में रात को मामा के साथ गिलहरी पर बातचीत जरूर होगी।

मृत्यु पर

★ ***मैक्स शॉप मजदूर :*** '' प्लॉट 10 और 27 सैक्टर-6, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में स्टाफ के 500 लोग कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और सब मजदूर, 1100 मजदूर चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। यहाँ ***होण्डा, मारुति सुजुकी, मित्सुबिशी*** के लिये, अमरीका, जर्मनी, जापान निर्यात के लिये वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। यहाँ 18 अल्युमिनियम प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन, 32 सी एन सी, 35 वी एम सी मशीनों पर मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। शिफ्ट रविवार को बदलती है तब दिन में 12 घण्टे ही काम, पर कभी-कभी एक शिफ्ट वालों को शिफ्ट बदलने के समय लगातार 24 घण्टे काम करना पड़ता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है और टारगेट के लिये सुपरवाइजर-मैनेजर बहुत दबाव डालते हैं। गर्मियों में 750 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान वाले परिवेश में अतिरिक्त परेशानियाँ। वरकर नौकरी छोड़ते रहते है, फैक्ट्री में हर समय रिक्त स्थान की सूचना, भर्ती होती रहती है। इधर 16 जनवरी को रात 7 बजे से अगली सुबह 7 तक की शिफ्ट में कलीम अन्सारी प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन पर कार्य कर रहे थे। रात 2 बज कर 10 मिनट पर कास्टिंग पार्ट डाई में फँस गया और कलीम उसे निकाल रहे थे कि ऑटो प्लान होने के कारण अचानक मशीन चल गई। प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन में कलीम का सिर आ गया। तत्काल मृत्यु। मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। फैक्ट्री से बाहर निकल आये। फैक्ट्री 17 को बन्द, 18 जनवरी को भी बन्द, 19 को उत्पादन पुनः आरम्भ।''

★ फरीदाबाद में ***ओसवाल कास्टिंग*** 1 प्लान्ट (प्लॉट 48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया), ***महावीर डाई कास्टिंग*** (प्लॉट 153 तथा 165 सैक्टर-24), और ***ओसवाल ओवरसीज***-ओसवाल कास्टिंग 2 प्लान्ट (प्लॉट 21-22-23 सैक्टर-25) फैक्ट्रियाँ आपस में मैनेजमेन्ट स्तर पर जुड़ी हैं और मजदूर भी इनके बारे में इक्ट्ठे ही बात करते हैं। इन फैक्ट्रियों में अल्युमिनियम प्रेशर डाई कास्टिंग और मशीनिंग के जरिये ***टी वी एस, होण्डा, यामाहा, हीरो*** दुपहियों के संग ***सोना स्टीयरिंग, मितसोवा, ओरियन्ट फैन, जी ई मोटर, टाटा मोटर*** के हिस्से-पुर्जे और पोलैण्ड तथा अमरीका निर्यात के लिये पार्ट्स बनते हैं। इन फैक्ट्रियों में 2200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फस्ट प्लॉन्ट के ही मात्र 10-12 मजदूर परमानेन्ट हैं। तीनों फैक्ट्रियों में मजदूर दो बड़े ठेकेदारों, रंजन तथा प्राइवेट, और 20 छोटे ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। बहुत गर्म काम है, डेढ टन अल्युमिनियम पिघलाने वाली मेन भट्टियों से ग्रैफाइट कुठालियों में भर कर प्रेशर डाई कास्टिंग मशीनों की होल्डिंग फरनेसों में हर घण्टे पहुँचाया जाता है। सैक्टर-25 वाली फैक्ट्री में इसे फोर्क लिफ्टर से पहुँचाते हैं जबकि अन्य में एक कुठाली को दो मजदूर उठा कर ले जाते हैं। तीनों फैक्ट्रियों में एम्बुलैन्स नहीं है। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं, घायल तड़फते हैं तब रिक्शा ढूँढते हैं, साहब लोग यह भी कह देते हैं कि अपनी साइकिल पर ई.एस.आई. अस्पताल चला जा। काम करते-करते एक मजदूर, जयन्त मशीन पर गिर गया, बेहोश हो गया, लकवा मार गया – इलाज करवाने और क्षतिपूर्ति की बजाय धमका कर जयन्त को नौकरी से निकाल दिया। निर्धारित उत्पादन बढाते रहते हैं और इधर काम कम है कह कर मैनेजमेन्ट सप्ताह में 2 दिन छुट्टी करने लगी है जबकि बाकी के पाँच दिन 12-12 घण्टों की दो शिफ्टों में काम होता है। छुट्टी का मतलब मजदूरों को उस दिन की दिहाड़ी नहीं। आई.एम.टी. मानेसर में मैक्स शॉप में मजदूर की मृत्यु के अगले ही दिन ऑपरेशन हैड प्रेशर डाई कास्टिंग वालों के पास पहुँचा : सुझाव दो, शॉट मारने से पहले गेट लगाओ, डाई में प्रोब्लम है और कोई सुन नहीं रहा तो सीधे मेरे पास आओ। वैसे, डाई कास्टिंग वाले बन्दे अपनी बात मनवा लेते हैं, सिम्पल-सी बात है, मशीनें बन्द कर देते हैं। और, पहली जनवरी को सुबह बड़े साहबों ने आधा घण्टा भाषण दिये : मेहनत करो, कम्पनी घाटे में चल रही है।

अपने पैरों पर कुल्हाडी मारें या अपने पेट पर लात ?

ये मान कर चलना चाहिये कि अगर जिन्दगी की दो जरूरतों में अनबन हो रही हो तो व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी है। एक तरफ हमारी जरूरत है कि रोजगार रहे। दूसरी तरफ ये भी कि जिन्दगी धीमी मौत न रहे। फैक्ट्री से वेतन मिलता है, तो जहरीली गैसें, जानलेवा मशीनें, साँसों में रेशे-कण, इत्यादी भी। घर में राहत है, लेकिन फैक्ट्री का धुँआ, सिमेन्ट की धूल, बीमारियों की सम्भावना भी। रात के खाने में कल की मेहनत का जोर भी है, और कीटनाशक तथा रसायनिक खाद भी। याने कि इस दिशा में ये निश्चित है कि जिन्दगी होगी, मगर राम भरोसे।

इस से बाहर कैसे निकला जाये ? फैक्ट्रियाँ हर कहीं हैं। गाड़ियाँ भी। मतलब प्रदूषण भी सारी दुनिया की समस्या है। पेरिस में सरकार ने निजी गाड़ियाँ बन्द कर दी। अब हर कोई बस, ट्रेन ही लेता है। क्या फैक्ट्री बन्द की जाये ? क्या ये हो पायेगा ? फिर रोजी का समाधान? कोई कहता है आँख मूँद के काम करो। काम में ही खतरा है, आँख मूँदने पर तो और भी ज्यादा होगा। मतलब इस व्यवस्था में दो दानवों में से एक को चुनना होगा। तो मान लेना चाहिये कि गड़बड़ी दानवों में नहीं, व्यवस्था में है। फिर सवाल ये निकलता है, हम यहाँ कैसे पहुँचे? इसके आगे कैसे चलें?

– कुछ युवा मित्र

मुंजाल किरियु के बहाने

प्लॉट 192 सैक्टर-4, आई. एम.टी. मानेसर में 2003 में फाउण्ड्री और 2007 में मशीनिंग का कार्य आरम्भ हुआ। ***मुंजाल किरियु*** कम्पनी की इस फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी, होण्डा, टोयोटा, निसान, जनरल मोटर, ह्युन्दई*** कारों के ब्रेक डिस्क और ब्रेक ड्रम स्थाई, ट्रेनी, अस्थाई मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बनाते थे। सब मजदूरों की तनखा कम, प्रोविडेन्ट फण्ड में हेराफेरी, गर्म-भारी-अत्याधिक काम, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । अगल-बगल में काम करते मजदूरों में बनते जोड़ और बढते तालमेलों को डर तथा लालच से तोड़ने में कम्पनी फेल होने लगी। इस-उस बात पर मजदूरों द्वारा फैक्ट्री में उत्पादन बन्द करना आम बात बनी। फैक्ट्री पर मैनेजमेन्ट का कब्जा ढीला होते-होते 2012-2013 में कब्जा हटने की हालात बनने लगी।

बिचौलियों के बिना जब तक कम्पनियाँ मजदूरों पर नियन्त्रण बनाये रख पाती हैं तब तक कम्पनियाँ बिचौलियों को नहीं चाहती, बिचौलियों का विरोध करती हैं। लेकिन मजदूरों की हलचलें काबू से बाहर हो जाती हैं तब कम्पनियाँ मजदूरों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिये बिचौलियों से हाथ मिलाती हैं, बिचौलियों का इस्तेमाल करती हैं।

2013 के आरम्भ में मुंजाल किरियु फैक्ट्री में एक यूनियन स्थापित। कानून अनुसार परमानेन्ट मजदूर ही यूनियन के सदस्य। आज की परिस्थितियों में स्थाई-ट्रेनी-अप्रेन्टिस-अस्थाई मजदूरों में मेल से फैक्ट्री-स्तर पर वास्तविक मजदूर संगठन बनते हैं। मुंजाल किरियु में असल मजदूर संगठन को कमजोर कर उसे तोड़ने के लिये 26.11.2013 को तीन वर्ष के लिये यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते पर हस्ताक्षर। लेकिन स्थाई-ट्रेनी-अस्थाई मजदूरों के बीच जोड़ मजबूत साबित हुये और कानूनी तौर पर बाध्यकारी यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते को महीना भी नहीं हुआ था कि 3 ट्रेनी के पक्ष में 18.12.2013 को सब मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। पच्चीस दिन उत्पादन बन्द रहने के बाद यूनियन और मैनेजमेन्ट ने डिसमिस-डिसचार्ज वाले महीन जाल वाला समझौता किया।

मजदूर जब कम्पनी और यूनियन के झाँसे में नहीं आते। मजदूर जब शीघ्र थकते नजर नहीं आते और कम्पनी की उत्पादन की गरज बढती जाती है। तब मैनेजमेन्ट तथा यूनियन सीधे-सीधे मजदूरों से भिड़ने की बजाय साइड-स्टैप करती हैं। खीझ-भरे मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौतों में शब्दों के अधिक महीन जाल बुने जाते हैं और लीडर लोग मजदूरों की जीत, कम्पनी की पराजय की दहाड़ वाले भाषण देते हैं।

25 दिन फैक्ट्री में उत्पादन बन्द रहने के बाद 15.1.2014 को हुये यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते में ''जीत'' की असलियत मुंजाल किरियु परमानेन्ट मजदूरों के सामने अप्रैल में आने लगी। स्थाई मजदूरों ने मई में पहली बड़ी यूनियन से नाता तोड़ा और दूसरी बड़ी यूनियन का पल्लू पकड़ा। इस दौरान स्थाई-अस्थाई मजदूरों के बीच जोड़ों को काफी हद तक कमजोर कर चुकी मैनेजमेन्ट ने सीधे-सीधे परमानेन्ट मजदूरों पर आक्रमण किया। 195 स्थाई मजदूर 24.9.2014 को फैक्ट्री के बाहर और 400 अस्थाई मजदूर, 100 डिप्लोमा ट्रेनी, 43 स्थाई मजदूरों के जरिये फैक्ट्री में उत्पादन जारी। तब 25 सितम्बर को स्थाई मजदूरों ने दूसरी बड़ी यूनियन से नाता तोड़ा और फिर से पहली वाली बड़ी यूनियन का पल्लू पकड़ा।

195 स्थाई मजदूरों को मुंजाल किरियु फैक्ट्री से बाहर बैठे एक महीना हो गया, दो महीने हो गये, तीन महीने हो गये..... श्रम विभाग में तारीख-दर-तारीख। पहले-पहल बड़ी यूनियन वाले बहुत सक्रिय, फिर ढीले-ढाले, और फिर पूरी तरह किनारा कर लिया। कम्पनी ने नौकरी से निकालने के संग निलम्बन की सँख्या बढाई। अड़े रहने से कोई बात नहीं बनती देख, 24 सितम्बर से बाहर बैठे मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों ने 15 जनवरी को कम्पनी की शर्तें मान ली। नौकरी से निकाले 9 और 20 सस्पैण्ड को बाहर छोड़ कर बाकी स्थाई मजदूर फैक्ट्री के अन्दर चले गये। मुंजाल किरियु का विवरण मजदूर समाचार के सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर तथा जनवरी अंकों में है।

फैक्ट्रियों में और निवास स्थानों पर मजदूरों के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध, जोड़, तालमेल व्यापक हैं। फैक्ट्री के अन्दर स्थाई, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, कैजुअल, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर एक-दूसरे से बल लेते हैं और एक-दूसरे को बल देते हैं। एक फैक्ट्री के मजदूर दूसरी फैक्ट्री के मजदूरों से बल प्राप्त करते हैं और दूसरी फैक्ट्री के मजदूरों को बल प्रदान करते हैं। आज औद्योगिक क्षेत्रों में हजारों फैक्ट्रियों अगल-बगल में हैं। ''मजदूरों के अपने कौन हैं?'' का सीधा-सीधा उत्तर है अन्य मजदूर। और फिर, अन्य मेहनतकशों से सम्बन्ध हैं जो मजदूरों को शक्ति प्रदान करते हैं।

मार्च 2015

उद्योग विहार, गुड़गाँव में 12 फरवरी

✶ कापसहेड़ा बार्डर, दिल्ली पर वस्तुतः दो हजार एकड़ पर स्थित उद्योग विहार फेज-1, फेज-2, फेज-3, फेज-4, फेज-5 में हजारों औद्योगिक प्लॉटों में फैक्ट्रियों की भरमार के संग-संग आई. टी.-बी.पी.ओ. कार्यस्थलों की उल्लेखनीय सँख्या हो गई है। दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में रहते लाखों वरकर उद्योग विहार में काम करते हैं।

12 फरवरी को एक फैक्ट्री से दूसरी फैक्ट्री होते हुये, एक दर्जन-दो दर्जन फैक्ट्रियों के मजदूरों में हलचलें तीव्र हुई। बड़ी सँख्या में सक्रिय स्त्री और पुरुष मजदूरों के सम्मुख उद्योग विहार थाने की पुलिस तटस्थ हो गई। जल्दी से गुड़गाँव में अन्य स्थानों से 500 का पुलिस बल पहुँचा। दस-बीस हजार मजदूरों को देख यह 500 पुलिसवाले भी तटस्थ हो गये। शीघ्र ही विशेष पुलिस बल के 1500 उद्योग विहार पहुँचे। अति शीघ्र झज्जर-मेवात-फरीदाबाद जिलों से 500 पुलिसवाले उद्योग विहार भेजे गये।

12 फरवरी को दोपहर उद्योग विहार एक युद्ध-क्षेत्र बना था। कम्पनियाँ-सरकार एक तरफ और मजदूर दूसरी तरफ थे। डायरेक्टर और मैनेजर फैक्ट्रियाँ छोड़ कर भागे। फैक्ट्रियों की इमारतें और फैक्ट्रियों में मशीनें निशाना बनी। मर्सडीज कारें, 100 कारें भी क्षतिग्रस्त हुई। ढाई हजार पुलिस बल ने उद्योग विहार में कर्फ्यु जैसी स्थिति स्थापित की। कोई गिरफ्तार नहीं हुई, कोई गिरफ्तार नहीं हुआ। साँय तक उद्योग विहार में सब सामान्य।

– साहबों ने इसे गुड़गाँव में उद्योगों को बदनाम करने का षडयन्त्र कहा।

– पुलिस कमिश्नर ने इसे पूर्व नियोजित दँगा कहा और उद्योग विहार के बाहर से आये 200 लोगों की करतूत बताया। पकड़ने और सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया।

– सब फैक्ट्रियों को उद्योग विहार से उठा कर ऐसे स्थान पर ले जाने का प्रस्ताव दिया गया जहाँ मजदूरों पर नियन्त्रण हो।

– दँगे में शामिल सब को, दस हजार-बीस हजार मजदूरों को, नौकरी से निकालने और पकड़ में आने वालों को कठोर सजा का, लम्बे समय तक जेल में रखने का सुझाव दिया गया।

– तटस्थ रहने, निकम्मी साबित होने के लिये सब से पहले पुलिस को सजा देने की बात उठी।

– टारगेट बनी सब फैक्ट्रियों में सब सी सी टी वी कैमरे और रिकार्डर तोड़े पाये गये। इन कैमरों के जरिये पहचानने और गिरफ्तारियाँ करने की पुलिस की योजना धरी की धरी रह गई।

– कई जगह ऐसा हो सकता है कहते हुये किसी चतुर ने इसे कैमरों के नाकारा होने का सबूत बताते हुये 15 हजार लगाने चाहे डेढ लाख कैमरे लगाने को फिजूल की कसरत कहा। अन्य किसी चतुर ने फैक्ट्रियों में लगे सी सी टी वी कैमरों और रिकार्डरों के कनेक्शन फैक्ट्रियों में साहबों के केबिनों के अलावा कम्पनी डायरेक्टरों के घरों में भी लगाने का सुझाव दिया ताकि ऐसी स्थितियों से बचा जा सके।

उपरोक्त बातें हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया, द हिन्दु , इंडियन एक्सप्रेस, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, नव भारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, हिन्दुस्तान से ली हैं।

✶ 24 फरवरी को हम मजदूर समाचार को ले कर उद्योग विहार पहुँचे। स्त्री और पुरुष मजदूरों के चेहरे चमक रहे थे, दमक रहे थे। बहुत वरकर खुशी से हम से मिले और काफी बातचीतें की। मजदूर समाचार की 2700 प्रतियाँ कम पड़ गई। हमें दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र में 22 फरवरी 2013 का दिन याद आया। सरिता विहार-ओखला रेलवे क्रासिंग पर 22 फरवरी 2013 को मजदूर समाचार लेते समय आशा और उत्साह से भरे मजदूर चहक रहे थे, मुस्कुरा रहे थे, हँस रहे थे..... 21 फरवरी को ओखला फेज-1, फेज-2, फेज-3 में फैक्ट्रियाँ धड़ाधड़ बन्द हुई थी, आठ-दस हजार स्त्री और पुरुष मजदूरों की भीड़ ने हँसी-खुशी में फैक्ट्रियों तथा कारों की कुटाई-पिटाई की थी।

इधर 24 फरवरी को उद्योग विहार में हुई बातचीतों में से कुछ यह हैं :

– 10 फरवरी को गौरव इन्टरनेशनल में एच. आर. मैनेजर, सेक्युरिटी अफसर व अन्य द्वारा मजदूर से मारपीट जैसी बातें तो होती ही रहती हैं। हिंसा तो फैक्ट्रियों में आम बात है, बिना हिंसा के कोई भी फैक्ट्री चल ही नहीं सकती।

– उद्योग विहार में 12 फरवरी को जो हुआ वैसा, उस से बहुत ज्यादा, कभी भी हो सकता है। चारों तरफ, हर जगह सूखा बारूद है। कभी भी और कुछ भी चिंगारी की भूमिका अपना सकते हैं।

– न्यूनतम वेतन 8100 रुपये कह कर सरकार मुकरी और 7400 पर भी महीनों से टालमटोल ने आग में घी का काम किया।

– साहब लोग हिल गये हैं पर 12 फरवरी वाली हलचलें ज्यादा फैक्ट्रियों तक नहीं फैली इसलिये असर कम पड़ा है।

उद्योग विहार फेज-1, फेज-2, फेज-3, फेज-4, फेज-5 के मजदूरों में हलचलें बढेंगी तब देखना असर।

इन चार-पाँच वर्षों में ही, दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में ही, मजदूर समाचार में ही आ चुके फैक्ट्री मजदूरों के डायरेक्टरों व मैनेजरों, पुलिस, फैक्ट्रियों से टकराव-भिड़न्त के विवरण वाले कुछ नाम और स्थान यह हैं: *ए जी इन्डस्ट्रीज, कॉनसेप्ट क्लोथिंग, नपीनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स, सीजन एग्जिम, लखानी वरदान समूह, एडिगियर इन्टरनेशनल, मारुति सुजुकी मानेसर, साकेत फैब्रिकेशन, सीनियर फ्लैक्सोनिक्स, थीम एक्सपोर्ट, हरसोरिया हैल्थ केयर, ऋचा एण्ड कम्पनी, ईस्टर्न मेडिकिट, माया एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन, भिवाड़ी में जैकुवार एण्ड कम्पनी, वीयरवेल, ओरियन्ट क्राफ्ट सैक्टर-37, जे एन एस, पथरेड़ी (अलवर) में श्रीराम पिस्टन एण्ड रिंग, सैक्टर-18 में ओरियन्ट क्राफ्ट और आस पास, बैक्सटर, जय उशिन, नोएडा, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, पृथला-बघौला औद्योगिक क्षेत्र, मुंजाल किरियु, इण्डो ऑटोटेक, नोरदर्न कॉम्पलैक्स।*

कैजुअल वरकरों, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों, अप्रेन्टिस, ट्रेनी, स्थाई मजदूरों की साहब-पुलिस-फैक्ट्री से इन भिड़न्तों का अर्थ क्या है? स्त्री और पुरुष मजदूरों द्वारा मिल कर किये जा रहे एक फैक्ट्री में, फैक्ट्रियों के समूह में, औद्योगिक क्षेत्र व्यापी आक्रमणों का मतलब क्या है?

मैनेजर, इमारत, मशीन, पुलिस तो प्रतीक हैं। हमारे विचार से, फैक्ट्री मजदूरों की यह बढती सक्रियता ऊँच-नीच को, गैर-बराबरी को चुनौती की एक अभिव्यक्ति है। इस सन्दर्भ में, फैक्ट्रियों पर से मैनेजमेन्टों के कब्जे ढीले करना, कब्जे हटाना ऊँच-नीच को, गैर-बराबरी को चुनौती की दूसरी अभिव्यक्ति है। इस प्रकार की तीसरी अभिव्यक्ति-तीसरी धारा का जिक्र मजदूर समाचार के जून 2014 अंक में है (सऊदी अरब में तीसरी धारा)। ऐसी धाराओं के बल में इधर तेजी से वृद्धि हो रही है। कोई भी मजदूर हो ही क्यों? ऐसे प्रश्न वर्तमान को चुनौती हैं। और, बढती सँख्या की सक्रियता वाली मिलजुल कर होती गतिविधियाँ चुनौती के संग-संग नई रचना के आकार भी उभार रही हैं।■

सामान्य बातें

स्ट्डस हैल्मेट मजदूर : ''20/7 माइलस्टोन, मेन मथुरा रोड़ (सैक्टर-59), फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 10 लाख से ज्यादा हैल्मेट बनाते हैं, 35 देशों को निर्यात भी होता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, 6 महीने वाले 300 कैजुअल वरकर और 300 को दो ठेकेदारों के जरिये रखते हैं। स्टाफ में 100 लोग। चिन स्ट्रैप विभाग में सुपरवाइजर-मैनेजर चिल्लाते हैं, गाली देते हैं। इस पर कई बार मजदूरों ने आधा-एक घण्टा काम बन्द किया है। कुछ समय रुक कर फिर वही चिल्लाना, गाली देना। इधर 1 फरवरी को सुबह 9 बजे की शिफ्ट में चिन स्ट्रैप विभाग में कार्य करते 36 में से 30 मजदूर फैक्ट्ररी के अन्दर नहीं गये। फिर रात 9 बजे आरम्भ होने वाली शिफ्ट में भी 36 में से 30-31 मजदूर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। मैनेजमेन्ट में हड़बड़ी मच गई। कई स्थानों पर हैल्मेट असेम्बली का काम रुक गया। फिर 2 फरवरी को भी इन मजदूरों ने ऐसा ही किया और फिर 3 फरवरी को ..... नई भर्ती से समस्या हल नहीं हुई। यह करने वाले सब मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे गये थे – ठेकेदार ने कसरत कर मजदूरों को राजी किया।''

डेन्सो हरियाणा श्रमिक : ''प्लॉट 3 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में उत्पादन में 400 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1100 मजदूर काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों को रविवार को साप्ताहिक अवकाश के अतिरिक्त माह में 2 शनिवार को छुट्टी पर 8200 रुपये देते हैं। यहाँ ***मारुति सुजुकी, टोयोटा*** आदि वाहनों के इंजन ई सी यू, फ्युअल पम्प, इन्जेक्टर आदि बनते हैं। डेन्सो में 4 महिला और 31 पुरुष गार्ड ***वाच डॉग सेक्युरिटी*** के जरिये रखे हैं। महिला गार्ड को साप्ताहिक अवकाश और तनखा 11,000 रुपये। पुरुष गार्ड को साप्ताहिक अवकाश नहीं, त्यौहारी छुट्टी नहीं, वर्ष के 365 दिन ड्युटी, ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं। रोज 8 घण्टे पर 30-31 दिन के पुरुष गार्ड को 9200 रुपये देते हैं पर पे-स्लिप में 26 दिन ड्युटी पर 8200 रुपये तनखा दिखाते हैं। पुरुष गार्ड द्वारा रविवार को छुट्टी करने पर 500 रुपये काट लेते हैं।''

कन्टेन्ट्रा टैक्नोलॉजी वरकर : ''प्लॉट डी-103 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित पब्लिशिंग कम्पनी में दो मंजिल पर 8-10 विभागों में 500 स्त्री व पुरुष कम्प्युटर ऑपरेटर काम करते हैं। कुछ विभागों में 2 और कुछ में 3 शिफ्ट हैं। काम बारहों महीने, डाटा कनवर्शन, पत्रिका, अखबार का काम। प्रोजेक्ट लाइन भी चलते हैं, आज काम आता है और हो कर कल चला जाता है। सब काम अंग्रेजी में – जापान से, स्कॉटलैण्ड से, जिनेवा-स्वीटजरलैण्ड से काम आता है। क्लायन्ट से पेमेन्ट आती रहती हैं। चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर अरविन्दम् चौधरी, आई आई पी एम वाले हैं और डायरेक्टर सौरभ चटर्जी हैं। यहाँ तनखा की कोई तारीख नहीं है.....अप्रैल, मई, जून, सितम्बर, अक्टूबर, दिसम्बर 2014 की तनखायें आज 8 फरवरी तक नहीं दी हैं – कहा है कि दिसम्बर

पर 50 रुपये काट लेते हैं। बारहों महीने मजदूर छोड़ते-लगते रहते हैं।''

ओरियन्ट इलेक्ट्रिक मजदूर : '' प्लॉट 11 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में बेसमेन्ट में नई लाइन दिसम्बर-मध्य से चालू होने के बाद पँखा असेम्बली की 7 लाइनें हो गई हैं। टी-ब्रेक और लंच-ब्रेक के समय को बढाने-घटाने पर मैनेजमेन्ट और मजदूरों के बीच लगातार खींचातान चलती है। सुबह 8½ वाली शिफ्ट में ओवर टाइम लगता है तब 45 मिनट का लंच-ब्रेक कर मजदूर 5½ बजे काम आरम्भ करते। बेसमेन्ट में नई लाइन पर नये मजदूर और ओवर टाइम लगने पर मैनेजमेन्ट ने उन्हें 45 मिनट का लंच-ब्रेक नहीं दिया। एतराज। और फिर, साहबों ने 9 फरवरी को 6 असेम्बली लाइनों पर ओवर टाइम की कहते हुये 45 मिनट वाला ब्रेक नहीं होगा कहा। एतराज पर साहब बोले कि करना है तो करो अन्यथा जाओ। मजदूर नहीं रुके। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर लंच-ब्रेक के 45 मिनट के लिये मजदूरों ने ओवर टाइम करने से इनकार जारी रखा। दबाव डालने के लिये कुछ का कार्ड पंच भी रोका पर कम्पनी की दाल नहीं गली। ओवर टाइम के समय मजदूरों द्वारा 45 मिनट लंच-ब्रेक लेते रहने को मैनेजमेन्ट को मानना पड़ा है।''

इण्डो ब्रिटिश गारमेन्ट्स श्रमिक : ''प्लॉट 23 सैक्टर-24 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह साढे आठ से साँय पौने पाँच की शिफ्ट। मजदूरों से 11 फरवरी को कम्पनी ने शिफ्ट को सवा पाँच तक करने पर राय देने के लिये पर्चियाँ दी। सब स्त्री व पुरुष मजदूरों ने क्रास लगा कर मना कर दिया। तब मैनेजमेन्ट ने टी-ब्रेक जारी रखना है तो शिफ्ट सवा पाँच तक और बिना टी-ब्रेक के 5 बजे तक पर हस्ताक्षर करने के लिये एक-एक करके मजदूरों को बुलाना आरम्भ किया.....''

मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव वरकर : '' प्लॉट 167-170 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर, 150 ट्रेनी, और 5 ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूर ***मारुति सुजुकी, सोना, होण्डा, निसान*** के लिये पावर स्टीयरिंग मोटर, सैन्सर आदि बनाते हैं। सब मजदूर आई. टी. आई. किये हैं। कम्पनी बहुत दुभान्त करती है। स्थाई की तनखा 25-30 हजार रुपये, ट्रेनी की कट-पिट कर 10,500 और ठेकेदारों के जरिये रखों की 8500 रुपये। ट्रेनी को 1 वर्ष में ब्रेक। ठेकेदारों के जरिये रखों को 6-8-10 महीनों में ब्रेक। स्थाई व ट्रेनी को बस लेकिन ठेकेदारों के जरिये रखों को बस नहीं। स्थाई व ट्रेनी को सेफ्टी शूज परन्तु ठेकेदारों के जरिये रखों को सेफ्टी शूज नहीं देते।''

वजीरपुर मजदूर

दिल्ली के कुछ युवा मित्र कुछ समय से वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र में वरकरों से घुल-मिल रहे हैं। इधर इन मित्रों ने ''वजीरपुर मजदूर'' का प्रकाशन आरम्भ किया है। बहुत-बहुत स्वागत है।

फरवरी में प्रकाशित ''वजीरपुर मजदूर'' के पहले अंक में युवा मित्रों की अपनी बातों के साथ-साथ गार्ड से फैक्ट्री मजदूर बना से माल ढोने वाला ठेले वाला बना, ठण्डा रोला मजदूर, पैकेजिंग वरकर, गरम रोला मजदूर से बातचीतों पर आधारित रिपोर्टें हैं। गरम रोला मजदूर कहता है कि उसका हड़ताल-वड़ताल से कोई लेना-देना नहीं है, मानी, यूनियन लीडरों के धरना-प्रदर्शन-हड़ताल में वह अपने लिये कुछ नहीं पाता। तनखा बढवाने जैसी बातों के लिये गरम रोला मजदूर समय और स्थिति पर तीखी नजर रखते हैं। जब काम की तेजी हो, गरम रोल किया ज्यादा माल सप्लाई करना हो तब एक बैच के मजदूर मिल कर छुट्टी कर लेते हैं। स्टील रोलिंग मिल डायरेक्टर फोन पर फोन करता है तब कह देते हैं कि ज्यादा तनखा वाली जगह काम पकड़ लिया है। भारी नुकसान से बचने के लिये तब डायरेक्टर तनखा बढा कर उस बैच के मजदूरों को काम करने बुलाता है। रियायतें प्राप्त करने-प्रेशर घटाने के लिये कब और कैसा दबाव कारगर होगा यह पहचानना तथा कदम उठाना मजदूरों की दिनचर्या है।

बहुत स्वागत योग्य

बीस मजदूरों का एक समूह ओखला, नोएडा, फरीदाबाद से सम्बन्ध रखता है। इस मजदूर समूह ने अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से सम्बन्ध बढाने की योजना बनाई है। ओखला, नोएडा, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों के मजदूरों से नियमित चर्चायें करना और इन बातों को प्रकाशित करवा कर फैलाने का तय किया है। इसे करने के लिये बीस मजदूरों के इस समूह ने तीन-तीन, चार-चार वाली अपनी टोलियाँ बनाई हैं। मजदूरों के इस सामुहिक प्रयास की दूसरी किस्त मजदूर समाचार में प्रकाशित करते हुये हम आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि कम्पनी-मैनेजमेन्ट क्या-क्या करती हैं की बजाय मजदूर क्या-क्या करते हैं वाली बातें इन साथियों से हमें मिलेंगी।

✶ प्लॉट सी-54/2 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में तीन नाम से, जे. जे. एक्सपोर्ट-रामा टेक-न्यू डिजाइन हाई फैशन, 60 मजदूर काम करते हैं। सिलाई कारीगरों की तनखा 9000 रुपये थी। दिवाली पर टेलरों ने आपस में सलाह की। चार दिन कई प्रकार की बातें रही, तब मैनेजर ने 1000 रुपये बढाने की कही। ड्युटी सुबह 9½ से रात 8½ तक और नाइट लगती है .

अप्रैल 2015

कुछ अस्थाई मजदूरों की बातें

मजदूर समाचार के दिसम्बर 2014 अंक में प्लॉट 399 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री में मजदूर हलचलों का विवरण कुछ विस्तार में है। अस्ती मजदूरों की बातें जून 2014 और जनवरी 2015 अंकों में भी हैं। इधर अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स के कुछ अस्थाई मजदूरों से 4-4½ घण्टे बातचीत हुई। हमें लगता है कि इन युवा मजदूरों के अनुभव तथा विचार सब के लिये उल्लेखनीय महत्व के हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं।

★ 125 स्थाई और ठेकेदारों के जरिये रखे 350 मजदूरों में तालमेल बढे। अपने को और मजबूत करने के लिये दो अस्थाई तथा एक स्थाई मजदूर नवम्बर 2013 में एक यूनियन लीडर से मिले। नेता बोला कि कुछ खर्चा होता है, चन्दा एकत्र करो, 7 स्थाई को फलाँ-फलाँ पद के लिये तैयार करो। ''अस्थाई क्यों नहीं?'' पूछने पर यूनियनवाला बोला कि कानून से ऐसा नही हो सकता। माथा ठनका तो लीडर बोला कि ठेकेदारों के जरिये रखे सब को स्थाई करवायेंगे।

आपस में चर्चायें की। यूनियन पदों के लिये 7 स्थाई को तैयार किया। लीडर से 2 फरवरी 2014 को मिले। अस्थाई मजदूरों ने 4 लाख 66 हजार रुपये और स्थाई ने दो लाख से ज्यादा एकत्र किये।

कम्पनी को पता चल गया। पद वाले 2 को 10 फरवरी को बाहर कर दिया। मजदूरों द्वारा मिल कर कदम उठाने की बात पर वे दो बोले कि कानून करेगा, बड़ा लीडर केस देख रहा है, जल्दी ही अन्दर आ जायेंगे। फिर 17 फरवरी को वही बोले कि सब कर लिया, कुछ नहीं हुआ, आप लोग कुछ करो।

18 फरवरी को सुबह 8 बजे सब अस्थाई और अधिकतर स्थाई मजदूर कार्यस्थल छोड़ कर फैक्ट्री में खुले स्थान पर एकत्र हो गये। काम बन्द होते ही मैनेजमेन्ट में हड़कम्प। श्रम विभाग से इन्सपैक्टर पहुँचा। बैठे दिनों के पैसों के साथ उन दो को वापस लेने का समझौता दोपहर ढाई बजे हुआ।

फरवरी की तनखा मिली तब स्थाई और अस्थाई ने एक-एक लाख से ज्यादा एकत्र किये। मार्च 2014 में यूनियन के पास 9 लाख रुपये।

कम्पनी ने गियर बदला। यूनियन बॉडी से बात की। रजिस्ट्रेशन के लिये प्लान्ट हैड की गाड़ी में यूनियन बॉडी के दो लोग चण्डीगढ जाने लगे। यूनियन रजिस्ट्रेशन 17 मई 2014 को आ गया।

मई में ही कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को शिक्षा देने के लिये तीन बन्दे बुलाये। प्रत्येक को 15 दिन के डेढ लाख रुपये दिये। पढाया: अपना जीवन बेहतर कैसे किया जा सकता है ; आगे बढने के लिये कौन से तरीके अपनाये जाते हैं ; मैनेजमेन्ट और मजदूरों के बीच रिश्ते कैसे होने चाहियें। और अन्त में वे कहते – अपनी तरक्की के लिये साम, दाम, दण्ड, भेद सब अपनाने चाहियें यह चाणक्य कहता था।

अस्थाई मजदूरों ने एतराज किया। यह फूट डालने के लिये है। ब्रेन वाश कर रहे हैं। कम्पनी की रणनीति को समझो। इस पर लीडर कहते कि यह कम्पनी की नीति है, यूनियन इस बारे में कुछ नहीं कर सकती। तो अस्थाई को भी यह शिक्षा दिलवाओ के उत्तर में लीडर कहते कि यह ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के लिये नहीं है।

★ यूनियन ने मैनेजमेन्ट को माँग-पत्र दिया। उत्तर : कम्पनी घाटे में है, मुनाफे में आयेगी तब बात करेंगे। दबाव डालने के लिये यूनियन ने मजदूरों से काम धीमा करने को कहा। कम्पनी ने रात को 12 घण्टे की नई शिफ्ट के लिये नये ठेकेदार के जरिये 150 नये वरकर रखे। इस से स्लो डाउन का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा, मजदूरों ने यूनियन से इसे रोकने को कहा तो लीडर बोले कि बाहर से मजदूर लाना कम्पनी का अधिकार है।

काफी उत्पादन कम्पनी बाहर करवाने लगी। जापान, चीन, वियतनाम से और आई.एम.टी. में अनु ऑटो, भगवती ऑटो, मदरसन्स, श्रीनिसन्स, दूत वायर से उत्पादन प्राप्त कर गोदामों में 4 महीने का माल जमा किया। मजदूरों ने एतराज किया तो यूनियन लीडर बोले कि कुछ नहीं कर सकते, कम्पनी का अधिकार है, कहीं से माल बनवा सकती है। जुलाई 2014 में मैनेजमेन्ट-यूनियन तीन वर्षीय समझौता हो गया।

★ अक्टूबर-आरम्भ में बात फैली कि ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूर नौकरी से निकाले जायेंगे। अस्थाई मजदूर यूनियन बॉडी से मिले और जानकारी माँगी। लीडर बोले कि झूठी अफवाह है, एक भी अस्थाई के बाहर किये जाने से पहले यूनियन बॉडी के वे 7 बाहर जायेंगे।

31 अक्टूबर को रात चर्चा : किसी भी क्षण सब अस्थाई बाहर

कर दिये जायेंगे। यूनियन प्रधान को अस्थाई मजदूरों ने 1 नवम्बर को सुबह पकड़ा तो वह बोला कि झूठ है, यूनियन आपके साथ है। वैसे, सब स्थाई को पता चल गया था कि सब अस्थाई निकाले जायेंगे, सतर्क रहना, इनके लफड़े में मत पड़ना, शिफ्ट छूटने पर गाड़ी में बैठ कर घर चले जाना।

1 नवम्बर को अस्थाई मजदूरों ने यूनियन बॉडी से, मुखर स्थाई मजदूरों से मीटिंग की। सब ने गोली दी, ऐसा कुछ नहीं है, टैन्शन मत लो।

ए-शिफ्ट दोपहर 3.30 पर समाप्त होती है। कम्पनी ने 3 बज कर 28 मिनट पर नोटिस लगाया। पढ कर सब अस्थाई मजदूर शान्त हुये, खुश हुये। फिर एक मिनट बाद कम्पनी ने दूसरा नोटिस लगाया: *'' कम्पनी में काम की कमी होने के कारण ठेकेदारों के जरिये रखे सब वरकरों की एक हफ्ते की सवेतन छुट्टी की जा रही है और आठवें दिन अपने-अपने ठेकेदार के ऑफिस में जा कर हिसाब ले लें।''*

धोखाधड़ी से उबले अस्थाई मजदूर यूनियन बॉडी को वहीं खत्म करने को बढे — न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। अस्थाई में से ही कुछ ने लीडरों की रक्षा की और उन्हें कम्पनी से बात करने को कहा। वो गये और फिर लौट कर नहीं आये।

अब यह देखिये : *'' आज दिनाक 1.11.2014 को सभी यूनियन प्रतिनिधियों व प्रबन्धक प्रतिनिधियों की बैठक हुई जिसमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर आपसी सहमति बनी —*

1. कम्पनी में कार्य की कमी के कारण तथा ग्राहकों से आर्डर की कमी के कारण यह आवश्यक हो गया है कि ठेकेदारों के सभी कर्मचारियों को नौकरी से हटा दिया जाये। इसमें समस्त यूनियन प्रतिनिधियों को कोई आपत्ति नहीं है।

2....., 3....., 4....., 5..... (हस्ताक्षर)

✶ 1 नवम्बर को बी-शिफ्ट को मैनेजमेन्ट ने अन्दर आने ही नहीं दिया। स्थाई चुपचाप बाहर निकल गये पर ए-शिफ्ट के अस्थाई मजदूर बाहर नहीं निकले। मेन प्रोडक्शन लाइन पर 180 महिला और 70 पुरुष मजदूर बैठ गये। एक घण्टे बाद थानेदार और ठेकेदार आये। मशीनों के पास बैठना कानूनन अपराध है, कैन्टीन में जा कर बैठो। मजदूर नहीं हिले। तब लाठी लिये 25-30 पुलिसवाले आये।

सब वरकर कैन्टीन में जा कर बैठ गये। पाँच लोग मैनेजमेन्ट से बात करने गये। कोई सुनवाई नहीं। रात के 9 बज गये..... हमारे पास भविष्य की कोई योजना नहीं थी और पुलिस तो थी ही। हम ने फैक्ट्री छोड़ने का तय किया। कम्पनी राजी-राजी महिला मजदूरों को वाहनों से उनके निवास स्थानों पर छोड़ने को तैयार हुई।

रविवार, 2 नवम्बर को हम ने आपस में चर्चायें की। इनकलाबी वालों ने हमें उकसाया था — यूनियन भलाई के लिये बनती है, यूनियन का साथ दो। उन्हें बुलाया। वे डर रहे थे कि वरकर मारेंगे। भरोसा दिया। आ कर इनकलाबी वालों ने श्रम विभाग के लिये पत्र लिखवाया। पत्र देने गये तो श्रम निरीक्षक सीधा बोला कि कम्पनी बन्द हो रही है। काफी बहस के बाद पत्र लिया और बोला कि जाँच करेंगे।

कम्पनी की तैयारी देखने के लिये अस्थाई मजदूरों ने सोमवार को आराम किया। नीली वर्दी में 5-600 स्त्री व पुरुष पुलिस फैक्ट्री को घेरे खड़ी थी।

4 नवम्बर 2014 को सुबह 6 बजे सब अस्थाई मजदूर फैक्ट्री पहुँचे। पुलिस, बाउन्सर, ठेकेदार, कम्पनी अधिकारी हमें गेट पर जाने ही नहीं दे रहे थे। हम वहीं तम्बू लगाने लगे। अदालत का 150 मीटर दूर का आदेश दिखाया — फर्जी था, 21 अक्टूबर को लिया था। पुलिस ने धक्का किया। हम ने 150 मीटर दूर तम्बू लगाया। वकील ने स्टे हटवाने के लिये 25 हजार माँगे। अस्थाई मजदूरों ने स्थाई मजदूरों, फैक्ट्री यूनियन, एच एम एस से मेल मिलाप की काफी कोशिशें की, असफल रही। स्थाई मजदूर फैक्ट्री में काम करते रहे।

✶ अस्थाई मजदूर अपने दम पर खड़े हुये। इनकलाबी, क्रान्तिकारी, बिगुल..... यह सब आये, हाइजैक करने की कोशिशें की पर हम ने किसी की चलने नहीं दी। उन सब को सलाहकार के तौर पर लिया। सलाह लेते थे। पहले दिन ही नमस्ते कर दिया था कि मानना, नहीं मानना हमारे हाथ में था।

एटक लीडर : एच एम एस ऐसे ही करती है। आप हमारे साथ आओ। आपकी लड़ाई हम लड़ेंगे।

अस्थाई मजदूर : आप आये, अच्छी बात है। पर आपने नपीनो ऑटो में जो किया वह हम ने अच्छी तरह से देखा है। आप जा सकते हैं। नमस्ते।

सीटू लीडर : मोदी विरोध में बहुत कुछ बोले। मोदी ऐसे-ऐसे कानून ला रहा है जो मजदूरों का भविष्य खराब कर देंगे। उन कानूनों को पास होने से रोकना है।

अस्थाई मजदूर : आप बड़े बुजुर्ग हैं। आपको बहुत नॉलेज है। पर यह राजनीतिक मंच नहीं है। यह मजदूर मंच है। वो कानून तो अभी आये भी नहीं हैं। हम तो पहले ही बर्बाद हो गये। वर्तमान में जो कानून हैं उन्हें तो लागू करवा नहीं पा रहे और भविष्य के लिये हाँक रहे हैं।

जब बिगुल वाले आये तब इनकलाबी वालों ने विरोध किया।

क्यों आये ? उन्हें मंच से बोलने का समय नहीं दिया जाये।

अस्थाई मजदूर : यह इनकलाबी वालों का मंच नहीं है। यह ठेका मजदूरों का मंच है। किसको बोलना है, किसको नहीं, इसका निर्णय हम करेंगे।

✶ दबाव की आस में 2 पुरुष और 5 महिला मजदूरों ने 25 नवम्बर से 11 दिसम्बर तक भूख हड़ताल की। बिना किसी समझौते के अनशन समाप्त किया।

डी सी गुड़गाँव : भूख हड़ताल करने को मैंने कहा था क्या? ब्लैकमेल कर रहे हो। बाहर जाओ। श्रम विभाग का मामला है, वो देखेगा।

मुख्य मंत्री जनता दरबार में आवेदन दिया। कोई उत्तर नहीं।

गुड़गाँव से राज्य सरकार में मंत्री : देखेंगे।

केन्द्र में मंत्री जनरल : हमारा क्षेत्र नहीं है, फिर भी आप आये हो तो बात करूँगा।

भाजपा महिला प्रकोष्ठ प्रधान : अस्थाई मजदूरों की बात करते हुये फैक्ट्री में गई। बाहर निकली तो बोली कि काम की कुछ कमी है पर बात को ऊपर तक ले जाऊँगी। फिर दर्शन नहीं दिये।

विधान सभा प्रत्याशी रहे एक आये, आश्वासन दे कर चले गये। अनशन तुड़वाने कई एच एम एस लीडर भी आये।

✶ अनशन समाप्ति के बाद भी फैक्ट्री के पास धरना जारी रखा। यह-वह करते हुये हम ने एक और गलती की। अस्थाई मजदूरों ने 23 दिसम्बर को 4-5 गाँवों के सरपंचों को मध्यस्थता के लिये बुलाया। ''हमारे क्षेत्र में कम्पनी की औकात कैसे हुई इतने वरकर निकालने की'' कहते हुये वे फैक्ट्री में गये। बाहर आ कर वो सरपंच बोले ''जब काम ही नहीं है तो कहाँ से काम दे दें।'' और हमारी कमजोरी भाँप कर धमकी दी : ''उठ जाओ नहीं तो जबरदस्ती उठायेंगे।''

तीन दिन बाद, रात को लफँगों ने टैन्ट उखाड़ दिया।

तब हम गुड़गाँव में श्रम विभाग के ए एल सी कार्यालय पर धरने पर बैठे। दिन ढलने पर पुलिस ने जबरन उठाया। दूसरे दिन मुंजाल किरियु फैक्ट्री के बाहर तीन महीने से बैठे स्थाई मजदूरों के साथ प्रदर्शन किया। रोज साँय 4½ तक धरने की अनुमति दी गई। एच एम एस लीडर ने मुंजाल किरियु वालों को कहा कि यह किसी की सुनते नहीं हैं, तुम लोग यहाँ से निकल लो।

अस्ती के अस्थाई मजदूर ही रोज धरने पर बैठने लगे। श्रम विभाग में तारीख-पर-तारीख। इस बीच कम्पनी 5-10-15 हजार होते हुये हिसाब में 25 हजार देने को तैयार हुई। आपस में चर्चायें कर हम ने निर्णय लिया। हम में से 250 ने 20.1.2015 तक हिसाब ले लिया। और 35 ने, 22 महिला तथा 13 पुरुष मजदूरों ने कोर्ट-कचहरी में तारीखों का खेल बढाया है।

कोर्ट से सम्बन्धित मामलों में ही सलाह के लिये हम ने एक इनकलाबी और एक क्रान्तिकारी को सलाहकार रखा है। कानून के कम जानकार लगते पर ईमानदारी से अड़ने वाले को हम ने वकील रखा है। कम्पनी और सरकार को उन्हीं के नियम-कानूनों से चुनौती देना तय किया है।

18.3.2015 को तारीख पर श्रम विभाग पहुँची कम्पनी अधिकारी बोली कि समझौता कर लो, 40 हजार दे देंगे। इनकार पर बोली की केस बहुत साल चलेगा। चलने दो....

✶ हिसाब ले चुके और कोर्ट गये अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स के मजदूर क्षेत्र की कई फैक्ट्रियों में लग गये हैं।

अपने बीच नियमित तालमेलों के लिये हम ने एक समिति बनाई है। इनकलाबी वाले समिति में जगह चाहते थे पर हम ने मना कर दिया। हम लोगों ने तय किया है कि जहाँ भी हम काम करेंगे वहाँ बिचौलियों की दाल नहीं गलने देंगे। यूनियन की जगह हम नई चीज लायेंगे। फैक्ट्री-विशेष की बजाय औद्योगिक क्षेत्र के आधार पर संगठित होने के प्रयास हम करेंगे। ■

सामान्य है

जे एन एस इन्सट्रुमेन्ट्स मजदूर : ''प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में गलती पर स्कूल की तरह 10-20 मिनट एक जगह खड़ी हो जाओ की सजा लाइन लीडर देती हैं। खड़ा होने में कौन-सी शर्म है ? काम से आराम ही मिलता है। पुरानी वरकर लाइन लीडर से, सुपरवाइजर से कैसे निपटें बताती हैं। इधर दो लाइन की लड़कियों ने मिल कर एक लाइन लीडर की फैक्ट्री में पिटाई की तब सुपरवाइजर ने आ कर उसे छुड़ाया।''

ओसवाल डाईकास्टिंग श्रमिक : '' प्लॉट 48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 22 मार्च से लगातार ड्युटी है, साप्ताहिक अवकाश नहीं, 5 अप्रैल को शिफ्ट बदलेगी। लगातार 15 रात काम करना नाइट शिफ्ट वालों को बहुत भारी पड़ता है। मजदूरों में रोष होना स्वाभाविक है। कम्पनी कभी सप्ताह में दो छुट्टी कर देती है और कभी 15 दिन लगातार काम करो। मजदूरों को मशीन के पुर्जे बना रखा है। कम्पनी जब सप्ताह में दो छुट्टी करती तब हद तो यह है कि छुट्टी के पैसे मजदूरों को नहीं देती। ले-ऑफ, वे-ऑफ की बात यहाँ नहीं है – साप्ताहिक अवकाश के अलावा जिस दिन कम्पनी छुट्टी करती है उसका एक पैसा नहीं देती। यूँ भी, जब कम्पनी काम कम है कह कर छुट्टी करती है तब भी शिफ्टें 12-12 घण्टे की ही रहती हैं और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करने की बजाय सिंगल रेट से किया जाता है।''

लुमैक्स ऑटोमोटिव कामगार : '' प्लॉट 46 सैक्टर-3, आई एम

टी मानेसर स्थित फैक्ट्री की स्थिति काफी समय से डाँवाडोल है। कम्पनी की दिल्ली में मायापुरी वाली फैक्ट्री, फरीदाबाद की दो फैक्ट्रियाँ, गुड़गाँव में उद्योग विहार वाली फैक्ट्री और पुणे वाली फैक्ट्री बन्द हो गई हैं। उद्योग विहार और फरीदाबाद से आये स्थाई मजदूरों को जोड़ कर अब यहाँ 110 परमानेन्ट मजदूर हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 150 वरकर हैं। मोल्डिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी में सुबह 7 से साँय 7 की शिफ्ट है। यहाँ ***होण्डा*** स्कूटर और ***मारुति सुजुकी*** कारों के प्लास्टिक पार्ट्स बनते हैं। इधर फरवरी-अन्त में होण्डा स्कूटर का एक मॉडल बन्द होने और 25 मार्च को दूसरा मॉडल बन्द होने से लुमैक्स में दो लाइन बन्द हो गई हैं। इधर जनरल मैनेजर, फिल्टर हैड, परचेज अफसर आदि निकाल दिये हैं या छोड़ गये हैं। दबाव के कारण कम्पनी ने स्टॉफ का पी.एफ. जमा किया है पर मजदूरों का एक वर्ष से फण्ड जमा नहीं किया है।''

वी एन जी इन्टरप्राजेज वरकर : ''प्लॉट 4 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 150 मजदूर काम करते हैं। कैजुअल वरकर 35-40 हैं, तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 110 हैं, स्थाई मजदूर एक भी नहीं है। ***यामाहा, होण्डा, अपाचे*** के पुर्जे बनते हैं पर यहाँ से सीधे नहीं जाते। कैजुअल हैल्परों की तनखा 5000 रुपये, ई एस आई नहीं पी एफ नही। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर पीस रेट पर, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। पावर प्रेसों पर उँगली कटती रहती हैं। सेक्युरिटी वाले प्रायवेट में ले जा कर पट्टी करवा देते हैं। बस। फिर कम्पनी निकाल देती है। साबह लोग कहते हैं कि पीस रेट पर हो इसलिये अपनी सेफ्टी आप करो, कम्पनी की कोई जिम्मेदारी नहीं है।''

सुबरोस ऑटो

जून 2014 में दो-ढाई घण्टे की बातचीत के बावजूद सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित सुबरोस फैक्ट्री का मार्च से जून 2014 का घटनाक्रम हमें समझ में नहीं आया था। इधर कुछ-कुछ समझ में आने लगा है।

300 स्थाई मजदूर, तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 500 वरकर, 300-400 डिप्लोमा ट्रेनी, 300 इंजीनियर सुबरोस फैक्ट्री में कार्यरत थे। गुपचुप प्रत्येक स्थाई मजदूर से 4000 रुपये यूनियन चन्दा लिया, प्रधान बने बन्दे ने पत्नी की बीमारी का बहाना बना कर 15 दिन की छुट्टी ली, चण्डीगढ जा कर यूनियन का रजिस्ट्रेशन लाया। सुबरोस में 2013 के अन्त में यूनियन बनी, एटक की यूनियन बनी।

मार्च 2014 में यूनियन ने सब की तनखा बढवाई और फिर गुड़गाँव में मीटिंग हुई। कम्पनी की बसें मजदूरों को कमला नेहरु पार्क ले कर गई। दो घण्टे मीटिंग चली। लीडरों ने भाषण दिये, खूब तालियाँ बजी। पार्टी हुई, चाय-नाश्ता सुबरोस यूनियन प्रधान ने करवाया।

यूनियन ने प्रोडक्शन बढवाने की बजाय घटवाया था। एक लाइन पर जहाँ 1100 एयर कंडीशनर बनते थे वहाँ अप्रैल 2014 से 850 करवा दिये। मई आरम्भ में सब डिप्लोमा ट्रेनी और ठेकेदारों जरिये रखे पुराने आई टी आई से यूनियन सदस्यता के लिये 100-100 रुपये लिये। अचानक सोमवार, 14 मई 2014 को सुबह की शिफ्ट लाने कम्पनी की बसें नहीं पहुँची। अलियर व बासगाँव में रहते 250 वरकर 7 बजे फैक्ट्री में गये। धारूहेड़ा, गुड़गाँव आदि से आते मजदूर अपने से पहुँचे, 7 बजे नहीं पहुँचे। कम्पनी बसें नोएडा सुबरोस फैक्ट्री से मजदूरों को लाई। आई एम टी फैक्ट्री में काम करते सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर – सुबह 7 बजे जो 250 अन्दर गये थे वे भी 10 बजे बाहर आ गये थे। यूनियन प्रधान फैक्ट्री के अन्दर गया, रात 9 बजे आया। सब मजदूर उसका इन्तजार कर रहे थे।

कम्पनी ने 14 मई को सुबह ही 27 पुराने आई टी आई और डिप्लोमा ट्रेनी के गेट बन्द का नोटिस लगाया था। यूनियन प्रधान बोला कि मैं इन्हें अन्दर करवा रहा हूँ और मैं खुद 45 दिन बाहर रहूँगा। कोरे कागज पर कोई दस्तखत मत करना। जो भी कुछ करना होगा वह 45 दिन बाद करेंगे।

15 मई 2014 को बसें समय पर पहुँची। प्रोडक्शन बढा दिया – एक लाइन पर 1200 ए सी बनाये। फिर 28 मई को ए-शिफ्ट छूटते समय 37 वरकरों के कार्ड ले लिये। रोज 30-40 के कार्ड लेने लगे। तीन-चार वर्ष से काम कर रहे 400 वरकरों को महीने-भर में निकाल दिया।

निकाले जाने पर वरकर यूनियन प्रधान के घर गये, नहीं मिला। उसका फोन स्विच ऑफ। वैसे 25 मई से ही यूनियन प्रधान के 60 लाख रुपये ले कर चले जाने की बातें होने लगी थी। यूनियन प्रधान के साथ जो 4 लीडर थे वे 15 मई के बाद दिखाई नहीं दिये। जब से निकालना शुरू किया तब से एटक का कोई लीडर सुबरोस फैक्ट्री के पास दिखाई नहीं दिया। यूनियन प्रधान अलियर गाँव का था। उसके परिवार वाले बोले कि वह गाँव में अपना सुब कुछ बेच कर बीबी-बच्चों के साथ कहीं चला गया है।

6-7 महीने में कम्पनी ने 300 परमानेन्ट वरकर भी निकाल दिये। यहाँ फैक्ट्री में 2007 में उत्पादन आरम्भ हुआ था और आज सुबरोस में कोई पुराना मजदूर नहीं है।

अब अधिकतर वरकर अन्डर ट्रेनिंग हैं। झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान में जयपुर से परे के पोलिटैक्निक कॉलेजों से सीधे डिप्लोमा ट्रेनी लाते हैं। इंजीनियर भी ट्रेनी हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 400 हैल्परों को ई एस आई व पी एफ की राशि काट कर 6760 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे आई टी आई को काट-पीट कर 8400 रुपये। चार-पाँच सौ डिप्लोमा ट्रेनी को ई एस आई व पी एफ काट कर 7200 रुपये। इंजीनियर ट्रेनी 65-70 और उनको 11-12,000 रुपये। इंजीनियरिंग किये और डिप्लोमा किये लाइनों पर अगल-बगल में काम करते हैं। स्टाफ बहुत है। काम का भारी दबाव और डाँटना-चिल्लाना। हैल्पर, आई टी आई तीन-चार महीने में छोड़ जाते हैं – 6 महीने होने पर कम्पनी वैसे भी निकाल देती है। तीन वर्ष के लिये ट्रेनी डिप्लोमा वाले और इंजीनियर तो रोज ही छोड़ते हैं, रोज भर्ती होते हैं।

मई 2015

ओखला औद्योगिक क्षेत्र में

दिल्ली स्थित फैक्ट्रियों में काम करते अधिकतर मजदूरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। और, कानून अनुसार ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से तो 98 प्रतिशत ओवर टाइम के लिये नहीं किया जाता। इसकी एक झलक के लिये ओखला में फैक्ट्रियों में काम करते कुछ साथियों की बातें यहाँ प्रस्तुत हैं।

★ ***थीम एक्सपोर्ट मजदूर :*** ''डी-5 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 450 सिलाई कारीगरों और फिनिशिंग विभाग के 350 मजदूरों की सुबह 9½ से साँय 6 की ड्युटी है पर रोज रात 8½ तक काम और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सुबह 11 और साँय 4 बजे टी ब्रेक नहीं देते। हैल्परों की तनखा 6500 रुपये, टेलरों और चैकरों की 9000 रुपये। तनखा देरी से, 18-20 तारीख को, मजदूर काम बन्द करते हैं तब कम्पनी पुलिस बुला लेती है। आयु प्रमाण के लिये हर मजदूर से डेन्टल सर्टिफिकेट पर 70 रुपये खर्च करवाते हैं। पहचान-पत्र निशा फैशन के नाम से हैं। ऐसा ही कम्पनी की ओखला फेज-2 में एक्स-28 तथा एक्स-42 फैक्ट्रयों में है।''

★ ***इनटैक श्रमिक :*** ''बी-59 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट में इलेक्ट्रोनिक्स पार्ट्स बनाते हैं। हैल्परों की तनखा 4000-4500 रुपये, नये कारीगरों की 6200-7000 और 10 वर्ष से अधिक वाले कारीगरों की 8000-8500 रुपये। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ई एस आई तथा पी एफ किसी मजदूर की नहीं।''

★ ***क्रियेटिव कॉम्पलैक्स स्टोर कामगार :*** डी डी ए शेड 26 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 130 सिलाई कारीगर और फिनिशिंग विभाग में 70 वरकर काम करते हैं। धागे काटते मजदूरों की तनखा 6000 रुपये, चैकरों की 9500, टेलरों की 9300 रुपये। शिफ्ट सुबह 9 से रात 9 की है और रात 1 बजे तक रोकते हैं। महीने में 100 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।''

★ ***एशियन हैण्डीक्राफ्ट वरकर :*** '' एस-31 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में कार्यरत 200 महिला मजदूरों को 8 घण्टे कार्य के मात्र 140 रुपये देते हैं। पुरुष हैल्परों को 8 घण्टे के 200 रुपये और सिलाई कारीगरों को 300 रुपये। ई एस आई व पी एफ की राशि तनखा से कभी काट लेते हैं और कभी काटना बन्द कर देते हैं। सुबह 9½ से रात 10-11 तक स्त्री तथा पुरुष मजदूरों की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।''

★ ***थॉमसन प्रैस मजदूर :*** ''बी-315 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से साँय 6 की शिफ्ट है और जबरन रात 10, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। ड्युटी के बाद के समय को कम्पनी ओवर टाइम नहीं कहती। रात 10 बजे तक रोकते हैं तब मात्र 150 रुपये देते हैं और इन 4 घण्टे ओवर टाइम को फॉर्म में कनवेयन्स दिखाते हैं। अगली सुबह 6 बजे तक रोकते हैं तब 12 घण्टे ओवर टाइम को फॉर्म में कनवेयन्स दिखा कर मात्र 350 रुपये देते हैं। साप्ताहिक अवकाश के दिन, रविवार को जब 8 घण्टे काम करवाते हैं तब उस ओवर टाइम को भी फॉर्म में कम्पनी कनवेयन्स दिखाती है और उसके 450 रुपये देती है।''

★ ***मार्क्स सप्लाई सोल्युशन्स श्रमिक :*** '' एफ- 23/3 ओखला फेज-2 स्थित जनरल वेयर हाउस में महिला मजदूरों की तनखा 6000 रुपये, पुरुष हैल्परों की 6500 और कारीगरों की 7500 रुपये से अधिक। सुबह 9 से साँय साढे छह की शिफ्ट है और रात 8, रात 9 तक रोक लेते हैं पर अतिरिक्त समय के कोई पैसे नहीं देते।''

★ ***विक्टर कामगार :*** '' बी-86 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर सुबह 9 से रात 8½ की शिफ्ट में सैमसंग, एल जी, मैक्रोमैक्स आदि के इलेक्ट्रोनिक्स पाट्र्स बनाते हैं। तनखा 4500 से 5000 रुपये। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।''

★ ***जे जे एक्सपोर्ट वरकर*** : '' सी-54/2 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 500 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 6500 से 7500 रुपये थी। मजदूरों ने कदम उठाये। सरकारी अधिकारी तीन बार जाँच करने आये तब कम्पनी ने सब मजदूरों को फैक्ट्री के बाहर कर दिया और साहब लोग बोले कि यह कम्पनी के मजदूर नहीं हैं। अन्ततः सब मजदूरों को फैक्ट्री में लिया गया और अप्रैल माह से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन लागू करने की बात हुई है। ऐसा ही जे जे एक्सपोर्ट कम्पनी की जैड-22 ओखला फेज-2 फैक्ट्री में हुआ है।''

★ ***लैदर कारीगर :*** '' ओखला फेज-1 में ए-265 व 266 स्थित ***पाल इन्टरप्राइजेज,*** एफ-29 स्थित ***पाहवा इन्टरप्राइजेज***, सी-32 स्थित ***झा इन्टरप्राइजेज*** फैक्ट्रियों में चमड़े का कार्य होता है। इन सब में कारीगर पीस रेट पर हैं और हैल्परों की तनखा 4-5-6 हजार रुपये है।''.....

कुछ बातें किसानी–दस्तकारी की

[*इन पाँच वर्षों में तीव्र से तीव्रतर होती अपनी सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या के खिलाफ दस्तकारों तथा किसानों के कदमों ने मिश्र, ट्युनिशिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इराक-सीरिया, यमन आदि-आदि में उथल-पुथल में उल्लेखनीय भूमिका अदा की है। स्वयं को तथा अपने इर्द-गिर्द वालों को लगातार लहु-लुहान करते किसान और दस्तकार बदहवासी में लाखों की सँख्या में आत्महत्यायें कर चुके हैं। संग ही संग, बन्दूकें उठा कर - आत्मघाती बम बन कर चीन हो चाहे भारत, या फिर रूस, दस्तकार और किसान सत्ता प्रतिष्ठानों को, सरकारों को अस्थिर भी कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में हम मजदूर समाचार के मई 2010 में प्रकाशित बातों को यहाँ फिर से छाप रहे हैं।*]

कुछ प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण लगते हैं। अनेक आवरणों ने इन्हें ढँक रखा है। कई गाँठें काटनी आवश्यक लगती हैं। इसलिये सार की बातों को उजागर करने के प्रयास में यहाँ हम कई सरलीकरणों का सहारा ले रहे हैं। वर्तमान में और निकट भविष्य में महत्व को हम ने मापदण्ड के तौर पर अपनाया है। जटिलताओं से पार पाने के फेर में महत्वपूर्ण पहलूओं के छूट जाने की काफी सम्भावना है। ऐसी जो बातें आपकी निगाह में आयें उन से कृपया हमें अवगत करायें।

★अनाज के उल्लेखनीय मात्रा में व्यापार को तीन सौ वर्ष भी नहीं हुये हैं। कृषि पृथ्वी के थोड़े-से क्षेत्रों में दो-ढाई हजार वर्ष से महत्वपूर्ण है और वहाँ उपज का छठा अथवा चौथा भाग अधिकार के तौर पर लिया जाता था। भूदास-प्रथा थी, सामन्तवाद था।

★मण्डी के लिये अनाज के उत्पादन को कठिनाई से दो सौ वर्ष पूर्व तक उल्लेखनीय भूमिका प्रदान की जा सकती है। ''मुक्त'' हुये भूदासों में से कुछ द्वारा बिक्री के लिये अनाज का उत्पादन आरम्भ हुआ। परन्तु, खेती के संग पशुपालन, कताई-बुनाई, छान-छप्पर, खेल, शिकार, त्यौहार, नाते-रिश्तेदारी, उत्सव, गमी आदि विरासत में मिले थे। इसलिये ''मुक्त'' हुये भूदासों में से जिन्होंने खेती को प्राथमिकता दी, वे काफी समय तक गुड़ से चिपटे चेंटे की तरह खेती से नहीं चिपटे थे।

★अपने स्वयं के तथा परिवार के श्रम द्वारा मण्डी के लिये, बिक्री के लिये अनाज पैदा करने को किसानी खेती कहेंगे। किसान काफी नये सामाजिक प्राणी हैं, मजदूरों से थोड़े-ही पहले के हैं।

★अस्त्र-शस्त्र, आभूषण, वस्त्र आदि का छुटपुट व्यापार दो-तीन हजार वर्ष पूर्व कुछ क्षेत्रों में देखा जा सकता है। दूर-दराज से बढते व्यापार ने भूदास-प्रथा की, सामन्तवाद की कब्र खोदने में उल्लेखनीय योगदान दिया। ''मुक्त'' हुये भूदासों में से कुछ ने बिक्री के लिये वस्त्र, बर्तन, लकड़ी, लोहे के सामान आदि बनाने आरम्भ किये। यह दस्तकार बने और विरासत में थोड़ी खेती, पशुपालन, कताई-बुनाई, छान-छप्पर, खेल, शिकार, त्यौहार, नाते-रिश्तेदारी, उत्सव, गमी आदि लिये थे। इसलिये ''मुक्त'' हुये भूदासों में से उभरे दस्तकार काफी समय तक गुड़ से चिपटे चेंटे की तरह खड्डी आदि से नहीं चिपटे थे। हाँ, अनाज की तुलना में दस्तकारों द्वारा बनाई वस्तुयें मण्डी में पहले उल्लेखनीय बनी।

★दूर-दराज के व्यापार ने स्थानीय स्तर पर बचे सामुदायिक कवचों को तोड़ने वालों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्थानीय व्यापार का आधार स्थापित किया। स्थानीय व्यापार बढने लगा। किसान और दस्तकार गुड़ से चिपटे चेंटे की तरह काम से चिपटने लगे। बहुरंगी जीवन की भर्त्सना और एकरंगी मेहनत का गुणगान आरम्भ हुआ।

★दूर-दराज के व्यापार के संग स्थानीय व्यापार का बढना व्यापारियों का दबदबा लाया और कुछ लाली अपने व परिवार के श्रम से मण्डी के लिये उत्पादन करने वालों के लिये भी। चार दिन की चाँदनी.....

★मण्डी में माल की बढती माँग शीघ्र ही मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन करना लाई। अपने व परिवार के श्रम द्वारा मण्डी के लिये उत्पादन और मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन में द्वन्द्व आरम्भ हुआ। फैक्ट्री-पद्धति। भाप-कोयले वाली मशीनरी के दौर में ही मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन ने निजी व परिवार के श्रम से मण्डी के लिये उत्पादन को इंग्लैण्ड से, पश्चिमी यूरोप से मिटा-सा दिया। दस्तकारों ने अपने काम के घण्टे बढाये, जीवन-स्तर गिराया। बढ़ती बदहाली ने दस्तकारों को मजदूरों की कतारों में धकेला।

★उत्तरी अमरीका से 1861 में यूरोप को अनाज का निर्यात आरम्भ हुआ। किसानी खेती की उपज, किसानों और उनके परिवारों द्वारा पैदा किये जाते अनाज का निर्यात हुआ। बढती माँग खेती में तीव्र परिवर्तन लाई। खेती में फैक्ट्री-पद्धति बढी। साठ वर्ष में, 1928 आते-आते उत्तरी अमरीका में किसानी खेती ने दम तोड़ दिया। बीस-तीस हजार एकड़ के फार्म और मजदूर.....अमरीका में आज चार प्रतिशत लोग खेती में हैं, मण्डी के लिये अनाज पैदा करते हैं।

★मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन स्वयं व परिवार के श्रम से मण्डी के लिये उत्पादन की मौत लिये है, सामाजिक मौत लिये है..... ताकतवर है इसलिये इस-उस आवश्यकता के लिये

जमीनों पर कब्जे कर सामाजिक हत्या भी करता है। इन दो सौ वर्ष में दस्तकारी-किसानी सामाजिक मौत, सामाजिक हत्या के सम्मुख है।

✶ मण्डी का विस्तार उत्तरी व दक्षिणी अमरीका, आस्ट्रेलिया, एशिया, अफ्रीका में कत्लेआम और लूट के ताण्डव लिये था। यूरोप में यह दस्तकारों-किसानों की सामाजिक मौत और मजदूरों का बढता शोषण लाया। 1914-1919 के युद्ध में ढाई करोड़ लोगों की हत्या और 1939-1945 के युद्ध में पाँच करोड़ लोगों की हत्या...

✶ इन पचास वर्षों में एशिया, अफ्रीका, दक्षिणी अमरीका में किसानों-दस्तकारों की सामाजिक मौत, सामाजिक हत्या ने इलेक्ट्रोनिक गति ग्रहण कर ली है। यह आबादी लाखों-करोड़ों में नहीं बल्कि अरबों में है। ऐसे में यह राहत, वह सुधार, यह-वह कृषि नीति को घातक नादानी अथवा क्रूर कॉईयाँपन के अलावा किस खाने-खाते में रख सकते हैं ?

✶ आज जो मजदूर हैं उनमें अधिकतर की पृष्ठभूमि दस्तकार-किसान की है। आज बहुत बड़ी सँख्या में किसानों-दस्तकारों की सन्तानें मजदूरों की कतारों में आ रही हैं। ऐसे में एक अनिवार्यता की तरह मजदूरों के भाव मण्डी में गिर रहे हैं, निकट भविष्य में और अधिक गिरते दीखते हैं।

ऊँच-नीच, मण्डी, मजदूरी-प्रथा के स्थान पर क्या ? वर्तमान में हावी सामाजिक प्रक्रिया और उससे पार पाने के लिये व्यापक आदान-प्रदान तथा कार्यवाहियों के अलावा और कोई विकल्प नहीं दिखता।◆

पी. एफ. यानी भविष्य निधि

ऑटो इगनिशन मजदूर : '' 46 माइल स्टोन मथुरा रोड़, पृथला, पलवल स्थित फैक्ट्री में 250 स्थाई मजदूर और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 300 वरकर काम करते हैं। यहाँ आयशर, जे सी बी, एस्कोर्ट्स, हॉलैण्ड ट्रैक्टर, एच एम टी, महिन्द्रा, ए सी ई, मारुति सुजुकी, टोयोटा, हुन्डई, देवू आदि के पार्ट्स बनते हैं। ..... स्थाई मजदूर 15 से 30 वर्ष से इस कम्पनी में काम कर रहे हैं और तनखा मात्र 10 से 12 हजार रुपये है। ऐसे में बड़े हो गये बच्चों की पढाई के लिये, शादि के लिये पैसों की जरूरत पड़ती है और मजदूर अपना फण्ड निकालते हैं। फरीदाबाद स्थित भविष्य निधि कार्यालय में नये-पुराने यूनियन नेताओं ने सैटिंग कर रखी है और मजदूर को अपने पैसे निकालने के लिये 1500 से 2000 रुपये देने पड़ते हैं। ऑटो इगनिशन का पी.एफ. कोड एच आर/8590 है और इसे डील करने वाले भविष्य निधि कर्मचारी की मजदूरों से बहुत कहा-सुनी होती है। बेधड़क हो कर वह पैसे माँगता है और कहता है कि सरकार उसकी जेब में है, रिश्वत के पैसों में से आधे पी.एफ. कमीश्नर को देता हूँ, पी.एफ. कर्मचारियों की भी यूनियन है जो सब देख लेगी, जाओ जहाँ बोलना है वहाँ बोल दो।''

एम ए डिजाइन श्रमिक : '' ए-41 सैक्टर-80, नोएडा स्थित मैटल पॉलिश फैक्ट्री के मजदूर अपने फण्ड के पैसे निकलवाने नोएडा के सैक्टर-24 स्थित पी. एफ. कार्यालय जाते हैं तब यह होता है। कम्पनी से फॉर्म भरवा कर पहली बार जाते हैं तब भविष्य निधि कार्यालय में नीचे बैठे कर्मचारी यह-वह कमी निकाल कर फॉर्म वापस दे देते हैं। फिर फॉर्म भरवाते हैं, चैक करवाते हैं, कम्पनी वाले कहते हैं कि सब सही है, पी. एफ. में बोलो कि क्यों जमा नहीं कर रहे। ऐसे में पी. एफ. वाले फॉर्म जमा कर लेते हैं पर मजदूर के पैसे नहीं आते। चक्कर काटने पर नीचे ही कोई भविष्य निधि कर्मचारी बताता है कि ऊपर तीसरी मंजिल पर जाओ और तुम्हारी कम्पनी को डील करने वाले से मिलो। एम ए डिजाइन कम्पनी का पी एफ कोड यू पी - 44221 है। तीसरी मंजिल पर : सर, पैसे निकालने हैं। हो जायेगा। कितने में हो जायेगा पूछने पर वह मुँह से कुछ नहीं बोला। फैक्ट्री में साथियों से बातें होती रही थी, दो हजार रुपये देने लगा तो पी. एफ. वाला बोला कि इतने में नहीं होगा, चोरी से क्यों दे रहे हो, इस में से सब को देना होता है, इसलिये तीन हजार दो। ढाई हजार देने पर मुश्किल से माना और वहाँ अगल-बगल में बैठे 17-18 पी. एफ. वाले यह देख व सुन रहे थे। कितने दिन में पैसे मिल जायेंगे ? परसों बैंक से निकाल लेना। सर, अपना नम्बर दो। क्यों ? बाई चान्स पैसे नहीं आये तो क्या करूँगा। टैन्शन मत लो, यह लो मेरा नम्बर, परसों बैंक से पैसे निकाल लेना। पैसे निकल गये। ''

सामान्य है

ए डी आई ऑटोमोटिव्ज मजदूर : ''बिनौला इन्डस्ट्रीयल एरिया, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में मार्च की तनखा 13 अप्रैल तक नहीं दी तब भोजन अवकाश के बाद डेढ बजे पावर प्रैस मजदूरों ने काम आरम्भ नहीं किया। पावर प्रैसें बन्द और बगल में टूल रूम में भी वरकरों ने काम शुरू नहीं किया। सुपरवाइजर और फिर इंजीनियर ने काम करने को कहा तो मजदूरों ने पहले तनखा की बात की। मैनेजर आया और 15 को तनखा दे देंगे कह कर मशीनें चलवाई। मजदूरों को 15 अप्रैल को पता चला कि आज भी तनखा नहीं मिलेगी। इस पर भोजन अवकाश के बाद ठेकेदारों के जरिये रखे 250-300 वरकर फैक्ट्री के बाहर चले गये। कम्पनी रोल वाले चन्द लोग ही फैक्ट्री में रहे। इस बार कोई सुपरवाइजर, इंजीनियर, मैनेजर मजदूरों के पास नहीं गया। तब मैनेजिंग डायरेक्टर बाहर

बैठे मजदूरों के पास गया : 14 को बैंक बन्द थे इसलिये पैसे नहीं निकाल पाये, कल तनखा दे देंगे, अगले महीने से 10 तारीख से पहले पैसे देंगे। एक घण्टे बाद मजदूरों ने फैक्ट्री में प्रवेश किया।''

भारत गियर श्रमिक : '' फरीदाबाद में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र में 1999 में फैक्ट्री शुरू हुई और 2010 में यहाँ आई टी आई किये 350 स्थाई मजदूर तथा 100 मैनेजमेन्ट स्टाफ था। तनखा कम, 7500-8000 रुपये, बढवाने के लिये 2010 में एक यूनियन से जुड़े। कम्पनी ने 7000 रुपये तनखा में डिप्लोमा वाले भर्ती किये, उन से मशीनें चलवाई, और उन्हें स्टाफ में बताया। सितम्बर 2010 में 2900 रुपये तीन वर्ष में बढाने का मैनेजमेन्ट - यूनियन समझौता हुआ। डिप्लोमा वालों की सँख्या बढ कर 200 हुई और आई टी आई वाले घट कर 180 हो गये। फिर इन 180 में 20 को कम्पनी ने सीनियर लाइन लीडर बनाया और मैनेजमेन्ट तथा यूनियन ने 40 अन्य को लाइन लीडर बनाया। अप्रैल 2014 में मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते में तीन वर्ष में 5600 रुपये बढाना. ..... बदमाशी यह की : सीनियर लाइन लीडर को 170 रुपये प्रतिदिन अतिरिक्त और लाइन लीडर को 140 रुपये प्रतिदिन अतिरिक्त। अब आम स्थाई मजदूरों की तनखा 12-14 हजार रुपये है जबकि लाइन लीडरों की 16-20 हजार और सीनियर लाइन लीडरों की 18-22 हजार रुपये। डिप्लोमा वालों में नये की तनखा 8000 रुपये और पुरानों की 12-14 हजार रुपये, कैन्टीन के 30 रुपये प्रतिदिन काटते हैं जबकि स्थाई मजदूरों के 8 रुपये ही। डिप्लोमा वालों की वर्ष में 30 सवेतन छुट्टियाँ थी पर जनवरी 2015 से यह 15 कर दी हैं। वैसे, ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 250 मजदूर भी हैं, इन्हें कैन्टीन में भोजन नहीं देते। यह मजदूर सीधे प्रोडक्शन में नहीं हैं, इनकी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।''

रोलैक्स हौजरी कामगार : '' प्लॉट 7, आई डी सी, महरौली रोड़, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में पीस रेट पर और तनखा में देरी पर कई बार मारपीट हो चुकी है। यहाँ काम करते 150 पीस रेट मजदूरों को मार्च की तनखा 2 मई को जा कर दी है। फिनिशिंग में 120 से 150 घण्टे ओवर टाइम महीने में होता है लेकिन भुगतान 80 घण्टे का फिक्स कर रखा है और वह भी सिंगल रेट से। बोनस नहीं देते, दीवाली पर मिठाई भी नहीं — 15 वर्ष में एक साल ही मिठाई दी है। यहाँ ***गैप, दिदे*** आदि का माल बनता है।''

अलर्ट इंडिया वरकर : '' नाथुपर, जिला सोनीपत स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर दिन में 11 तथा रात में 13 घण्टे की शिफ्टों में ***रिलैक्सो, लखानी, बाटा, लिबर्टी, रैड चीफ, वुडलैण्ड*** आदि के जूतों के सोल बनाते हैं। ओवर टाइम नाम की कोई चीज कम्पनी नहीं मानती। ठेकेदारों के जरिये रखे 900 मजदूर पीस रेट पर हैं और कम्पनी रोल वाले 100 मजदूरों को 26 दिन 11 अथवा 13 घण्टे रोज ड्युटी के बदले 7000-7500 रुपये देते हैं। ई एस आई व पी एफ 950 मजदूरों के नहीं हैं। कैन्टीन नहीं है। फैक्ट्री में जगह- जगह पर कैमरे लगा रखे हैं।''

पिसिस्ल श्रमिक : ''प्लॉट बी-72 सैक्टर-57 नोएडा स्थित लैदर फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 4-5 हजार रुपये और कारीगर पीस रेट पर।''

जे एन एस इन्सट्रुमेन्ट्स मजदूर : ''प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 30 अप्रैल को रात की ड्युटी में पुरुष मजदूरों ने काम बन्द कर मार्च में किये ओवर टाइम के पैसे माँगे। अगले दिन, 1 मई को मिल जायेंगे कह कर काम शुरू करवाया। पहली मई को भी पैसे नहीं दिये, साँय 4 बजे महिला मजदूर काम बन्द कर साहबों के पास गई। रजिस्टर खो गया है कह कर शीघ्र ही मार्च के ओवर टाइम के पैसे देने का आश्वासन दिया।''

वी जी कौशिको इंजीनियरिंग वरकर : '' प्लॉट 126 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में दो हजार मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मुख्यतः मारुति सुजुकी वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। कुछ काम होण्डा कारों का भी होता है। मजदूरों में एक भी स्थाई नहीं है, सब को दस से ज्यादा ठेकेदारों के जरिये रखा है। स्टाफ के 100 लोगों में भी 50 ठेकेदार के हैं। बारह घण्टे की ड्युटी के बाद भी फोन कर वरकर को काम करने बुला लेते हैं, कमरे पर जा कर मोटरसाइकिल पर ले आते हैं — मना करने पर : 'कल से ड्युटी पर मत आना।' महीने में 150-175-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और गड़बड़ी कर 12-16-32 घण्टे खा भी जाते हैं। प्रैस शॉप में उत्पादन का ज्यादा जोर रहता है और यहाँ हैल्पर की तनखा 6000 रुपये, ऑपरेटर की 6200-6400 रुपये। बाकी सब जगह सब मजदूरों की तनखा 5813 रुपये — वैल्ड शॉप में 80 रोबोट भी हैं पर वरकर की तनखा 5813 ही। प्रैस शॉप में कम्पनी 12 घण्टे में एक चाय व समोसा देती है, बाकी विभागों में वह भी नहीं। कैन्टीन में थाली 30 रुपये की है, स्टाफ वाले ही लेते हैं, मजदूर अपने साथ रोटी ले जाते हैं। जब 12 घण्टे बाद काम करवाते हैं तब कम्पनी भोजन देती है। फैक्ट्री की बगल में प्लॉट 121 में 100 ट्रक दिन-रात लादे जाते हैं। वर्दी के नाम पर चार कमीज ही देते हैं और तनखा से 800 रुपये काट लेते हैं। हाँ, सब वरकरों को बोनस देते हैं पर मात्र 3500 रुपये। वैसे, गार्डों को बोनस नहीं देते।''

एस जी एम पेपर प्रोडक्ट्स मजदूर : '' प्लॉट 183 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे ड्युटी .....

जून 2015

मुखर होते क्षमता में आत्मविश्वास से भरे

अप्रैल 2015 के मजदूर समाचार में '' कुछ अस्थाई मजदूरों की बातें'' पर तरह-तरह की बातचीतें उभरी हैं, उभर रही हैं। नागपुर से फैक्ट्री मजदूरों ने समूह में चर्चा कर फोन पर गुण विवेचना की। सुना है कि बांग्ला भाषा में इसका अनुवाद प्रकाशित हुआ है। अमरीका में गल्फ लेबर से जुड़ी कला छात्रा को अंग्रेजी अनुवाद अति आवश्यक लगा है। फैक्ट्रियों में कार्यरत, फैक्ट्रियों में कार्य कर चुके लोगों ने उत्साह, उत्तेजना महसूस की है। एक साथी के अनुसार आज यह विश्व-भर में मजदूर होने की एक सर्वोत्तम अभिव्यक्ति का उदाहरण है। एक और के मुताबिक यह आज मजदूर होने की व्यापक, विस्तृत, सार्विक शर्त है। साथ ही, मजदूरों की इन बातों का राजनीतिक संगठन के लोग मजदूर लाइब्रेरी पहुँच कर विरोध भी दर्ज कर चुके हैं।

उत्साह, उत्तेजना, समर्थन, विरोध क्यों ? हमारे विचार से इनका कारण मजदूरों का मुखर आत्मविश्वास है। और, यह आत्मविश्वास कुछ क्षमताओं से गठित है। यह क्षमतायें गुण भी हैं और शर्त भी हैं। इस सन्दर्भ में हमारी प्रारम्भिक सूची यह है –

(क)

– वर्णन करने की क्षमता

– विश्लेषण की क्षमता

– स्मृति उपकरणों का प्रयोग

(ख)

–साधन जुटाने की क्षमता

– सामर्थ्य का निर्माण

– निर्णय लेने की क्षमता

(ग)

– मंच के वक्ता/श्रोता के विभाजन को निष्क्रिय, अप्रभावी करने की क्षमता

– आडम्बर में छेद करने की क्षमता

– खरी-खरी सुनाने का आत्मबल

(घ)

– लचीले, अहंकारहीन कदम

– अपने बल पर कदम

–गलती-भूल स्वीकार, नये प्रयोग के प्रति खुलापन

– व्यक्ति, टोली, मंडली, समूह, जमाव, संघ, लश्कर में कदम उठाने की क्षमता

(च)

– सरलता, भोलापन, सीधापन और गहनता, गहराई, गंभीरता को साथ-साथ रखने की क्षमता

– सूत्र, स्रोत के प्रति उदारता रखने की क्षमता

– विभिन्न सलाह, परामर्श, राय सुनने की क्षमता

– सुनना सब की, करना अपनी सोच-समझ के अनुसार, यह क्षमता

(छ)

– महत्त्व की पहचान की क्षमता

– धैर्य, तप, धीरता से विश्लेषण की क्षमता

– संकेत पढने की, छिपे को खोलने की, गूढ को पढने, कूट को पढने की क्षमता

(ज)

– कार्यस्थलों के आर-पार, सभी जगह सक्रियता की क्षमता

– क्षेत्र-व्यापी मौजूदगी की अभिव्यक्ति की क्षमता

(झ)

– आराम से, सांप्रदायिक विलास, सामूहिक सुख, साम्यवादी आनन्द की क्षमता

– ''मजदूर चाहते क्या हैं ?'' पहेली का ताप बढाने की क्षमता ◆

ट्रैक कम्पोनेन्ट्स

प्लॉट 21 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर। आठ स्थाई मजदूर और बाकी सब ठेकेदारों के जरिये रखे। मैनेजरों ने जनवरी 2014 में बताया कि हैड ऑफिस से 152 को परमानेन्ट करने की सूची आई है। लिस्ट दिखाई नहीं और फिर चुप्पी। जनवरी व जुलाई 2013 से देय मंहगाई भत्ता कम्पनी ने नहीं दिया था, जनवरी 2014 से देय डी. ए. भी नहीं दिया। हर वर्ष अप्रैल में 12-1300 रुपये का एग्रीमेन्ट होता था, 2014 के लिये मना कर दिया। दो बार नाप ले जाने के बाद सेफ्टी शूज देने से इनकार कर दिया। वर्दी 2013 में दी थी, 2014 के लिये मना कर दिया। कैन्टीन में भोजन बहुत खराब। फर्श टूटा-फूटा, ट्राली गिरती, चोट लगती। प्रोडक्शन टॉरचर : जहाँ मुश्किल से 1500-2000 पीस निकलते वहाँ 4000-5000 पीस निकालो। तनखा देरी से, 16 से 25 तारीख को। ओवर टाइम 18 से 23 रुपये प्रति घण्टा, महीने के 1600-1700 रुपये। एक्सीडेन्ट होने के बाद नौकरी छोड़ने को मजबूर करना।

8 स्थाई मजदूरों को आगे कर एच एम एस यूनियन से जुड़े। आठ-दस वर्ष से काम कर रहे 187 वरकरों के हस्ताक्षर 28 से 30 मई 2014 के बीच 15 लोगों ने बाइकों पर कमरे-कमरे जा कर करवाये। एच एम एस वालों ने फैक्ट्री यूनियन की रजिस्ट्रेशन के लिये 6 जून 2014 को फाइल चण्डीगढ लगाई। फाइल लगाने के बाद ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर चुपचाप आपस में मीटिंगें करते रहे। दो बार सैक्टर-7 पार्क में हस्ताक्षर के लिये एकत्र हो कर 2 से 4 वर्ष से कार्य कर रहे 5-600 ने दस्तखत किये और यूनियन पंजीकरण के लिये दूसरी फाइल जुलाई-अन्त 2014 में लगाई।

कम्पनी को पता चल गया। चर्चा : कम्पनी ने 5 लाख रुपये रिश्वत दे कर 187 मजदूरों के नाम वाली सूची चण्डीगढ से प्राप्त की। एक-एक, दो-दो को बुला कर मैनेजमेन्ट द्वारा धमकियाँ देना। यूनियन पदाधिकारी बने 8 स्थाई मजदूरों को धमकी और लालच की बातें – दो को 30-30 लाख रुपये और 6 को 5-5 लाख रुपये का ऑफर के किस्से। आठ स्थाई का 15 जून 2014 को कम्पनी ने गेट बन्द कर दिया और फिर दिवाली के बाद उन्हें ड्युटी पर लिया।

जब 8 बाहर थे तब 4 बार मानेसर पहाड़ी पर मीटिंग हुई। हर बार 6-700 मजदूर एकत्र हुये। एच एम एस के गुड़गाँव लीडरों के भाषण : एकता बनाये रखो; सब परमानेन्ट हो जाओगे; तनखा अच्छी हो जायेगी; जूते-वर्दी मिलेंगे; सब सुविधायें हो जायेंगी; सब बढिया होगा। जुलाई-अगस्त 2014 में चन्दा एकत्र किया। पुराने 25-30 हैल्परों ने 1000-1000 रुपये दिये, 400 ऑपरेटरों में 2-2 हजार रुपये दिये, 200 फोरमैनों ने भी 2000-2000 रुपये दिये।

अक्टूबर 2014 में 8 स्थाई के वापस ड्युटी पर आने के बाद यूनियन की तरफ से सन्नाटा है। फैक्ट्री यूनियन पदाधिकारियों और एच एम एस लीडरों की झूठ सुन-सुन कर हमारे कान पक गये हैं।

तनखा में देरी पर अब फिर मजदूर स्वयं काम बन्द करते हैं। काम बन्द हुये 15 मिनट ही होते हैं कि मैनेजमेन्ट कल या परसों पैसे देने की बात कर देती है।◆

रॉकलैण्ड अस्पताल

प्लॉट 2 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित रॉकलैण्ड अस्पताल में 150 डॉक्टर, 600 नर्स और एच आर वालों की तो भरमार है। हाउसकीपिंग, सेक्युरिटी आदि में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। कोई साप्ताहिक अवकाश नहीं, छुट्टी करने पर पैसे काटते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी पर 30-31 दिन के 9000 रुपये काट-पीट कर देते हैं। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ की राशि काटते हैं। पी एफ की भारी समस्या है। पी एफ नम्बर किसी भी वरकर को पता नहीं, इन्टरनेट पर फण्ड दिखता नहीं, और जो छोड़ कर गये हैं उन्हें फण्ड के पैसे नहीं मिले। तनखा हर महीने देरी से, 15-20 तारीख को। वार्षिक बोनस देते ही नहीं। कैन्टीन है पर थाली 30 रुपये की है, डॉक्टर-नर्स के लिये है, वरकर कमरे पर रोटी बना कर ले कर जाते हैं। रात को टॉप सेक्युरिटी दारू पी कर गाली भी देते हैं। और, बीमार होने पर रॉकलैण्ड अस्पताल से वरकर को एक रुपये की दवा तक नहीं, किसी वरकर के पास ई एस आई कार्ड भी नहीं है, ऐसे में प्रायवेट में उपचार करवाते हैं। ◆

असंगत बन गये हैं कानून

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर मजदूर : ''प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में मई-आरम्भ से बाइक उत्पादन कम है और स्कूटर उत्पादन सामान्य है। फिर भी स्कूटर प्लान्ट से राज्य सरकार द्वारा मान्यता, राष्ट्रीय मान्यता नहीं कह कर मई में 100 से ज्यादा राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि से आई टी आई कियों को निकाला है। राज्य/राष्ट्रीय मान्यता वाले फेर के अलावा पहले साल वाले मई माह में बाइक प्लान्ट से 450 मजदूर निकाले हैं। होण्डा कम्पनी की मानेसर के बाद बंगलुरू, फिर टपुकड़ा (अलवर) में दुपहियों का उत्पादन हो

रहा है और नवम्बर से गुजरात में फैक्ट्री में भी प्रोडक्शन शुरू हो जायेगा। मानेसर से स्थाई मजदूरों को स्टाफ बना कर कम्पनी ने अन्य प्लान्टों में भेजा है। पिछले मैनेजमेन्ट-यूनियन तीन वर्षीय समझौते में हर वर्ष 100 अस्थाई मजदूरों को स्थाई करना तय हुआ था – 50 वरिष्ठता के आधार पर और 50 परीक्षा द्वारा। पाँच वर्ष पहले वाली परीक्षा के परिणाम तीन साल बाद घोषित किये और फिर कोई परीक्षा ही नहीं ली है। यूनियन से एग्रीमेन्ट को तीन वर्ष पूरे हो गये हैं, 300 स्थाई होने चाहियें थे पर कम्पनी ने 100 ही स्थाई किये हैं। स्टाफ में करने और कम को परमानेन्ट करने के कारण अब यहाँ स्थाई मजदूर 1500-1600 हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे नये मजदूर की तनखा 10,000 और पाँच साल से काम कर रहे की 12,000 रुपये है। ..... होण्डा कैन्टीन में हम 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। हमें ओवर टाइम काम के पैसे नहीं दिये जाते। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के काट-पीट हमें 6000 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में एच आर विभाग है, यूनियन है, सब हैं फिर भी ऐसे ही चलता है। अफसर और लीडर सुनते ही नहीं। कोई कैन्टीन वरकर उन्हें ज्यादा बोलता लगता है तो उसे नौकरी से निकाल देते हैं।''

गुप्ता एग्जिम श्रमिक : ''छपरौला रोड़, पृथला, पलवल स्थित फैक्ट्री की पुरानी इमारत में कपड़ों की रंगाई होती है और नई बिल्डिंग में, बेसमेन्ट व 4 मंजिलों पर एक्सपोर्ट का काम होता है। एक्सपोर्ट में 300 महिला मजदूर और 1200-1300 पुरुष मजदूर काम करते हैं। सुबह 9½ बजे काम आरम्भ होता है, महिला मजदूरों का रोज 1½ घण्टे ओवर टाइम, उन्हें रात पौने आठ छोड़ते हैं। पुरुष मजदूर रात पौने आठ, रात 11 बजे, अगली सुबह 4 बजे तक काम करते हैं। बदरपुर बार्डर से बसें सुबह 8 बज कर 10 मिनट पर चलती हैं और बल्लभगढ़ से 8 बज कर 40 मिनट पर। रात को 8 बज कर 20 मिनट पर ज्यादा बसें फैक्ट्री से फरीदाबाद की तरफ चलती हैं, फिर 5 बसें रात सवा 11 बजे, और 3 बसें अगली सुबह सवा 4 बजे। पलवल की तरफ वाले मजदूरों को स्वयं अपने आने-जाने का प्रबन्ध करना पड़ता है। कैन्टीन एक है, वरकर ज्यादा हैं इसलिये अलग-अलग मंजिल का अलग-अलग लन्च होता है जिसकी सूचना लाउडस्पीकर से देते हैं। कैन्टीन में थाली 20 और 30 रुपये की, भोजन खराब –मजदूर अपनी रोटी ले जाते हैं पर रात पौने आठ बाद जबरन रोकते हैं तब कैन्टीन का भोजन करना पड़ता है। रात 11 बजे तक रोकते हैं तब वरकर को 20 रुपये का कूपन और अगली सुबह 4 बजे तक रोकते हैं तब 35 रुपये का कूपन कम्पनी देती है। सिलाई कारीगर 800 के करीब हैं और अधिकतर पीस रेट पर हैं। फिनिशिंग में महीने में 100-120-150 घण्टे ओवर टाइम लेकिन पे-स्लिप में 15-16 घण्टे ओवर टाइम तथा भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं। अधिकतर ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। यहाँ बायर कोल आदि का माल तैयार होता है। कम्पनी ने बिना सूचना के अचानक दूसरी मंजिल पर काम बन्द कर अप्रैल में वहाँ के सब मजदूरों को निकाल दिया।''

भैरव इम्ब्राइड्री कामगार : ''सी-16 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में इम्ब्राइड्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और पैकिंग, सिलाई, रंगाई, सैम्पलिंग, हैण्ड वर्क में दिन की 8 घण्टे की शिफ्ट है। कम्प्युटर इम्ब्राइड्री ऑपरेटर को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 9000 रुपये और हैल्पर को 6000 रुपये देते हैं (कानून अनुसार इनके 21,996 तथा 18,096 रुपये बनते हैं)।''

अपोलो एक्सपोर्ट वरकर : '' प्लॉट 13 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूर सुबह 9½ से रात 12 बजे तक रोज काम करते हैं, अगली सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। प्रोडक्शन (सिलाई) और फिनिशिंग, दोनों में महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम के। दो घण्टे प्रतिदिन ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी के समय का सिंगल रेट से। फैक्ट्री में कैन्टीन थी, दो महीने से बन्द कर रखी है – खाली दिखाने के लिये है। रोटी के लिये 30 रुपये देते हैं, फैक्ट्री के बाहर जाना पड़ता है। बड़ा वाला कूलर है – चलता नहीं है, दिखावे के लिये है। सिलाई की चार लाइन हैं, दो लाइनों में ही पँखे हैं। पहली मई से टेलरों की तनखा बन्द, अब पीस रेट पर हैं और 400 सिलाई कारीगरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। फिनिशिंग में कम्पनी द्वारा रखे 60-70 की ई एस आई व पी एफ हैं लेकिन ठेकेदार के जरिये रखे 70-80 की नहीं हैं।''

ए बी इन्टरनेशनल मजदूर : '' डी-6/6 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 320 रुपये (कानून अनुसार 423 रुपये होने चाहियें) और हैल्परों की तनखा 6000 रुपये (कानून अनुसार 9048 रुपये होनी चाहिये)। ड्युटी सुबह 9½ से रात 8½, ओवर टाइम का भुगतान 40 रुपये प्रतिघण्टा (कानून अनुसार 106 रुपये प्रतिघण्टा होने चाहिये)।''

ओमैक्स ऑटो श्रमिक : '' प्लॉट 6 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 214 स्थाई मजदूरों की 3 शिफ्ट हैं और 225 कैजुअल वरकर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूरों 10-12-14 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, हैल्परों को 25 रुपये प्रतिघण्टा। यहाँ हीरो, सुजुकी, होण्डा दुपहियों के लोहे के हिस्से-पुर्जे बनते हैं, पावर प्रैसों पर उँगली कटती हैं। .....

जुलाई 2015

कब्जे तोड़ता, ढक्कनें उछालता जीवन

(क)

लाखों-करोड़ों में औरतें जीवन की नई शैली ढूँढ रही हैं, और नई शैलियों में ढाली भी जा रही हैं। अनेकों प्रकार के प्रयोग, नये जोड़, नये रिश्ते, अनेकों इनकार चक्रवर्ती तूफान के रूप में विद्यमान हैं।

ऐसे में कोई इसे भयंकर, खतरनाक चुनौती के रूप में पेश करे और जिद करे कि औरत को परिवार की ही चौखट में देखा जाये, तो उसे क्या कहेंगे ?

औरतें, बच्ची से वृद्धा तक, नई भाषा, नई परिभाषाओं में अपने को व्यक्त कर रही हैं। इसे कैसे प्रस्तुत करेंगे?

उन अनाम क्षणों और रेखाओं-धाराओं को चिन्हित कैसे करेंगे जो आसपास को अपरिचित बना देते हैं, पर अन्य प्रवाहों को प्रत्यक्ष कर देते हैं ?

(ख)

हर रोज फैक्ट्री में प्रवेश करते समय एक हजार मजदूर नौकरी से बरखास्त अपने दो साथियों को गेट के बाहर खड़ा देखते। दूधनाथ और रामप्रसाद डिसमिस किये जाने के खिलाफ कोर्ट-कचहरी नहीं गये। गेट के बाहर प्रतिदिन खड़े हो कर काम पर जाते अपने साथियों से दुआ-सलाम करते रहे। फैक्ट्री के अन्दर उन्हें ले कर वाद-विवाद बढते रहे। बढती चर्चाओं के भंवर को थामने के लिये पन्द्रह दिन में मैनेजमेन्ट ने दूधनाथ और रामप्रसाद को ड्युटी पर वापस ले लिया।

ये बात, यह छवि, ये घटना बातचीत में तब उभरी जब इस सवाल पर चर्चा हो रही थी कि — आपके जीवन में कौन से क्षण हैं जिन्होंने जीवन को देखने और समझने की राहें मोड़ दी?

रुटीन के बहाव में खलल पैदा करने वाले क्षण निरन्तर उत्पन्न होते रहते हैं। हम में और हमारे आसपास जो प्रकाशमान और जादुई है, यह क्षण उसका बोध हमें कराते रहते हैं।

(ग)

दायरों के पार जाना सामान्य है। जीवन में इतनी बहुतायत है कि उसे सीमाओं में बाँधना नामुकिन है। यह बहुतायतता तरह-तरह से खुद को अभिव्यक्त कर रही है, विभिन्न अखाड़ों को नाकारा साबित कर रही है।

'' पार जाने '' का बोध सब को होता रहता है। तभी एक फैक्ट्री के बीस मजदूर अपनी बातों को गत्तों पर लिख कर हजारों के बीच जाते हैं। तभी नौकरी की सीमा के पार जा कर यूनान में युवक-युवतियाँ सार्वजनिक रसोईघर, सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्र, वृद्धों की देखभाल, और सार्वजनिक उल्लास के लिये स्थानों की रचना कर रहे हैं।

किस तरह की तैयारी में रहें ?

क्या सवाल पूछें ?

कैसे प्रयोग करें ?

— ताकि जीवन की बहुतायतता और दायरों के पार जाने की सामान्यता के हम प्रसार-बिन्दू बने रहें। हम अवसर बनें। ■

प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग

वाहनों के स्टीयरिंग व्हील व अन्य हिस्से-पुर्जे बनाती, 1991 में दिल्ली में स्थापित कम्पनी की आज गुड़गाँव, चेन्नई, बद्दी, धारूहेड़ा में फैक्ट्रियाँ हैं। वैश्विक स्तर की तकनीकी कम्पनी ने टोयोडा गोसेइ (जापान), मोलटैक्स (कोरिया) और डेल्फी मैटल (एस्पान एस. ए.) से ली है। कम्पनी के ग्राहक हैं : मारुति सुजुकी, ह्युन्दई, टाटा मोटर, फियेट, महिन्द्रा, फोर्ड, होण्डा, हिन्दुस्तान मोटर, अशोक लेलैण्ड, टोयोटा किर्लोस्कर, एल एण्ड टी, आयशर, सोनालिका, टैफे, स्वराज माजदा, मावल, कुबोटा, कैटरपिलर, पियाजिओ। प्रिमियर कम्पनी के अनुसार वरकरों की सँख्या 101 से 500 है और वार्षिक कारोबार 50 से 100 करोड़ रुपये का।

गुड़गाँव में उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 185 स्थित प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्ट्री के मजदूरों के अनुभव, विचार, कदम महत्वपूर्ण हैं। संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत हैं।

12-12 घण्टे की दो शिफ्टों वाली फैक्ट्री में ओवर टाइम का भुगतान 6 रुपये प्रति घण्टा हैल्परों को और 8 रुपये प्रति घण्टा ऑपरेटरों को देना कम्पनी की विशेषता रही है। इधर वर्ष-भर से 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 7 माह से ओवर टाइम बन्द है। वर्ष 2013 में दिवाली पर बोनस 8400 रुपये के संग उपहार था पर 2014 में दिवाली पर मात्र 2000 रुपये दे कर बोले कि दुबारा जनवरी में देंगे।

जनवरी में कम्पनी 4 मोल्डिंग मशीनें हटा कर धारूहेड़ा फैक्ट्री ले जाने लगी तो मजदूरों ने ऐतराज किया। बड़े साहब ने हाथ जोड़े। उन 4 मशीनों पर काम करते 10 मजदूरों को एक हफ्ते की छुट्टी दी और वे वापस आये तो उन्हें ड्युटी पर नहीं लिया। श्रम विभाग में शिकायत पर तारीख-तारीख-तारीख।

मार्च में कम्पनी नया एच आर मैनेजर लाई। यह साहब आते ही डराने-धमकाने लगे, मजदूरों को अपने खर्चे पर धारूहेड़ा काम करने को कहने लगे। मजदूरों ने और मशीनें हटाने तथा नौकरी से निकाले जाने के खिलाफ सहायता के लिये वकील किया। वकील ने न्यायालय से स्टे मिल गया है की बात की। कम्पनी ने अप्रैल-मई के दौरान आठ-दस वर्ष से काम कर रहे 50 अस्थाई मजदूर हेराफेरी से नौकरी से निकाल दिये।

6 जून को साँय कम्पनी ने 8 व 9 जून को छुट्टी का नोटिस लगाया। कारण ? मारुति सुजकी में 7 से 14 जून मेन्टेनैन्स शट डाउन को कारण बताया जबकि 25 वर्ष में एक बार भी ऐसी छुट्टी नहीं दी थी। चौकस तो मजदूर थे ही, और चौकन्ने भी हो गये।

रविवार, 7 जून को रात दस बजे आठ गाड़ियों में बाउन्सरों और थानेदार के साथ मैनेजमेन्ट फैक्ट्री पहुँची। कापसहेड़ा में रह रहे प्रिमियम मोल्डिंग के 35 मजदूर तत्काल फैक्ट्री पहुँचे। मशीनें निकालने से रोकते मजदूर बाउन्सरों से भिड़े और थानेदार को अदालत द्वारा स्टे की बात बताई। थानेदार ने मशीनों के निकालने पर स्टे की बात नहीं मानी और मजदूरों को फैक्ट्री से जाने को कहा। अगले दिन, 8 जून को मजदूर पुलिस कमिश्नर से मिले तब उन साहब ने भी न्यायालय से ऐसे स्टे की बात से इनकार किया। पुलिस के संरक्षण में बाउन्सरों की मदद से मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री से मशीनें निकाल कर धारूहेड़ा भेजना जारी रखा। वकील ने मशीनें निकालने के खिलाफ स्टे लिया ही नहीं था, मजदूरों को नौकरी से निकालने के खिलाफ ही स्टे लिया था। कम्पनी आवश्यक मशीनें धारूहेड़ा ले गई। बचे-खुचे कबाड़े को निकालने से रोकने के लिये वकील 2 जुलाई को स्टे के लिये आवेदन कर रहा था.....

कम्पनी द्वारा घोषित अवकाश के बाद, 10 जून को मजदूर ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचे तो उन्हें इन्तजार करने को कहा। फिर कम्पनी ने 14 मजदूरों का तमिल नाडु ट्रान्सफर का नोटिस गेट पर चिपका दिया। इस ट्रान्सफर का मजदूरों ने विरोध किया। इस प्रकार स्थाई व अस्थाई, सब 200 मजदूर 10 जून से फैक्ट्री के बाहर। सहायक श्रम आयुक्त ने कम्पनी-पक्ष में इसे मजदूरों द्वारा हड़ताल करार दिया है। न्यायालय ने कम्पनी-पक्ष में मजदूरों को फैक्ट्री गेट से 25 मीटर दूर रहने का आदेश दिया है – एक-दूसरे से सटी फैक्ट्रियों के इस दौर में प्रिमियम मोल्डिंग के मजदूर 10 जून के बाद से अन्य फैक्ट्री के पास एकत्र हो रहे हैं।

दबाव बढाने के लिये कम्पनी ने मई की तनखा नहीं दी। श्रम विभाग में शिकायत पर : 22 जून को देंगे – नहीं दी; 26 जून को देंगे – नहीं दी और मई में एक दिन की हड़ताल पर 8 दिन के पैसे काटने की बात की ; 1 जुलाई को देंगे – स्थाई को 8 दिन के पैसे काट कर चैक देने लगे तो स्थाई मजदूरों ने पहले अस्थाई मजूदरों को पैसे देने को कहा जिस पर 2 जुलाई का दिन तय हुआ।

इधर प्रिमियम मोल्डिंग मजदूरों ने एक यूनियन से सम्पर्क भी किया। लेकिन ईस्टर्न मेडिकिट के स्थाई मजदूरों, बजाज मोटर के स्थाई व अस्थाई मजदूरों, ऑटो लिव के स्थाई व अस्थाई मजदूरों, बैक्सटर के स्थाई मजदूरों, अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स के अस्थाई मजदूरों, मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों के अनुभव उनके सम्मुख हैं : श्रम विभाग में तारीख-तारीख-तारीख, न्यायालय में तारीख-तारीख-तारीख, अफसर-नेता-मन्त्री के आश्वासन-आश्वासन-आश्वासन, महीना-बीस दिन में प्रदर्शन-सभा में लीडरों के भाषण, हताशा में भूख हड़ताल..... थकाने वाली यह राहें मजदूरों पर कम्पनियों की शर्तें थोपने का जरिया रही हैं।

इस सब को ध्यान में रखते हुये प्रिमियम मोल्डिंग के मजदूरों ने उद्योग विहार की हजारों फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों से तालमेल की राह पर कदम बढाये हैं। पहले-पहल कुछ झिझक के

बाद, 4 जुलाई को सुबह की शिफ्टों के समय गत्तों पर अपनी बातें लिख कर यह मजदूर उद्योग विहार में पीर बाबा रोड़ पर खड़े हुये हैं। उत्साह। एक फैक्ट्री के मजदूरों की बातें हजारों फैक्ट्रियों में आरम्भ हुई हैं। प्रिमियम मोल्डिंग मजदूरों ने सोमवार, 6 जुलाई से हर रोज गत्तों पर अपनी बातें लिख कर उद्योग विहार में मजदूरों के बीच सुबह की शिफ्ट के समय जाना तय किया है। यह मजदूर-पक्ष को आकार देने वाला कदम है। मजदूर-पक्ष का ठोस आकार लेते जाना कारगर लगता है कम्पनी-पक्ष को पीछे हटाने को मजबूर करने में।

असंगत बन गये हैं कानून

एफ सी सी मजदूर : ''प्लॉट 5 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री के नाम से रीको शब्द इस वर्ष जनवरी में हटाया है। यहाँ 2009 में यूनियन बनवाने के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने भी 1000-1000 रुपये दिये थे। यूनियन बनने के बाद अस्थाई मजदूरों की दिक्कतें और बढी हैं। पहले हर छठे महीने ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूरों में से 10-12 को कम्पनी स्थाई करती थी। तीन-चार वर्ष से लगातार काम कर रहे स्थाई हो जाते थे। यूनियन ने वर्ष में 25 को स्थाई करने का समझौता किया और इन 6 वर्ष में 150 की बजाय 50 ही स्थाई किये गये हैं। अब करीब 300 स्थाई और 800 अस्थाई मजदूर हैं, आठ-दस वर्ष से लगातार काम कर रहे भी अस्थाई हैं। जनवरी में सब की वार्षिक वेतन वृद्धि होती थी – चार वर्ष से अस्थाई मजदूरों की तनखा में एक पैसा नहीं बढाया है जबकि स्थाई के वेतन में इस दौरान 12,000 रुपये की वृद्धि हुई है। महीने में 2 घण्टे के 2 गेट पास अस्थाई मजदूरों को मिलते थे, डेढ वर्ष से बन्द कर दिये हैं। अस्थाई की 2 सी एल छुट्टी पास हो जाती थी, वो बन्द कर दी गई हैं। फैक्ट्री में जो हार्ड वर्क है वह अस्थाई वरकर करते हैं, 8 घण्टे खड़े-खड़े करते हैं। अस्थाई ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं, बेसिक 5813 रुपये है। यह तो 50 से 150 घण्टे ओवर टाइम जिसका भुगतान दुगुनी दर से है; प्रोडक्शन इन्सेन्टिव 5000-5500 रुपये; उपस्थिति भत्ता 500 रुपये ; शिफ्ट अलाउन्स 20-25 रुपये प्रतिदिन ; मकान भत्ता 450 रुपये पुरानों को (नये को 650 रुपये) हैं कि खींच-खाँच रहे हैं।''

पैनेक्स ओवरसीज श्रमिक : '' प्लॉट बी-63 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 500 मजदूरों में 14 सैम्पलिंग टेलरों की ही ई एस आई व पी एफ। दस वर्ष से पैसे काट रहे हैं पर ई एस आई कार्ड नहीं दिये और पी एफ जमा नहीं किया। सैम्पलिंग टेलरों में हलचल बढी तो मैनेजमेन्ट ने अप्रैल से उन्हें खाली बैठाना शुरू किया। गिरीनगर में एक यूनियन लीडर के पास 12 जून को सैम्पलिंग टेलर गये। नेता के कहने पर श्रम निरीक्षक 18 जून को जाँच के लिये फैक्ट्री पहुँचा – यह बात मैनेजमेन्ट को फोन द्वारा पहले बता दी। फैक्ट्री के पिछले गेट से 450 मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने बाहर निकाल दिया। श्रम निरीक्षक को फैक्ट्री में 80 मजदूर ही मिले। लीडर फिर छापा डलवायेगा.....''

परफैक्ट मैकेनिकल इन्डस्ट्रीज कामगार : '' 14/1 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 150 स्थाई मजदूर, 70 कैजुअल वरकर, और 42 ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों के लिये विभिन्न रोडवेज की 12 गाड़ी की बॉडी तैयार करना निर्धारित है। यहाँ सेना की बस, बुलेट प्रूफ बॉडी, बैंकों के लिये कैश वैन की बॉडी बनती हैं। रेलवे का भी काम होता है। सुबह 9 से रात 9½ से अगली सुबह 9 के बाद फिर 12 घण्टे की ड्युटी – लगातार 36 घण्टे काम भी हो जाता है। महीने में 80 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। बोनस सिर्फ स्थाई मजदूरों को देते हैं। आठ-नो वर्ष पहले क्रेन ठीक करने चढे इलेक्ट्रीशियन की बिजली के झटके से मृत्यु हो गई। मजदूरों ने एक सप्ताह काम बन्द रखा तब मृत मजदूर के परिवार को कुछ ठीक-सी क्षतिपूर्ति कम्पनी ने दी थी।''

दिल्ली मैट्रो मजदूर : '' सरिता विहार-जसोला ओवर ब्रिज के पास दिल्ली मैट्रो सीमेन्ट कास्टिंग स्थल पर 150 मजदूरों और गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 8000 हजार रुपये देते हैं और वह भी देरी से। मई की तनखा 28 जून तक नहीं दी तो मजदूरों ने हँगामा किया, तब मई की तनखा 30 जून को दी।''

एमटेक वरकर : '' प्लॉट 51 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में मई माह में किये ओवर टाइम के पैसे पहली जुलाई तक नहीं दिये तो 2 जुलाई को सुबह 9 बजे ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये, गेट पर बैठ गये। मैनेजमेन्ट ने 10 बजे गेट पर आ कर कहा कि 2 बजे पैसे देंगे, तब इन मजदूरों ने फैक्ट्री में प्रवेश किया। ''

बेस्टन इलेक्ट्रोविजन मजदूर : '' बी-70 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में तनखा 12-14-15 हजार दिखाते हैं पर देते 5-6-7 हजार रुपये हैं। कम्पनी दो रजिस्टर रखती है। छोड़ चुके 10 मजदूरों ने श्रम विभाग में मामले दर्ज कर रखे हैं। जाँच का कम्पनी को पहले ही पता चल जाता है, कई वरकरों को जनरेटर रूम में बन्द कर देते हैं, मई में श्रम निरीक्षक फैक्ट्री आया तब 35 मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने बाहर कर दिया था। अधिकारी लोग मैनेजमेन्ट से मिल कर, ले-दे कर चले जाते हैं। ''

गूँगी बैठक

इम्पीरियल ऑटो इन्डस्ट्रीज मजदूर : ''80-90 प्रकार के हौज और फ्युअल इंजेक्शन पाइप आदि बनाती कम्पनी की फरीदाबाद में ओल्ड रेलवे स्टेशन के सामने, डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, प्लॉट 31-32 सैक्टर-27 सी, 13/6 तथा 19/6 मथुरा रोड़, प्लॉट 78-83-94 सैक्टर-25, पृथला (पलवल) में फैक्ट्रियाँ हैं। इम्पीरियल ऑटो की पुणे, साणन्द, कोलकाता, बेंगलुरू, बावल आदि में भी फैक्ट्रियाँ हैं। यहाँ बजाज, जे सी बी, महिन्द्रा, टाटा मोटर, हीरो, यामाहा, होण्डा, टोयोटा, मारुति सुजुकी, ह्युन्दाई, एस्कोर्ट्स, आयशर, टी सी एल, अशोक लेलैण्ड, क्युमिन्स, रेलवे, वायुयानों के पार्ट्स बनते हैं। टैफलोन पाइप के लिये कच्चा माल ताइवान से, नाइलोन ट्युब के लिये दाना अमरीका से आता है। कम्पनी की फरीदाबाद फैक्ट्रियों में मुख्यतः असेम्बली होती है, बना हुआ माल 40-50 वर्कशॉपों से आता है। इम्पीरियल ऑटो की सब फैक्ट्रियों में नब्बे प्रतिशत से ज्यादा मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं। नेता-मन्त्री-अफसरों के नाते-रिश्तेदार ठेकेदार कम्पनियों के कर्ता-धर्ता हैं, यूनियन लीडर भी इम्पीरियल ऑटो को मजूदर सप्लाई करते हैं। मैनेजर लोग मजदूरों पर रौब-धमकाने के लिये पुलिस अधिकारियों से सम्बन्धों का सार्वजनिक प्रदर्शन करते हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड में गड़बड़ी करना इम्पीरियल ऑटो में आम बात है और ओवर टाइम का भुगतान मात्र 15 रुपये प्रति घण्टा है.....

''13/6 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री 2005 में चालू हुई थी। यहाँ एक भी स्थाई मजदूर नहीं है। दस वर्ष से काम कर रहे भी अस्थाई हैं। पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर कार्यरत हैं। यहाँ स्टाफ बहुत है, 150 से ज्यादा लोग हैं और उन में भी अधिकतर को अंगद के रोल पर बताते हैं। सब मजदूरों की तनखा से ई एस आई व पी एफ की राशि काटते हैं पर हर महीने जमा नहीं करते, फण्ड के 2-4-6 महीने के पैसे खा जाते हैं। इस समय महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम है, भुगतान मात्र 15 रुपये प्रति घण्टा – कानून अनुसार 6500 रुपये बनते हैं जबकि देते 1500 हैं, कम्पनी अधिकारी तथा ठेकेदार 5000 रुपये प्रति मजदूर प्रति माह आपस में बाँट रहे हैं। दस वर्ष से चल रही फैक्ट्री में कुछ मजदूरों को वर्दी देते हैं पर उसके 200 रुपये काटते हैं जबकि वह 50-60 रुपये की होती है। हार्ड काम है, दस्ताने एक दिन में ही कट जाते हैं पर हफ्ते में दो बार ही देते हैं और वह भी..... वह दस्ताने भी अन्य फैक्ट्री में इस्तेमाल किये हुये, यहाँ धुलवा कर दे देते हैं, कन्डम दस्तानों के कारण हाथों में छाले पड़ जाते हैं। चर्चा है कि दस्तानों का यह खेल जनरल मैनेजर का है। ए, बी, सी करके 600, 900, 1100 रुपये वार्षिक वेतन वृद्धि की बात है पर 2013 और 2014 में यह वृद्धि कम्पनी ने की ही नहीं – जनवरी 2013 से लगे मजदूरों की तनखा 5813 रुपये ही और बाकी की भी जनवरी 2013 के स्तर पर ही.....

''बिना किसी वेतन वृद्धि के इस वर्ष का मई माह भी निकल रहा था तब मजदूरों ने गूँगी बैठक की। फैक्ट्री में कर्ता-धर्ता मैनेजर बत्रा ने 15 दिन में वेतन वृद्धि की बात कही तब गूँगी बैठक समाप्त हुई।

'' 13/6 मथुरा रोड़ वाली फैक्ट्री में मजदूर गूँगी बैठक करते रहे हैं। गूँगी बैठक आमतौर पर 3 बजे की टी-ब्रेक में होती है। पहले आपस में चर्चायें हो जाती हैं। जब सब का हित होता है तब गूँगी बैठक होती है। हौज कटिंग, असेम्बली, क्वालिटी, टैस्टिंग, पैकिंग, डिस्पैच, लोडिंग, बफिंग, वैल्डिंग, ब्रेजिंग, बैन्डिंग, स्टोर, डेवलेपमेन्ट वाले, यानी, सभी लाइनों के मजदूर आते हैं तभी गूँगी बैठक होती है। चाय 3 रुपये की है, आमतौर पर चाय पीने वाले ही कैन्टीन जाते हैं। जब गूँगी बैठक होती है तब सब मजदूर कैन्टीन पहुँचते हैं। एक सौ महिला मजदूरों और पुरुष मजदूरों की कैन्टीन अगल-बगल में हैं। महिला दिन की शिफ्ट में ही हैं, गूँगी बैठक में महिला मजदूर भी शामिल होती हैं। दस मिनट का टी-ब्रेक समाप्त होने पर महिला और पुरुष मजदूर कैन्टीनों से नहीं निकलते। सवा तीन तक सुपरवाइजर, एच आर मैनेजर, प्रोडक्शन मैनेजर कैन्टीनों में पहुँच जाते हैं। यह साहब पूछते हैं, कहते हैं पर मजदूर उनकी बातों का कोई उत्तर नहीं देते। इन साहबों के लिये मजदूर गूँगे बन जाते हैं। गूँगी बैठक के दौरान मजदूर आपस में खूब बातें करते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, अच्छा-खासा शोर-शराबा होता है ..... और साहबों के लिये स्त्री-पुरुष मजदूर गूँगे बने रहते हैं। कम्पनी के कर्ता-धर्ता अधिकारी के कैंटीन पहुँचने और हस्तक्षेप पर ही मजदूर गूँगी बैठक समाप्त करते हैं।

'' 2013 और 2014 में मजदूर गूँगी बैठक नहीं कर पाये। उस दौरान कुछ तो काम डाउन था और कम्पनी ने कुछ पुराने मजदूर नौकरी से निकाले भी थे। गूँगी बैठक करना ज्यादा आसान भी नहीं है क्योंकि गूँगी बैठक सब मजदूरों के इक्ट्ठा होने से ही होती है। इससे पहले 2012 में हम ने गूँगी बैठक की थी तभी कम्पनी ने 2012 की वार्षिक वेतन वृद्धि की थी। एक गूँगी बैठक तो ओवर टाइम पर हुई थी। मात्र 8 रुपये प्रति घण्टा ओवर टाइम के देते थे तब गूँगी बैठक हुई थी और कम्पनी ने 10 रुपये प्रति घण्टा किये थे।

'' 15 दिन में वेतन वृद्धि 25 दिन बीतने पर भी नहीं हुई। तब मजदूरों ने फिर कदम उठाया। मजदूरों ने 25 जून को ओवर टाइम पर रुकने से इनकार कर दिया। एच आर मैनेजर ने 25-30 मजदूरों को बताया कि अगस्त में पैसे मिलेंगे। और जून के पैसे ? साहब के यह कहने पर कि जून की बजाय जुलाई से पैसे मिलेंगे, मजदूर फैक्ट्री से निकलने लगे तब जनरल मैनेजर ने हस्तक्षेप किया और जून का एरियर देने की बात की।''

अगस्त 2015

गुणा होती प्रवृत्तियाँ

16 *अप्रैल।* सुबह 10 बजे। फैक्ट्री में दूसरे फ्लोर पर काम करते टेलरों ने काम बन्द कर दिया, नीचे उतरे, गार्डों को बाहर किया, और फैक्ट्री का दरवाजा बन्द किया। फैक्ट्री की पावर सप्लाई काट कर चारों मंजिलों पर काम रोक दिया। ***अगस्त*** में बैंक ने एक जूता फैक्ट्री पर ताला लगा कब्जा किया। कम्पनी के चेयरमैन और डायरेक्टर ने 100 वरकरों को ताला तोड़ कर फैक्ट्री में काम शुरू करने को कहा। मजदूरों ने इनकार कर दिया। एक सेक्युरिटी कम्पनी के गार्डों ने **30 *अगस्त*** से कम्पनी के मुख्यालय तथा जहाँ-जहाँ कम्पनी के गार्ड लगे थे – आस्ट्रेलियाई दूतावास, यू एन डी पी, यूनिसेफ और वर्ल्ड बैंक – के सामने धरना-प्रदर्शन किया। **22 *सितम्बर*** को, सुबह 8 बजे, प्लास्टिक इन्जेक्शन मोल्डिंग से वाहनों के पार्ट्स बनाती फैक्ट्री के वरकर फैक्ट्री के बाहर जमा हुये। दो अन्य ऑटो पार्ट्स बनाती फैक्ट्रियों के मजदूरों ने उनका समर्थन किया। एक बजे उन्होंने फैक्ट्री में काम आरम्भ किया। चार दिन बाद फिर काम रोक कर फैक्ट्री के बाहर एकत्र हुये। **23 *जनवरी*** की सुबह समूह में मजदूर एक से दूसरी फैक्ट्री गये। फैक्ट्रियों से मजदूर बाहर आने लगे। डायरेक्टरों के कार्यालयों में भी मजदूर गये और उन्हें बाहर निकलने को कहा। एक के बाद दूसरी फैक्ट्री बन्द होती गई। जब पुलिस आई तो मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर चले गये। पुलिस गई, तो बाहर आ गये।

सही समय पर साधारण-सी हँसी मजबूत से मजबूत किलों में दरारें डाल जाती है।

कई दोस्तों ने कई किस्से सुनाये। ***जनवरी-अन्त*** में पुणे की एक ऑटो फैक्ट्री की चार्जशीट घूम रही थी। उस में मैनेजमेन्ट ने वरकरों पर आरोप लगाये थे कि : ''तुम प्रोडक्शन लाइन पर हँस रहे थे, गा रहे थे, नाच रहे थे; अपनी मर्जी से लाइन पर स्थान बदल रहे थे; जब मन करे उत्पादन रोक रहे थे; और सुपरवाइजरों की सुन नहीं रहे थे। यह यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच हुये समझौते का उल्लंघन है।'' ***मार्च*** में एक और प्रवृति को सराहा जा रहा था : बांग्लादेश में गारमेन्ट वरकर अपनी मर्जी से, कभी भी, और बार-बार प्रोडक्शन रोक देते हैं; कई बार एक साथ पाँच-दस फैक्ट्रियों में कई दिन उत्पादन ठप्प रहता है। कोई लीडर नहीं होते, समझौता-वार्ता के लिये कोई नहीं होता। ***मई*** में सऊदी अरब में निर्माण क्षेत्र से तीन साल बाद लौटे एक मित्र से चाय पर चर्चा में उसने बताया : ''निर्माण स्थल पर हर वक्त खटपटें होती हैं। कभी वरकर और फोरमैन के बीच, तो कभी मैनेजर और इंजीनियर के साथ। अलग-अलग शहरों और देशों से आये मजदूर डोरमेट्रियों में साथ-साथ रहते हैं और खूब बातें होती हैं। कब, कहाँ, क्या हो जायेगा, यह अनिश्चित रहता है। मैनेजरों, इंजीनियरों, पुलिस के दबाव के बावजूद, साल में 6-8 बार, वरकर – कभी कुछ दिन, कभी पूरे महीने – डोरमेट्रियों से निकल काम पर जाने से इनकार कर देते हैं।''

हर किस्से से प्रव त्तियाँ गुणा होती जा रही हैं। जगह-जगह जाते फैक्ट्री-द्रोहियों से जुड़ रहे हैं वे जो फैक्ट्री से निकलने से इनकार कर फैक्ट्री पर से मैनेजमेन्ट का कब्जा ढीला करते रहते हैं। उन से जुड़ जाते हैं शॉप-फ्लोर पर कोलाहल करने वाले। और उन से जुड़ जाते हैं वे जो डोरमेट्रियों से कार्यस्थलों के लिये निकलते ही नहीं। ■

साथी चिन्तामणि

31 जुलाई को सवेरे साथी चिन्तामणि का निधन हो गया।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले की कादीपुर तहसील के गाँव मुस्तफाबाद सरैया में 1948 में साथी चिन्तामणि का जन्म हुआ। बारहवीं तक पढाई की। धर्म परिवर्तन के लिये लालच को ठुकराया। उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि विभाग में कुर्की अमीन के पद पर लगे। नौकरी में वसूली के दौरान जाति के नाम पर अपमान करने वालों की पिटाई की और बदले से बचने के लिये स्थाई नौकरी छोड़ कर रिश्तेदार के पास फरीदाबाद पहुँचे। बाटा, एस्कोर्ट्स, डाबर, गुडईयर आदि-आदि में महीना-दो महीना नौकरी कर गेडोर फैक्ट्री में स्थाई मजदूर बने। नौकरी के संग-संग जाति की राजनिति की अम्बेडकरवादी धारा में सक्रिय रहे। पड़ोसी गाँव बबरीपुर के साथी विजय शंकर से लम्बी चर्चाओं ने मजदूर बनने, मजदूर होने की नई वास्तविकता पर साथी चिन्तामणि की मजबूत पकड़ बनाई।

1977 में फरीदाबाद में बहुत तीव्र हुई मजदूर हलचलों में साथी चिन्तामणि बहुत क्रियाशील रहे। उन्होंने उषा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल तथा भारतीय इलेक्ट्रिक स्टील फैक्ट्रियों के जुझारू मजदूरों को विशेष सहयोग दिया। अस्सी यूनियनें छोड़ कर आये लोगों द्वारा बनाई मजदूर संघर्ष समिति में साथी चिन्तामणि भी थे। फरीदाबाद में 1979 में पुलिस फायरिंग में कई मजदूर मारे गये। दिल्ली फरीदाबाद टैक्सटाइल फैक्ट्री में आन्तरिक आपातकाल के बाद 1977 में हड़ताल में भूमिका के लिये साथी विजय शंकर नौकरी से निकाले गये। आजाद नगर झुग्गियों और मुजेसर में साथी विजय शंकर के साथ कार्ल मार्क्स की पुस्तक ''पूंजी'' के सामुहिक अध्ययन में बाटा, गेडोर, पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर, बिजली बोर्ड, हाण्डा स्टील, ईस्ट इंडिया कॉटन मिल, ओरियन्ट स्टील, लैदराइट आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ साथी चिन्तामणि शामिल रहे।

1982 में फरीदाबाद मजदूर समाचार का प्रकाशन आरम्भ हुआ। अति सक्रिय मजदूरों की उस टोली में साथी चिन्तामणि शामिल थे जिनमें हर एक मजदूर समाचार की अन्य गतिविधियों में भाग लेने के संग-संग प्रति माह 25 रुपये और वार्षिक बोनस के समय 100 रुपये का योगदान देते थे। गेडोर फैक्ट्री में अन्य साथियों के संग साथी चिन्तामणि प्रतिदिन की गतिविधियों में क्रियाशील थे। यूनियन ने कम्पनी की मजदूरों की छँटनी करने की योजना में सक्रिय सहयोग दिया तब विरोध करने वालों में साथी चिन्तामणि थे और पिटाई झेली। अन्य हथकण्डों से पार नहीं पड़ी तब पुलिस की छत्रछाया में यूनियन और मैनेजमेन्ट ने प्लान्टों के अन्दर तथा ड्युटी आते-जाते मजदूरों से साल-भर मारपीट कर 1500 मजदूरों को नौकरी से निकाला। लड़ाकू यूनियन की छवि वाली सीटू फरीदाबाद में मर गई। ढाई वर्ष की अति सक्रियता के दौरान फैक्ट्रियों में मजदूरों के अनुभवों, विचारों, कदमों ने मजदूर समाचार के लेनिनवादी आधार को तहस-नहस कर दिया। मई 1984 के बाद प्रकाशन रोक दिया।

1986 में मजदूर समाचार की नई सीरीज का प्रकाशन आरम्भ हुआ। गेडोर फैक्ट्री में साथी चिन्तामणि बने रहे थे और कम्पनी द्वारा कई-कई महीने वेतन नहीं देने के दौरान खर्च चलाने के लिये रेहड़ी पर घूम-घूम कर कप-प्याली बेचे। मजदूर समाचार की एक-दो हजार प्रतियाँ प्रतिमाह का सिलसिला दिसम्बर 1993 में 5000 प्रतियिाँ प्रकाशित करने के संग टूटा। फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में मजदूरों की नये सिरे से बढती हलचलें 1992-2000 के दौरान हुये बड़े और बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तनों का दूसरा पहलू थी। साथी चिन्तामणि की क्रियाशीलता भी बहुत बढी।

गेडोर-झालानी टूल्स कम्पनी में इस दौरान चीजें और भी अति में गई। प्लान्टों के अन्दर मारपीट, आधी-अधूरी तनखा, आठ महीनों की तनखायें बकाया, रंग-बिरेंगे नेताओं को मजदूरों ने नकार दिया तब नियन्त्रण के लिये झटके में एकमुश्त जिन 100 मजदूरों को 1996 में नौकरी से निकाला गया उनमें साथी चिन्तामणि भी थे। गेडोर-झालानी टूल्स के मजदूरों की टोलियों ने जिला प्रशासन की नाक में दम किया और राज्य तथा केन्द्र सरकार के हर स्तर पर दस्तक दी लेकिन बकाया तनखायें बढती रही। दिल्ली में एक मित्र के संग साथी चिन्तामणि ने सुप्रीम कोर्ट के एक सीनियर एडवोकेट से राय ली तो उन्होंने कहा कि कम्पनी अगर तनखा नहीं दे तो कानूनी तरीकों से मजदूर तनखा नहीं प्राप्त कर सकते। यह एक फैक्ट्री के मजदूरों द्वारा गत्तों पर अपनी बातें लिख कर हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों के बीच जाने का प्रस्थान-बिन्दू बना।

गेडोर-झालानी टूल्स फैक्ट्रियों में 14 महीनों की तनखायें बकाया हो गई तब 15-20 की टोलियों में मजदूर गत्तों पर अपनी बातें लिख कर शिफ्ट-आरम्भ तथा शिफ्ट-छूटने के समय उन सड़कों पर खड़े होने लगे जहाँ से बड़ी सँख्या में मजदूर गुजरते हैं। करीब एक किलोमीटर तक एक के बाद दूसरे मजदूर द्वारा थामे गत्ते पढते जाते मजदूरों ने एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला बना दिया। साथी

चिन्तामणि की इस में सक्रिय भूमिका थी। सड़कें बदलते और प्रतिदिन गत्ते थामे मजदूर फरीदाबाद में मजदूर-पक्ष को आकार देने लगे। सरकार हलचल में आई और चण्डीगढ में मीटिंगें कर तनखायें देने का सिलसिला आरम्भ करवाया तथा मजदूरों को नाथने के लिये नये सिरे से लीडर स्थापित करने की कसरतें की गई। अन्य साथियों के साथ साथी चिन्तामणि ने इन कसरतों को फेल कर दिया। गेडोर-झालानी टूल्स कम्पनी की 6 फैक्ट्रियाँ (तीन फरीदाबाद में और एक-एक कुण्डली, औरंगाबाद, जालना में) बन्द। मजदूरों के बीच तालमेल के लिये साथी चिन्तामणि महाराष्ट्र में जालना और औरंगाबाद गये।

कम्पनियाँ बन्द होने की स्थिति में बिचौलियों द्वारा एक ढर्रा स्थापित है। कानूनों के अनुसार मजदूरों का जो बनता है उसके दसवें हिस्से पर यूनियनें समझौता कर लेती हैं। गेडोर-झालानी टूल्स में अन्य साथियों के साथ साथी चिन्तामणि ने यह सिलसिला तोड़ दिया। अकेले-अकेले मजदूर की असहायता को भुनाते यूनियन नेताओं के खिलाफ सैंकड़ों मजदूरों ने बिना किन्ही प्रतिनिधियों अथवा नेताओं के, मिल कर कदम उठाये। हाई कोर्ट में वर्षों के लटकों-झटकों के बाद यूनियन लीडरों के फेर में रहे गेडोर-झालानी टूल्स मजदूरों को जहाँ 15 वर्ष बाद यूनियन द्वारा समझौते के तहत 15-25-30-40 हजार रुपये मिले (और इन पैसों के लिये यूनियन ने पाँच हजार रुपये पहले लिये) वहाँ मिल कर कदम उठाने वाले मजदूरों को डेढ-दो-ढाई-तीन लाख रुपये तय हुये और साथी चिन्तामणि इन मजदूरों में हैं।

1993 से 5000 प्रतियाँ प्रतिमाह फरीदाबाद में 12-14 स्थानों पर वितरण में साथी चिन्तामणि हर स्थान पर रहे हैं। सात हजार प्रतियाँ 2007 से छपने लगी तब फरीदाबाद के अलावा जब-तब साथी चिन्तामणि ओखला (दिल्ली) और उद्योग विहार (गुड़गाँव) भी पहुँचे। आई एम टी मानेसर के संग 8000, फिर 10,000, फिर 12,000 प्रतियों के वितरण में साथी चिन्तामणि सक्रिय रहे। कई फैक्ट्रियों के कई मजदूरों की बातें साथी चिन्तामणि के माध्यम से मजदूर समाचार में छपी हैं।

इमरजैन्सी के दौरान 1976 में सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर झुग्गियाँ तोड़े जाने पर साथी चिन्तामणि झाड़सेंतली गाँव के पार बापू नगर में रहने लगे थे। ड्युटी के लिये रोज आठ किलोमीटर साइकिल से आना और आठ किलोमीटर वापस जाना के संग-संग सड़क पर मजदूर समाचार का वितरण करना तथा इस-उस फैक्ट्री के मजदूरों से यहाँ-वहाँ मिलने जाना साथी चिन्तामणि की दिनचर्या रही। बापू नगर से संजय कॉलोनी शिफ्ट करने के बाद मिलने-बात करने के लिये उन्होंने और ज्यादा साइकिल दौड़ाई। जुलाई 2013 से साथी चिन्तामणि का तन सड़क पर ढाई घण्टे खड़े हो कर मजदूर समाचार बाँटने में असमर्थ हो गया। लेकिन साथी चिन्तामणि ने साइकिल चलानी नहीं छोड़ी। आधा घण्टा साइकिल चला कर मजदूर लाइब्रेरी आना, चीजों को व्यवस्थित करना और 13,000 प्रतियों को 50-50 में गिन कर वितरण के लिये तैयार करना साथी चिन्तामणि का अभिन्न अंग बना। हर महीने डाक से 800 प्रतियाँ भेजने के लिये छाँटने, फोल्ड करने, पता चिपकाने, टिकट लगाने का कार्य साथी चिन्तामणि हर महीने, नियमित तौर पर, मृत्यु से पहले तक करते रहे।

साथी चिन्तामणि मजदूर समाचार का अभिन्न अंग हैं। साथी चिन्तामणि ने जीवन को पूरी क्षमता के साथ भरपूर जिया है। पिछले पाँच वर्ष की युवा वरकरों की हलचलों ने उन्हें अन्त तक जीवंत बनाये रखा। हम कह सकते हैं कि अन्तिम समय तक उनकी साँस उभरते समय के साथ चली।

रस्किन टाइटस मजदूर : ''प्लॉट 25-26 सैक्टर-2, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री नवम्बर 2013 में ग्रेटर नोएडा से यहाँ शिफ्ट की तब कम्पनी ने कहा था कि अप्रैल 2014 में 5000 रुपये बढायेंगे, नोएडा से बस लगायेंगे तथा बाकी नोएडा वाली बातें जारी रहेंगी। कम्पनी ने 1000-1000 करके दो किस्तों में मात्र 2000 रुपये बढाये और बस बन्द कर दी। नोएडा में 1000-1200 प्रतिमाह इन्सेन्टिव मिलता था वह बन्द कर दिया। नोएडा में सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करवाते तब सिंगल रेट से ही सही पर 12 घण्टे का ओवर टाइम देते थे और भोजन भी। यहाँ सुबह 9 ½ से रात सवा बजे तक रोकते तब 7 घण्टे का ही ओवर टाइम सिंगल रेट से देने लगे और भोजन देना बन्द कर दिया। मजदूरों ने बार-बार बातें उठाई और कम्पनी ने आश्वासनों में, होगा-होगा में पूरा 2014 वर्ष निकाल दिया।

''रस्किन टाइटस मैनेजमेन्ट ने अप्रैल 2015 में भी वेतन वृद्धि नहीं की। पच्चीस वर्ष सर्विस वाले मजदूरों की तनखा 13,000 रुपये। हलचलें बढने पर 24 मई को मैनेजमेन्ट ने दो वरकरों के बेंगलुरू ट्रान्सफर का आदेश जारी किया। नहीं गये। फैक्ट्री के अन्दर स्थाई तथा अस्थाई मजदूरों की हलचलें और तेज हुई। सब मजदूर 28 मई को सुबह 10 बजे कैन्टीन में बैठ गये। फैक्ट्री से बाहर किये गये। एक यूनियन का हस्तक्षेप। श्रम विभाग में 5 जून को समझौता, 6 को सब फैक्ट्री के अन्दर गये, दो को एक-दो दिन में लेने की बात। नहीं लिये और 2 जुलाई को कम्पनी ने 2 का हैदराबाद तथा 2 का मुंबई ट्रान्सफर का आदेश दिया। श्रम विभाग गये। कम्पनी ने 3 जुलाई को 8 को नौकरी से बरखास्त कर दिया। फैक्ट्री में 9 स्थाई मजदूर रह गये और वे भी 13 जुलाई को बाहर आ गये। ठेकेदारों के जरिये रखे कुछ मजदूर एकजुटता में 16 जुलाई को बाहर आ गये। श्रम विभाग में तारीख पर

(शेष पृष्ठ 31 पर)

रौद्र रूप में

19 जुलाई के पंजाब केसरी के फरीदाबाद-पलवल केसरी पृष्ठ में शीषर्क : '' श्रमिकों को निकालने के विरोध, कम्पनी पर पथराव'' । उसी दिन के हिन्दुस्तान के फरीदाबाद लाइव के प्रथम पृष्ठ का एक शीषर्क : '' कर्मचारियों ने किया पथराव, कई वाहनों को तोड़ा ।''

14 मील पत्थर, मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित ध्रुव ग्लोबल फैक्ट्री में 2000 स्त्री तथा पुरुष मजदूर पोलो राल्फ लोरेन, पी वी एच, नेक्स्ट, वॉल मार्ट के लिये सिलेसिलाये वस्त्र तैयार करते हैं । फैक्ट्री पर अपना कब्जा बनाये रखने के लिये मैनेजमेन्ट ने 16 जुलाई को दो मजदूरों को नौकरी से निकाला । शुक्रवार, 17 जुलाई को मजदूरों ने फैक्ट्री में काम बन्द रखा । ढीले होते कब्जे को सम्भालने के लिये शनिवार सुबह से ही कम्पनी ने फैक्ट्री पर पुलिस तैनात करवाई । बाउन्सरों के जरिये सुबह 9 बजे मजदूरों के फैक्ट्री में प्रवेश को मैनेजमेन्ट रोकने लगी : '' पहले हस्ताक्षर करो ।''

स्त्री तथा पुरुष मजदूरों ने डायरेक्टर की एल्टिस गाड़ी समेत कम्पनी अधिकारियों की गाड़ियों पर पत्थरों से हस्ताक्षर किये । पत्थरों की चपेट में बाउन्सर-गार्ड और दो पुलिस वाले भी आये । कई थानों की पुलिस ध्रुव ग्लोबल फैक्ट्री बुलाई गई । आस-पास के इलाके पर कब्जा करने के लिये पुलिस ने ध्रुव ग्लोबल के स्त्री व पुरुष मजदूरों पर लाठियाँ चलाई । छह मजदूर घायल हुये । पुलिस ने 25 मजदूरों को गिरफ्तार किया । घबराई मैनेजमेन्ट पीछे हटी, नौकरी से निकाले दो मजदूरों को सोमवार, 20 जुलाई को ड्युटी पर लेने और गिरफ्तार मजदूरों पर से केस वापस लेने की बात ।

भोले की फौज

शिवालिक प्रिन्ट्स लिमिटेड मजूदर : ''प्लॉट 231-232,सैक्टर-58, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 29 जुलाई को 1000 मजदूर सुबह 9 ½ बजे से गर्म पैन्ट बना रहे थे । कटिंग, सिलाई, सिलाई में मेजरमेन्ट तथा क्वालिटी चैकिंग, फिनिशिंग में धागा कटिंग, स्पॉटिंग, इनिशियल चैकिंग तथा पुनः मेजरमेन्ट चैकिंग, फाइनल चैकिंग, प्रेसिंग, हाफ फोल्ड, फुल फोल्ड, पन्नी पैकिंग, कारटन पैकिंग का सिलसिला जारी था । साँय 4 ½ बजे पन्नी पैकिंग से आवाज आई, 'पैन्ट का एक पैर बड़ा और एक पैर छोटा है !' क्वालिटी वाले भागे आये । पन्नी पैक किया माल खोल कर जाँचना शुरू किया । पाँच पैन्ट-दस पैन्ट-.... पचास पैन्ट में एक पैर बड़ा और एक पैर छोटा मिला । सब पैन्ट निर्यात के लिये थी । फोन । क्वालिटी मैनेजर दौड़ता आया । साहब ने फिनिशिंग में रखे 10 डिब्बे खुलवाये । एक डिब्बे में 4-5-6 गर्म पैन्ट और हर डिब्बे में 1-2-4 पैन्ट का एक पैर छोटा, एक पैर बड़ा मिला । चकराया साहब बायर हाउस (गोदाम) में पहुँचा जहाँ कन्टेनर में रखने के लिये पैन्टों से भरे डिब्बे रखे थे । कुछ डिब्बे खुलवाये..... एक पैर बड़ा और एक पैर छोटा वाली पैन्टें 600 हो गई तो साहब ने डिब्बे खुलवाना बन्द कर दिया । गड़बड़ी वाली पैन्टों को सिलाई-विलाई में नहीं भेजा । अगले दिन 30 जुलाई को उन 600 पैन्टों को पन्नी पैक करवा कर डिब्बों में भरा और शिपमेन्ट के लिये डिब्बे कन्टेनर में लाद दिये ।

'' कल, 1 अगस्त को सुबह 9 ½ से एच एण्ड एम बायर की टी-शर्ट चल रही थी । एक फोल्डर ने 11 ½ बजे टी-शर्टों में उँगली साइज के छेद पाये.... 20 में से 7 में छेद मिले तो क्वालिटी वालों ने पूरे लॉट को, 500 टी-शर्ट को वापस फिनिशिंग में चैकिंग के लिये भेज दिया ।

ऑफ सीजन में :

''शिवालिक प्रिन्ट्स फैक्ट्री में अन्दर जाने के समय निर्धारित हैं पर बाहर निकलने का समय शिपमेन्ट तय करती है – रात 8, रात 1, अगली सुबह 4 बजे । प्रोडक्शन टेलर पीस रेट पर हैं और सब को ठेकेदारों के खाते में रखा है । सैम्पलिंग, फिनिशिंग, पैकिंग वरकर कम्पनी के स्वयं के खाते में हैं । दो सौ मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में भी हैं पर सुबह 7 काम आरम्भ करने वालों को साँय 7 बजे रविवार को ही छोड़ते हैं, बाकी के 6 दिन आमतौर पर रात 1 बजे छोड़ते हैं, पर अगली सुबह 4 बजे तक भी रोक लेते हैं । महीने में 250-260-270 घण्टे ओवर टाइम काम, भुगतान सिंगल रेट से । और अभी तो ऑफ सीजन है, कम्पनी कहती है कि काम ही नहीं है । सीजन अगस्त से आरम्भ होगा..... यहाँ एच एण्ड एम, सीयर्स, जे सी पैनी का माल तैयार होता है । बायरों के प्रतिनिधि आते रहते हैं, कम्पनी पढाती है : 'कहना 8 घण्टे की ड्युटी है, ओवर टाइम महीने में 12-13 घण्टे तथा भुगतान दुगुनी दर से बताना !' मैनेजरों की 9 घण्टे और सुपरवाइजरों की 10 तथा 15 ½ घण्टे की ड्युटी हैं । एम्बुलैन्स नहीं है, बीमार होने पर साइकिल पर साथी मजदूर ले जाते हैं । फैक्ट्री में 16 से 21 घण्टे रोकते हैं तब कम्पनी रोटी के लिये 15 रुपये देती है.....''■

(पृष्ठ 30 का शेष)

तारीख । न्यायालय ने 200 मीटर दूर का आदेश दिया और इधर मैनेजमेन्ट ने पुलिस के साथ दूरी नाप कर रॉकलैण्ड अस्पताल के पास किसी फैक्ट्री के सामने बैठने का स्थान दिखाया है । फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट में उत्पादन जारी है । कम्पनी, श्रम विभाग, पुलिस, और यूनियन थकाने की राह पर मजदूरों को धकेल रहे हैं ।''

सितम्बर 2015

समय है आकार और गति देने का

कागजों की भूलभुलैया ने मुझ, रामसागर को कुछ समझाया है। मैं और मेरे साथ काम करते हजारों अन्य साथी तीस साल तक समझते थे कि हम एक कपड़ा मिल के मजदूर हैं। नौकरी से निकाले जाने के बाद 1992 में मैंने श्रम न्यायालय में केस दायर किया। कुछ परतें खुली। कागजों में एक की बजाय कई कम्पनियाँ उजागर होने लगी। सात साल बाद, 1999 में लेबर कोर्ट ने मेरे पक्ष में फैसला सुनाया। अदालत के फैसले का पालन करने कोई नहीं आया। दो वर्ष बीत गये, पाँच वर्ष बीत गये, 2005 आ गया तब तक पता चल चुका था कि एक नहीं बल्कि 17 कम्पनियाँ हैं जिन्हें एक कपड़ा मिल कहा जाता है। समन जाते रहे, वारन्ट जारी होते रहे। कपड़ा मिल के मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा कि उसका इससे कोई लेना-देना नहीं है, रामसागर तो दूसरी कम्पनी में है। हमें समझ में आया है कि फैक्ट्री किसी की नहीं होती, फैक्ट्री का कोई मालिक नहीं है। दस्तावेजों में नाम बदलते रहते हैं, बढते रहते हैं।

मालिकाना एक नकाब है, एक आवरण है और मालिक कोई नहीं है।

जुलाई 2012 तक ही अस्पतालों के लिये उपकरण बनाने वाली कम्पनी की मैनेजमेन्ट कम्पनी की पाँच फैक्ट्रियों से कई महीनों से लापता थी। ऐसी कई फैक्ट्रियाँ हैं जिनमें मैनेजमेन्ट गायब है अथवा नाममात्र की है। मैटल फैब्रिकेशन फैक्ट्री में अब हम नारे नहीं लगाते, मैनेजरों से विवाद नहीं करते, हम अपने तीन टी-ब्रेक के दस-दस मिनट को आधा-आधा घण्टा कर रहे हैं। सुपरवाइजर और मैनेजर इधर-उधर भटकते रहते हैं और हम से दूरी रखते हैं। नवम्बर 2012 में जूते बनाने वाली एक फैक्ट्री में 400 महिला और 400 पुरुष मजदूरो ने मैनेजिंग डायरेक्टर को घेर लिया। पुलिस बुलाई गई, कई घण्टों की जद्दोजहद के बाद 200 पुलिसवालों ने पानी की तोपों और लाठियों की मदद से रात 9 बजे मैनेजिंग डायरेक्टर को मजदूरों के घेरे से निकाला।

अगर कभी कहीं कोई सहमति थी भी तो वह टूट चुकी है। यह ज्ञापन का, आवेदन का दौर नहीं है। यह समय सक्रिय प्रेरक उत्तेजनाओं को, ऊजाओं को आकार और गति देने का है।

नवम्बर 2014 में एक इलेक्ट्रोनिक ऑटो पार्ट्स फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम सब मजदूर सुबह 6 बजे फैक्ट्री पहुँचे। पुलिस, बाउन्सरों, ठेकेदारों, और मैनेजरों ने हमें फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। फैक्ट्री गेट से 150 मीटर दूर हम ने तम्बू लगाया। न्यायालय का ऐसा आदेश था। विभिन्न प्रकार के नेता हमारे पास पहुँचे। हम ने सब को मंच दिया पर इस शर्त के साथ कि हम सुनेंगे सब की पर करेंगे अपनी।

एक लीडर मंच से बोला कि हम उसके संगठन से जुड़ें। वह हमारी लड़ाई लड़ेगा। हम ने उन्हें समझाया कि आपके आने का स्वागत है पर हम ने जाना है और समझा है उस काण्ड को जो आपने दूसरी फैक्ट्री में किया है। इसलिये नमस्ते। और एक नेता बहक गये और सरकार द्वारा लाये जा रहे नये कानूनों का भय दिखाने लगे। उनकी आयु का लिहाज करके हम ने आदर से उन्हें कहा कि आज जो कानून हैं उनका तो कोई नामलेवा है ही नहीं, आगे आने वाले कानूनों की आड़ में आज के कदमों को क्यों टालें।

मंच पर कौन बोले इस पर चर्चा होती रहती है। एक ग्रुप का जब बोलने लगा तब दूसरे ग्रुप के बोले कि इसे मंच से नहीं बोलने दिया जाये। हम ने इसका तीखा विरोध किया और कहा कि यह मंच ठेकेदारों के जरिये रखे गये हम मजदूरों का है, कौन बोले और कौन नहीं बोले यह हम तय करेंगे। सुनते हैं हम सब की और करते हैं अपनी सोच-समझ के अनुसार।

हमारा विरोध लम्बा खिंचता गया। मार्च 2015 तक हम ने तय किया और हम औद्योगिक क्षेत्र की अलग-अलग फैक्ट्रियों में लग गये, फैल गये। हम ने अपने बीच सक्रिय तालमेल बना कर रखे हैं। हम अपने फैले हुये कार्यस्थलों पर आदान-प्रदान, विचार-विमर्श जारी रखेंगे और बिचौलियों को, नेताओं को हमारे रिश्तों के बीच नहीं आने देंगे। ***हम अकेले-अकेले भी, छोटी टोलियों में भी और बड़ो समूहों में भी नई सोच तथा नये कदमों के वाहक भी हैं और प्रस्थान-बिन्दू भी हैं।*** ■

असंगत बन गये हैं कानून

थीम एक्सपोर्ट मजदूर : '' डी-5 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में हर महीने मजदूर काम बन्द करते हैं और उत्पादन रुके एक घण्टा हो जाता है तब तनखा देते हैं, हर महीने देरी से देते हैं। यहाँ स्टाफ के 100 लोग शायद स्थाई होंगे, ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे हैं सब 1000 मजदूर। सुबह 9½ से रात 8½ तक रोज काम और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी किसी मजदूर को नहीं देते – हैल्परों की तनखा 6500 रुपये और सिलाई कारीगरों की 9-9½ हजार रुपये।''

सिग्मा मोल्ड एण्ड स्टैम्पिंग श्रमिक : '' 149-150 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मारुति सुजुकी वाहनों की सील, वारसल, लॉक तथा छोटे पार्ट्स बनाते हैं। शीट मैटल का काम है, चोटें लगती रहती हैं। पर इधर रक्षाबन्धन के दिन, 29 अगस्त को मैनेजमेन्ट ने 4 मजदूरों को केबल ट्रे पर चढा दिया। इन में शाहिद भी था जो ट्रीटमेन्ट प्लान्ट में काम करता था। यह शाहिद का काम नहीं था पर साहबों ने जबरन केबल ट्रे पर चढा दिया। तीस फुट ऊपर से शाहिद गिरा। लोहे के एंगल से सिर लगा। ई एस आई अस्पताल ने पार्क अस्पताल रेफर कर दिया। शाहिद को 1 सितम्बर को जा कर होश आया।''

वमानी ओवरसीज कामगार : '' प्लॉट 137 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 1200 मजदूर सुबह 9 से रात 8½ तक रोज काम करते हैं और फिर पुरुष मजदूरों को रात 12½ बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को सुबह 9 से साँय 5½ तक काम। महीने में 125 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। कैंटीन नहीं है, भोजन करने के लिये स्थान नहीं है, कार्यस्थल पर बैठ कर खाना खाते हैं। रात 8½ बाद रोकते हैं तब 30 रुपये भोजन के लिये देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 600 टेलर पीस रेट पर काम करते हैं और कम्पनी रोल पर 250 सिलाई कारीगरों की तनखा 6200-7000 रुपये। बायर आते हैं तब सफाई बहुत और कम्पनी पढाती है : कहना कि साँय 5½ छूट जाते हैं, रविवार को छुट्टी रहती है, नाइट नहीं लगती।''

विनय ऑटो वरकर : '' प्लॉट 43 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 10 स्थाई मजदूर और सात ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1500 मजदूर सुबह 9 से साँय साढे सात, रात 9, रात 2 बजे तक 9 लाइनों पर काम करते हैं। मोल्डिंग विभाग में रात में भी काम। लाइनों के नाम हैं : जे एन एस लाइन, ब्राजील लाइन, जय उशिन लाइन, डैन्सो लाइन, प्रिकोल लाइन, सुमन ऑटो लाइन, डोंगियोन लाइन, भगवती ऑटो लाइन, मिन्डा लाइन। हैल्पर, ऑपरेटर, आई टी आई सब की तनखा 5813 रुपये, ओवर टाइम 23 रुपये प्रतिघण्टा। गुटका पर 100 रुपये और मोबाईल पर 200 रुपये जुर्माना। तनखा 7 से 20 तारीख तक। तनखा में देरी पर ज्यादा मजदूर एच आर विभाग जाते हैं तो झूठा आश्वासन और कम मजदूर गये तो भगा देते हैं। छोड़ने पर कारण लिखो, ठेकेदार के, एच आर अधिकारी के, लाइन सुपरवाइजर के हस्ताक्षर करवाओ तब हिसाब मिलेगा। तीनों दस्तखत करते नहीं, ऐसे में छोड़ने पर या तो तनखा मारी जाती है या ओवर टाइम मारा जाता है। तीन ठेकेदार कम्पनियाँ पे-स्लिप देती हैं पर चार नहीं देती और इन चार ठेकेदार कम्पनियों के मजदूरों को ई एस आई कार्ड नहीं तथा नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। दीपावली से 10-15 दिन पहले आधे मजदूरों को निकाल देते हैं और दीवाली बाद न्यू ज्वाइनिंग। बोनस में मात्र 500 रुपये देते हैं।''

सोपान ओवरसीज कामगार : '' बी-314 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है और रात दो बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी सुबह 9 से रात 9 तक काम करना। साप्ताहिक अवकाश नहीं। कम्पनी 12 घण्टे प्रतिदिन और महीने के 30-31 दिन काम को सामान्य कार्य लेती है। इस दौरान के लिये कोई ओवर टाइम नहीं। जब 12 घण्टे बाद रोकते हैं तब उसे ओवर टाइम कहते हैं और ऐसा समय भी महीने में 50-60 घण्टे हो जाता है – इनके लिये भी मात्र 17,18, 20 रुपये प्रतिघण्टा भुगतान। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30-31 दिन के 8500-9500 रुपये और आल्टर टेलर को 9500-10000 रुपये। प्रोडक्शन टेलर पीस रेट पर। ई एस आई व पी एफ 100 की ही हैं।''

प्रिकोल श्रमिक : '' सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर में मुंजाल किरियु के सामने स्थित फैक्ट्री में 20-25 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 4500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो और 8-8 घण्टे की तीन शिफ्टों में वाहनों के मीटर, ऑयल पम्प, डैन्सो के लिये पार्ट्स, सोनालिका ट्रैक्टर की बॉडी बनाते हैं। नियम है कि फैक्ट्री में काम करत दस साल हो जायेंगे तब स्थाई कर देंगे पर दस साल होने ही नहीं देते हैं। हैल्परों की, ऑपरेटरों की तनखा 6500 रुपये और ओवर टाइम 32 रुपये प्रतिघण्टा। हाजिरी तीन जगह लगती है पर नौकरी छोड़ने पर दस-बीस दिन के पैसे नहीं देते और एच आर वाले कहते हैं ठेकेदार से बात करो।''

कुछ मोटी बातें

कम्पनियों के बही-खाते, कम्पनियों की बैलैन्सशीटें जो आसानी से उपलब्ध हैं उन में से कई की जाँच-परख सहज ही कुछ बातें उभारती है।

स्त्री मजदूर हो चाहे पुरुष मजदूर, फैक्ट्री में एक महीने काम के दौरान बीस लाख रुपये के बराबर औसतन एक मजदूर का उत्पादन रहता है।

दिल्ली के आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों की तनखा पाँच हजार से पचास हजार रुपये है। प्रतिशत में बात करें तो, अधिकतर मजदूरों को जो वे पैदा करते हैं उसका एक फीसदी भी नहीं मिलता, एक परसैन्ट का चौथाई से आधा भाग मिलता है। जिन फैक्ट्री मजदूरों को चालीस-पचास-साठ हजार रुपये वेतन मिलता है उन्हें भी जो वे पैदा करते हैं उसका दो-ढाई प्रतिशत ही मिलता है।

फैक्ट्रियों में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका आधे से ज्यादा हिस्सा सरकारें टैक्सों के रूप में लेती हैं। सरकारें जो लेती हैं उसका अच्छा-खासा हिस्सा पुलिस, फौज, जेल, न्यायालय, शासन-प्रशासन पर खर्च होता है। टैक्सों द्वारा एकत्र किये पैसों में से एक हिस्सा सड़क, विद्यालय, अस्पताल पर खर्च किया जाता है। टैक्सों द्वारा वसूले धन का एक अंश सरकारें यह-वह कम कीमत पर देने में व्यय करती हैं। नेता और अफसर वह होते हैं जो एक सौ रुपये ले कर पाँच रुपये लौटाते हैं और कहते हैं कि हम ने तुम्हें पाँच रुपये दिये हैं।

कम्पनी-फैक्ट्री की स्थापना-संचालन के लिये जो लागत आती है उसका अस्सी प्रतिशत बैंक-बीमा-वित्त संस्थाओं से कर्ज के रूप में आता है। जमीन, बिल्डिंग, मशीनें गिरवी रखी होती हैं। फैक्ट्रियों में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका दस-पन्द्रह प्रतिशत कर्ज पर ब्याज चुकाने में खपता है। जमा पर बैंक पाँच-सात प्रतिशत ब्याज देते हैं और कर्ज पर बैंक पन्द्रह-बीस प्रतिशत ब्याज लेते हैं।

कम्पनी-फैक्ट्री की स्थापना-संचालन की लागत का पन्द्रह प्रतिशत लाखों शेयरों के जरिये एकत्र किया जाता है। कुछ संस्थाओं के पास थोक में और हजारों लोगों के पास फुटकर में यह शेयर होते हैं। फैक्ट्रियों में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका आठ-दस प्रतिशत हिस्सा शेयरों पर डिविडेन्ड देने में जाते हैं। शेयर मार्केट, सट्टा बाजार में शेयरों की खरीद-बिक्री चलती रहती है। एक रुपये, पाँच रुपये, दस रुपये के शेयर का भाव 80 रुपये, 400 रुपये, 900 रुपये और जब-तब शून्य के दायरे में। मारुति सुजुकी कम्पनी के पाँच रुपये के एक शेयर पर 2010 वर्ष में 79 रुपये 20 पैसे डिविडेन्ड में दिये गये।

फैक्ट्रियों में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका पाँच-सात प्रतिशत हिस्सा कम्पनी के विस्तार में खर्च होता है। एक फैक्ट्री से तीन फैक्ट्री, पाँच फैक्ट्री, सात फैक्ट्री बनती हैं।

कर्ज देने वाले, शेयर होल्डर, और सरकार कम्पनी-फैक्ट्री के संचालन के लिये बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स का गठन करते हैं। यह बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स संचालन की जिम्मेदारी सौंपता है चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-एग्जेक्युटिव डायरेक्टर-सी ई ओ-प्रेसीडेन्ट-वाइस प्रेसीडेन्ट को। मैनेजिंग डायरेक्टर-प्रेसीडेन्ट कम्पनी-फैक्ट्री के दैनिक संचालन की जिम्मेदारी जनरल मैनेजर-मैनेजर-सुपरवाइजर को सौंपते हैं। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स से सुपरवाइजर तक को मिला कर मैनेजमेन्ट बनती है। फैक्ट्रियों में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका दो-तीन प्रतिशत मैनेजमेन्ट के वेतन-भत्तों में खर्च होता है। और, फैक्ट्रियों में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका दस-पन्द्रह प्रतिशत मैनेजमेन्ट के लोग चोरी से लेते हैं। कम्पनी से मैनेजमेन्ट चोरी करती है – नीचे से ऊपर जाते समय चोरी बढती जाती है, सबसे अधिक चोरी चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-सी ई ओ करते हैं।■

एक गार्ड की रोचक बातें

हड़ताल करने पर नौकरी से निकाल दिये जाने के बाद मैंने इधर- उधर यह-वह काम किया। फिर मैं गार्ड की नौकरी करने लगा। बहुत सेक्युरिटी कम्पनियाँ हैं जो गार्ड सप्लाई का काम करती हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी, साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के 30-31 दिन ड्युटी करना गार्डों के लिये आम बात है। दिन और रात में 12 घण्टे ड्युटी, रिलीवर नहीं पहुँचे तो 36 घण्टे लगातार ड्युटी। वेतन बहुत कम और नियम-कानून का पहाड़ रहता है गार्ड के सिर पर। जहाँ लगते हैं वहाँ बड़े से बड़ा साहब गार्ड से कहता है कि सब की तलाशी लिया करो, चपरासी से बड़े साहब तक सब नियमों के सम्मुख बराबर हैं, जो माल फैक्ट्री में आये और जो माल फैक्ट्री से जाये उसे चालान में, रजिस्टर में सही-सही दर्ज करना, पूरी ईमानदारी से काम करना। कथनी में क्या-क्या बातें और करनी कैसी-कैसी, जो मैंने गार्ड रहते भुगती हैं उसके कुछ उदाहरण देखिये।

बात जून 2012 की है। गाजियाबाद, गुड़गाँव, पंजाब, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों से प्लास्टिक कोटिंग के लिये माल फैक्ट्री

में आता था। क्वालिटी पर ज्यादा जोर देने वाली एक पार्टी का निर्देश था कि उनके माल की कोटिंग एयर कन्डीशन्ड् वातावरण में की जाये। वह पार्टी फैक्ट्री के दौरे पर आ रही थी। ऐसे में आनन-फानन में कम्पनी ने दो ए सी मँगवाये। चालान में दो ए सी दर्ज थे पर फैक्ट्री एक ए सी पहुँचा। गार्ड ने एतराज किया तो इलेक्ट्रिशियन ने बताया कि एक ए सी बड़े साहब की कोठी में फिट करके आया हूँ। अकाउन्टेन्ट बोला कि दोनों ए सी रजिस्टर में आप दर्ज कर लो। गार्ड ने चालान पर लिख दिया कि एक ए सी प्राप्त नहीं हुआ। बात बड़े साहब तक पहुँची, उन्होंने इलेक्ट्रिशियन को आदेश दिया कि ए सी उनकी कोठी से निकाल लाये। छोटी-छोटी चीज से ले कर बड़े-बड़े सामान का भुगतान कम्पनी चालान पर होता जबकि वे जाती बड़े साहब के घर। फैक्ट्री में सब लोग बड़े साहब को मालिक कहते थे। मालिक हो कर चोरी करता है..... कुछ समय बाद बड़े साहब ने गार्ड से कहा कि कैसी ड्युटी करते हो, फैक्ट्री में चोरी बहुत हो रही है। गार्ड ने कहा कि फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे लगे हैं, देख कर बताइये कि कब चोरी हो रही है और कौन चोरी कर रहा है। बड़े साहब ने सेक्युरिटी कम्पनी को गार्ड बदलने को कहा।

बात दिसम्बर 2012 की है। टाइम ऑफिस में गार्ड की ड्युटी थी। सब की हाजरी लगाना और समय दर्ज करना काम था। मैनेजिंग डायरेक्टर की पत्नी का नाम रजिस्टर में था पर वह फैक्ट्री नहीं पहुँची थी, मैनेजिंग डायरेक्टर के बेटे की पत्नी भी ड्युटी के लिये नहीं पहुँची थी। दोनों के नाम के आगे गार्ड ने रजिस्टर में अनुपस्थित लिख दिया। रजिस्टर अन्दर गया तब एच आर वालों ने गार्ड को बुलाया और पूछा तो बता दिया कि वे ड्युटी नहीं पहुँची हैं। इस पर एच आर वाले बोले कि आगे से वह जगह खाली छोड़ दिया करो। फिर एक दिन एच आर मैनेजर 9 बज कर 45 मिनट पर और जनरल मैनेजर 9 बज कर 48 मिनट पर फैक्ट्री पहुँचे। गार्ड ने यह टाइम रजिस्टर में लिख दिये। पहले एच आर मैनेजर ने गार्ड से सवाल-जवाब किये तो बता दिया कि पंचिंग मशीन मँगवा कर देख लीजिये, रजिस्टर में सही समय दर्ज किया है। फिर जनरल मैनेजर ने गार्ड को बुलाया और समझाया कि थोड़ा देख कर टाइम डाला करो तो गार्ड ने कहा कि साहब आपका आदेश है कि नियम सब के लिये बराबर हैं, पालन किया करो, सही-सही पालन किया करो। ड्युटी साढे नौ से है, देरी पर एच आर मैनेजर और जनरल मैनेजर के एक घण्टे के पैसे नियम अनुसार कट गये।

नये वर्ष के लिये नये रजिस्टर और नये कार्ड बनाने के आदेश का पालन करते हुये गार्ड ने 31 दिसम्बर की रात यह काम किया। एच आर वाले बोले कि रजिस्टर गलत बन गये हैं और सवाल-जवाब के लिये बनाने वाले गार्ड को बुलाया। क्या गलत है पूछने पर बोले कि स्टाफ के 126 नाम 125 कैसे हो गये। रजिस्टर में पहला नाम मैनेजिंग डायरेक्टर का, दूसरा नाम मैनेजिंग डायरेक्टर की पत्नी का, तीसरा नाम मैनेजिंग डायरेक्टर के बेटे का, चौथा नाम मैनेजिंग डायरेक्टर के बेटे की पत्नी का..... नये रजिस्टर में मैनेजिंग डायरेक्टर की पत्नी का नाम नहीं था..... गार्ड ने एच आर वालों को बताया कि यह तो कभी ड्युटी आती ही नहीं, इसलिये नाम काट दिया। जनरल मैनेजर ने गार्ड का स्थान बदल दिया, टाइम ऑफिस से डिस्पैच भेज दिया।

तब डिस्पैच में ड्युटी सुबह 8 से रात 8 बजे की थी। एक रोज शिपमेन्ट के लिये 450 कारटन कन्टेनर में लोड होने थे। स्टोर मैनेजर बोला कि माल पूरा हो गया, हस्ताक्षर कर दो गार्ड। एक कारटन में 6-8-12 सिर की सुरक्षा के उपकरण और 5 कारटन कम थे। गार्ड ने गिने, ड्राइवर ने गिने, हैल्पर ने गिने, दो-दो बार गिने पर 450 की जगह 445 ही कारटन थे। गार्ड ने स्टोर मैनेजर से कहा कि 5 कारटन कम हैं, वह पूरे करो तब दस्तखत करूँगा। बात जनरल मैनेजर के पास पहुँची। वो नीचे आये और बोले कि अरजेन्ट है, माल पूरा है, जाने दो लेकिन माल कम है कह कर गार्ड ने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। बात मैनेजिंग डायरेक्टर तक पहुँची और बड़े साहब स्वयं नीचे आये, बोले शिपमेन्ट के लिये है, माल अरजेन्ट है, गार्ड को सन्तुष्ट करो, डिब्बे दुबारा गिनो। गार्ड द्वारा यह बताने पर कि 5 डिब्बे कम हैं, बड़े साहब ने पूछा कि कितना पढे हो, गिनना आता है क्या। सरकारी स्कूल में दसवीं तक पढा हूँ और वहाँ पाँचवी तक गिनती ही सिखाते हैं। इस पर बड़े साहब बोले कि सही मिले तो इनाम मिलेगा और गलत निकले तो तनखा से पैसे काटेंगे। गिनती में 450 की जगह फिर 445 ही निकले.... . रात के 8 बज चुके थे, दूसरा गार्ड ड्युटी के लिये पहुँच चुका था। जस का तस छोड़ कर गार्ड फैक्ट्री से निकला। अगले रोज मैनेजिंग डायरेक्टर ने गार्ड को दफ्तर बुलाया। तमतमाये साहब ने कहा कि गड़बड़ी थी तो मुझे क्यों नही बताया ? गार्ड ने जब कहा कि साहब आपको बताया था तो वह चिल्ला कर बोले कि झूठ बोलते हो..... ऐसी झूठ मैंने देखी-सुनी नहीं थी। सेक्युरिटी कम्पनी का ठेका खत्म कर दिया, गार्ड की वहाँ ड्युटी समाप्त हुई। बड़े साहब को फैक्ट्री में सब लोग मालिक कहते थे।

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स,
बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
फोन नम्बर : 9306159411

अक्टूबर 2015

नदी को वापस हिमखण्ड में नहीं धकेला जा सकता

आम बातचीत में काम, काम के इर्द-गिर्द जीवन शैली, न्याय से विरासत में मिली भाषा, आत्म-परिचय, मानवीय मूल्य, और विचार छिन्न-भिन्न हैं। यह टूटन पिछले तीस वर्ष के दौरान बहुत-ही तीव्र गति से हुई। अन्य धाराओं का उभरना और नजर आना बहुत तेज रफ्तार लिये है। कुछ मुखर अभिव्यक्तियों को यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

सामुहिक क्षमता, सामुहिक विलास

''इसी महीने आप देखिये, मानेसर में एक सिलाई कारीगर के खिलाफ एक्शन के विरोध में 250 टेलरों ने मशीनें बन्द कर दी। दो महीने पहले देखिये, एक फैक्ट्री में दो को निकाले जाने के विरोध में दो हजार ने काम बन्द कर दिया। छह महीने पहले देखिये, एक के पक्ष में दो दर्जन फैक्ट्रियों के मजदूर सत्ता से भिड़े। और दो वर्ष पहले की बात देख लीजिये, हजारों ने पूरा औद्योगिक क्षेत्र बन्द कर दिया।''

धागे का दूसरा सिरा हजारों सिरे लिये है

''आपको तो यह याद ही होगा, मजदूर समाचार में भी छपा था, एक फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट में एक युवा के घायल होने की खबर दूसरी फैक्ट्रियों में तत्काल पहुँच गई थी। अन्य फैक्ट्रियों के कई लोग अस्पताल पहुँचे और डॉक्टर से साफ-साफ कहा कि अगर मैनेजमेन्ट खर्च नहीं देगी तो पैसे हम देंगे, उपचार जारी रखो। यह है माहौल हमारे यहाँ का।''

हजारों में अदृश्य संधियाँ

''ग्यारह-बारह महीने पहले की बात है, पतलून की एक टाँग बड़ी और एक टाँग छोटी होने के कारण तेरह हजार पतलूनें फैक्ट्री लौट आई। और अभी जुलाई की बात है, एक अन्य फैक्ट्री की हजारों की सँख्या में एक टाँग बड़ी और एक टाँग छोटी वाली गर्म पतलूनें कन्टेनरों में, ट्रकों पर, जहाजों पर यात्रा कर रही हैं। इससे एक बात और याद आई, कुछ ही महीने पहले कम्बोडिया में हजारों में, कई फैक्ट्रियों में, सामुहिक बेहोशी का दौर चला।''

मुखर है गूँगी बैठक

'' अच्छा, आपको एक बारम्बार होती, अक्सर होती बात बताता हूँ। हमारा एक दोस्त है जो कैंटीन में सैंकड़ों साथियों के साथ लम्बी टी-ब्रेक की परम्परा बना रहा है। बैठे-बैठे आपस में खूब बातें करते हैं और मैनेजरों के आने पर चुप हो जाते हैं। उस मित्र का दावा है कि यह विचार उन्हें बंगलादेश की महिलाओं से मिला है। उसका कहना है कि बंगलादेश में यह नोरमल है कि अचानक और एक साथ हजारों महिला मजदूर फैक्ट्रियों में नहीं पहुँचती। उसका मानना है कि उन महिलाओं की क्षमता है – हजारों में आपस में बातचीत करना, बिना मैनेजमेन्ट को भनक लगे। मैनेजमेन्टें बौखला जाती हैं। दोस्त का कहना है कि वह और उसके साथी इस में निपुणता के लिये सतत रियाज कर रहे हैं। इस में जीवन के संगीत का अहसास है।''

अनेक हैं विघ्न के वाहक, अनेक हैं विघ्नेश्वर

'' आजकल काम आपस में इतने गुँथे हुये हैं कि कोई भी असहाय नहीं है, कोई भी अपने को कमजोर नहीं मानते। इधर ही जो एक लड़का आया था वह कह तो रहा था कि हम 17 सफाई कर्मी दो दिन फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये और ऐसी अफरा-तफरी फैली कि क्या बतायें। और याद हैं वो तीन लड़के जिनके द्वारा कम्प्रेसर बन्द करने से सब लाइनें बन्द हो गई थी और 6000 मजदूरों को विश्राम मिला।''

संहार नहीं, यह सृष्टि है

'' ताऊ, यह नई पीढी की तोड़-फोड़ नहीं है। यह तो प्रयोग हैं। पिछले महीने ही, दिल्ली में कला कॉलेज के छात्र क्लास रूम छोड़ कर कॉलेज के बाहर फुटपाथ पर दरी बिछा कर बैठे। अनेकों प्रकार की बातचीतें हुई, तरह-तरह के लोग आये। ताऊ, क्लास रूम की जो कल्पना है उस में तो यह नामुमकिन है। और यह जो आप ने मानेसर में देखा है, हजारों में स्त्री और पुरुष फैक्ट्रियों के बाहर हफ्तों बैठ जाते हैं। वह स्थल हैं नई सोच, नये रिश्ते, नये मंच, नई भाषा, नये जोड़ों की तलाश और रचना के।''

आदतों में शुमार है कब्जे हटाना

''भई, कब्जे तो ढीले पड़ रहे हैं। आनन्द आ रहा है। किसी से भी पूछिये कि आपका सब से मजेदार, आनन्ददायक समय हाल ही में कौनसा रहा है तो वह यही बतायेंगे कि वे कुछ घण्टे, वह एक दिन, वे दस दिन, वे बीस दिन जब मैनेजमेन्ट का कब्जा हटा कर हम दिन-रात फैक्ट्री में रहे। यह आम बात होती जा रही है, आदत-सी बनती जा रही है। यह और फैल जाये तो बहुत-ही बढिया माहौल बन जायेगा।''

अन्दर न जाना बाहर न जाने जैसा ही है

''सऊदी अरब में काम करके जो आये थे उन्होंने एक अनोखे माहौल का वर्णन किया। बसें इन्तजार करती रहती और वह भाई साहब अपने पाँच-छह हजार साथियों के साथ निवास स्थल से बाहर ही नहीं निकलते। दस-दस दिन नहीं निकलते और साल में आठ-दस बार ऐसा कर लेते हैं। सुन कर हँसी में थे कि एक साथी ने याद दिलाया। बोली यह तो हम भी कई बार कर चुके हैं। कम्पनी बसों में आये, गेट पर उतरे, और फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। सुपरवाइजर और मैनेजर भटकते रहे। हजारों में वे किस से पूछते कि आप लोग क्या चाहते हैं।''

सत्ता के सामने नाचते हुये जाते हैं तब सत्ता की बोलती बन्द हो जाती है

''एक बात पिछले पाँच वर्ष में शानदार ढँग से उभर कर आई है। एक आम समझ थी कि प्रजा रोते हुये फरियाद ले कर सत्ता के पास जाये तो सत्ता देख और सुन पाती है। इधर जब भी प्रजा नाचते हुये सत्ता के सम्मुख जाती है तब प्रजा प्रजा नहीं रहती और सत्ता सत्ता की भूमिका में नहीं रहती। प्रजा और सत्ता के सम्बन्ध को बनाये रखने का तामझाम शंका में, संकट में आ जाता है। पिछले अक्टूबर में कोलकाता में छात्रों के गीत, संगीत, नृत्य, और मौन ने सत्ता के अस्तित्व को ढीला कर दिया।''

''आप ठीक कह रहे हो शायद। हमारी फैक्ट्री में एक फायर अलार्म है। विशेषज्ञ ट्रेनिंग देते हैं कि कब, कैसे, और क्यों उसका इस्तेमाल हो। सभी ने अच्छी तरह समझ लिया। अब अगर तनखा में देरी होती है या लाइन बन्द करनी है तो हम में से कोई फायर अलार्म बजा देते हैं। कब, कैसे, क्यों यह तो खुले सवाल हैं।''

''हमारे यहाँ तो बड़ा सिम्पल है। ब्रेक में पार्क में जा कर बैठो। हँसी-मजाक, बातचीत, गहरी चर्चायें जारी रखो। चर्चाओं को चलने दो, हूटर को बजने दो, सुपरवाइजरों को आने दो, चर्चाओं को चलने दो, मैनेजरों को आने दो, हूटर को बजने दो। और फिर अचानक उठ कर वापस चले जाओ। हर ब्रेक में, हर दिन इस प्रकार के डाँस में रहते हैं।''

रोल करना नृत्य की मस्ती लिये है

''डाँस हर वक्त, हर समय, हर रोज हजारों के बीच चलता रहता है। हाल ही में इसकी एक अभिव्यक्ति सब ने देखी थी। एक फैक्ट्री से साथी निकले, अपने को रोल किये, क्या फोर्स पकड़े! दूसरी फैक्ट्री, तीसरी फैक्ट्री, चौथी फैक्ट्री, पाँचवीं फैक्ट्री, ग्यारहवीं फैक्ट्री उनके साथ रोल करने लगी। पूरा औद्योगिक क्षेत्र नृत्य की मुद्रा में आ गया। अभी आपको सुनाते हुये ऐसा लग रहा है जैसे शरीर में वह रोल आरम्भ हो गया है।''■

ब्रिजस्टोन

प्लॉट 11 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सफाई कर्मियों द्वारा स्वयं उठाये कदम का तत्काल प्रभाव पड़ा था। मार्च की तनखा 20 अप्रैल तक नहीं दी तो 21 अप्रैल को 17 सफाई कर्मी फैक्ट्री के बाहर बैठे। दफ्तर और शॉप फ्लोर पर अफरा-तफरी मची। सफाई कर्मियों ने 22 अप्रैल को भी फैक्ट्री में प्रवेश नहीं किया। हड़बड़ाई ठेकेदार कम्पनी ने 23 अप्रैल को एक-एक हजार रुपये दिये और बाकी पैसे शीघ्र दे देगी कह कर इन वरकरों को फैक्ट्री में ले गई। ब्रिजस्टोन कम्पनी पर सफाई कर्मियों के कदम का इतना असर पड़ा था कि एवन फैसिलिटी का ठेका समाप्त कर दिया।

यहाँ 2005 में आरम्भ हुई फैक्ट्री में बहुत-ही कम स्थाई मजदूर थे। दबाव में आ कर कम्पनी ने जनवरी 2013 में 200 वरकर परमानेन्ट किये। और फिर जनवरी 2014 से दो-दो, चार-चार कर निकालने लगी। मार्च 2015 तक कम्पनी ने 52 स्थाई मजदूर नौकरी से निकाल दिये थे। कम्पनी के नियमों अनुसार काम करो, यानी, सिस्टम बाईपास नहीं करो तो काम नहीं करने का आरोप। छुट्टी बकाया फिर भी विवाह के लिये छुट्टी नहीं देना – अगले साल शादी करना।

30 स्थाई मजदूर अप्रैल में गुपचुप एक यूनियन से जुड़े। श्रम विभाग से फैक्ट्री यूनियन की रजिस्ट्रेशन के कागज आये तो कम्पनी ने जुलाई में स्थाई मजदूर चेन्नै ट्रान्सफर करने शुरू किये। मध्य-सितम्बर तक 23 का ट्रान्सफर और यूनियन की सलाह पर इन्होंने ट्रान्सफर लैटर लेने से इनकार किया। इस प्रकार 15 सितम्बर तक 23 स्थाई मजदूर फैक्ट्री के बाहर हो गये तब यूनियन ने 17 सितम्बर को 24 घण्टे टूल डाउन की सूचना श्रम विभाग, मैनेजमेन्ट, थाने आदि को दी। सुबह 6 बजे 17 सितम्बर को काम बन्द, पुलिस फैक्ट्री में। पुलिस के आदेश और यूनियन के निर्देश पर 7 बजे मजदूर फैक्ट्री से बाहर निकले। बी और सी शिफ्ट के वरकर भी बाहर बैठे। अगले दिन ड्युटी के लिये गये तो कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं लिये। इस प्रकार 17-18 सितम्बर से पौने दो सौ स्थाई मजदूर और दो सौ से ज्यादा ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूर फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। कम्पनी इसे गैर-कानूनी हड़ताल कह रही है। थोड़े-से स्थाई मजदूर, कुछ ट्रेनी, और ठेकेदारों के जरिये भर्ती नये मजदूरों के जरिये फैक्ट्री में 18 सितम्बर से उत्पादन कार्य हो रहा है। यूनियन ने श्रम विभाग में शिकायत की है। तारीखें पड़ रही हैं – 21 सितम्बर, 24, 30 सितम्बर, 6 अक्टूबर, 16 अक्टूबर.....

मारुति सुजुकी मानेसर

24 सितम्बर को यूनियनों और कम्पनी के बीच तीन वर्ष का दीर्घकालीन समझौता सम्पन्न। सब कुछ शान्तिपूर्ण होने पर मैनेजिंग डायरेक्टर ने प्रसन्नता जाहिर करते हुये तीन हजार रुपये प्रत्येक स्थाई मजदूर को उपहार में दिये। शुक्रवार के अखबारों में समझौते की वाहवाही वाले समाचार। और, शनिवार को सुबह 6½ बजे की शिफ्ट में कम्पनी की मानेसर फैक्ट्री में 400 टेम्परेरी वर्कमैन काम करने फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। बी-शिफ्ट के आसपास के टेम्परेरी वर्कमैन भी फैक्ट्री गेट पर पहुँच गये। करीब 600 टेम्परेरी वर्कमैन एकत्र और कोलाहल। मारुति सुजुकी कम्पनी ने कॉरपोरेट सोशल रेस्पोन्सिबिलिटी के तौर पर आसपास के 14 गाँव गोद ले रखे हैं। वाहनों से कुछ गाँवों वाले फैक्ट्री गेट पहुँचे और आते ही टेम्परेरी वर्कमैनों पर आक्रमण कर दिया। तब पुलिस भी लाठियों से टेम्परेरी वर्कमैन को खदेड़ने लगी। एक सौ को पकड़ कर पुलिस थाने भी ले गई। दँगा के आरोप में 500 अज्ञात लोगों और जुलाई 2012 में डिस्चार्ज किये गये दो स्थाई मजदूरों पर पुलिस ने नामजद एफ आई आर दर्ज की। स्थिति तनावपूर्ण पर शान्त बताई गई और एक हजार से ज्यादा पुलिस कमाण्डो फैक्ट्री के अन्दर व बाहर तैनात किये गये। पुलिस अधिकारी ने लाठीचार्ज से इनकार करते हुये मजदूरों और गाँववालों में झड़पों के कारण दँगा हुआ वाला बयान दिया। कम्पनी ने बयान दिया कि 26 सितम्बर को ए-शिफ्ट में सामान्य उत्पादन हुआ। मारुति सुजुकी की मानेसर फैक्ट्री में कार्यरत मजदूरों के अनुसार 26 सितम्बर को ए-शिफ्ट में ए-प्लान्ट में 90 टेम्परेरी वर्कमैन ड्युटी पर नहीं आये थे और सब लाइनें रुक-रुक कर चल रही थी। ए-प्लान्ट में ए-शिफ्ट में 480 की जगह 291 कारें बनी, बी-प्लान्ट में 480 की जगह 230 गाड़ी असेम्बल हुई थी, और सी-प्लान्ट में 480 की जगह 260 वाहन तैयार हुये थे।

✶ 30 सितम्बर को कार प्लान्ट में ए-शिफ्ट में असेम्बली में शॉकर लगाते समय एक्सीडेन्ट हुआ। एक टेम्परेरी वर्कमैन की आँख में चोट लगी। मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट घायल मजदूर को आई एम टी मानेसर में ई एस आई अस्पताल नहीं ले गई बल्कि गुड़गाँव में एक अस्पताल ले गई। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। मैनेजमेन्ट अधिकारी बोले कि एक्सीडेन्ट मत बताना, कहना आँख में कुछ गिर गया।

✶ कार और इन्जन प्लान्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को अप्रैल-अगस्त 2015 के पाँच महीने का एरियर 9500-10,000 रुपये मिल गया है। ग्लास असेम्बली वरकरों को यह पैसे मिले। लेकिन सीट लाइनों पर के एम एल मजदूरों को एरियर के यह पैसे नहीं दिये हैं।

पिछले तीन वर्षीय समझौते में स्थाई मजदूरों की तनखा में 18,000 रुपये की वृद्धि थी। इस बार के तीन वर्षीय समझौते में स्थाई मजदूरों के वेतन में 16,800 रुपये की बढोतरी है।■

ग्राफिटी एक्सपोर्ट

'' 377 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में इस समय मैक्स और मिन्नी मैगी के वस्त्र तैयार किये जा रहे हैं। अगस्त में लेडीज ड्रैस पन्नी पैक के बाद कारटन पैक भी हो गये थे और शिपमेन्ट के लिये तैयार थे जब बाइंग हाउस से क्वालिटी वाले आये। कुछ कारटन खोले – किसी में प्रैसिंग खराब, किसी में सिलाई खराब। सब कारटन खोल दिये, फिर से चैकिंग होगी, धागे कटेंगे, प्रैसिंग होगी, पैक होंगे। इधर 3 अक्टूबर को नये मैनेजर ने भोजन अवकाश से 10 मिनट पहले काम बन्द करवाया और मजदूरों को समझाने लगा : अगर कम्पलायन्स आती है तो उसे बोलना कि तनखा 7 को, ओवर टाइम बिलकुल नहीं लगता, रविवार को फैक्ट्री बन्द रहती है, सवेतन और कैजुअल छुट्टियाँ मिलती हैं, बोनस देते हैं, ई एस आई तथा पी एफ लागू हैं और सब को कार्ड मिला है, नियुक्ति-पत्र मिलता है..... दिखाने को कहें तो कहना कमरे पर हैं..... कितने दिन से हो पूछें तो कहना कि अभी नये लगे हैं, यह मत कहना कि 5 महीने या 2 साल से हैं, कहना कि ठेकेदार नहीं हैं, सब कम्पनी की तरफ से हैं। साहब की बातों में मजदूर कोई रुचि नहीं ले रहे थे और आपस में बातें कर रहे थे: अनाड़ी हैं क्या जो हमें सिखा रहा है, झूठ बोलने को कह रहा है।''

ओरियन्ट क्राफ्ट

प्लॉट 15 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 1000-1200 मजदूर काम करते हैं। रविवार, 6 सितम्बर को ओवर टाइम था। भोजन अवकाश से पहले एक सिलाई कारीगर का लाइन इन्चार्ज से लफड़ा हुआ। वह वरकर को फ्लोर इन्चार्ज के पास ले गया। फ्लोर इन्चार्ज टेलर को पकड़ कर हिलाने लगा तो टेलर ने थप्पड़ जड़ दिया। वरकर को मैनेजर के पास ले गये। मैनेजर कभी पुलिस बुलाने की तो कभी एच आर विभाग ले जाने की कहने लगा। एच आर ले जाने लगे तो टेलर भाग कर प्रोडक्शन फ्लोर पर पहुँच गया। हँगामा हो गया। छुट्टी के कारण 250 सिलाई कारीगर ही थे। सब ने काम बन्द कर दिया। सब बोले कि इसे बाहर करोगे तो हम सब भी बाहर जायेंगे। जनरल मैनेजर ने बुलाया और माफी माँगी तब काम आरम्भ हुआ।

नवम्बर 2015

बहुरूपी आकृतियों की प्रतिध्वनि

हम ने उस दिन कोई मीटिंग नहीं की थी। आपस में बातचीत नहीं की थी। बुला-बुला कर कहने का नहीं किया था। सब अपने में थे, शान्त थे। अपने आप ही सब में 12½ से पहले ही हाथ धोने की बात आई।

जादू हुआ क्या ?

जादू नहीं, महीने में एक-दो बार ऐसा हो ही जाता है।

बहुरूपी : भिन्न-भिन्न इकाइयों वाला

आकृति : आकार, रूप, शक्ल, छवि

प्रतिध्वनि : गूँज, भनक, प्रभाव

शनिवार, 31 अक्टूबर।

प्रोडक्शन इन्चार्ज सुबह 10½ तीसरी मंजिल पर आया। तब तक नीचे से चायवाला नहीं पहुँचा था। कुछ वरकर चाय के लिये हाथ धो कर तैयार थे।

प्रोडक्शन इन्चार्ज : चायवाले के आने से पहले हाथ कैसे धो लिये ? जाओ अपनी-अपनी लाइन पर जाओ। फिर साहब ने गेट बन्द कर दिया और गेट के पास खड़ा हो गया– पानी-पेशाब कर जो आये उन्हें डाँटा। फिर लाइनों पर एक सुपरवाइजर के साथ आया और बोला : लन्च 1 बजे से है, कोई भी 12½ से 1 के दौरान गेट से बाहर पानी-पेशाब-हाथ धोने नहीं जायेगा। गया तो निकाल दिया जायेगा। हर लाइन पर जा कर साहब यह बोला। और, शिफ्ट 6½ छूटती है इसलिये 6 से 6½ कोई पानी-पेशाब-हाथ धोने नहीं जायेगा।

किसी मजदूर ने कुछ नहीं कहा।

सवा बारह बजे से एक-एक कर 100 से ऊपर मजदूरों ने विभाग से बाहर जा कर हाथ-मुँह धोये और वापस विभाग में आ कर लाइनों पर काम बन्द कर चुपचाप बैठ गये। प्रोडक्शन इन्चार्ज 12½ बजे आया और गेट के पास खड़ा हो गया। एक भी मजदूर हाथ-वाथ धोने, बाथरूम जाने नहीं निकला। यह देख कर कि हर लाइन पर हाथ-वाथ धो कर, काम बन्द कर वरकर बैठे हैं, साहब ने एक-दो लाइनों पर जा कर प्यार से कहा कि काम कर लो। वहाँ के मजदूरों ने दिखावट के लिये हाथ हिलाये और साहब की पीठ होते ही फिर वैसे ही। सब लाइनों के चक्कर काट कर हर लाइन पर सीनियरों से साहब कहने लगा : यह क्या अच्छा लग रहा है? 12½ से ही काम बन्द करके बैठे हो। यह बातें 6 लाइनों पर दोहराई। कोई मजदूर कुछ नहीं बोला। सब जगह काम बन्द कर बैठे रहे। जब किसी मजदूर ने साहब की बात पर गौर नहीं किया तब साहब आखिरी लाइन पर जोर-जोर से फोरमैन से कहने लगा कि यह तेरी गलती है, पहले तू काम बन्द करता होगा, तभी पीछे वाले बन्द करते होंगे। फिर शान्त हो गया साहब – जैसे एक बार पागल हो कर शान्त होते हैं। निचली मंजिलों से इक्का-दुक्का मजदूर इस दौरान ऊपर हाथ-वाथ धोने आया तो मजदूरों ने हू-हा की साहब को यह बताने के लिये कि कोई आया है बाथरूम जाने। साहब उन वरकरों पर चिल्लाने लगता और वह वरकर लौटने लगते तब पूरे फ्लोर के मजदूर हँसते। अच्छा-खासा मजाक बन गया।

साँय 6 बजे फिर प्रोडक्शन इन्चार्ज तीसरी मंजिल पर आया ही नहीं। तीसरी मंजिल पर दिन की शिफ्ट में 9 फोरमैन, 6 सुपरवाइजर, और दो क्वालिटी वाले स्टाफ के लोग हैं। इनके ऊपर प्रोडक्शन इन्चार्ज है।

सोमवार, 2 नवम्बर को तीसरी मंजिल पर सवा बारह ही हाथ-वाथ धो कर, काम बन्द कर, लाइनों पर एक बजे के लन्च हूटर तक सब बैठे रहे। प्रोडक्शन इन्चार्ज 12½ पर आया ही नहीं।

– ग्लोब कैपेसिटर फैक्ट्री के कार्यस्थल से

मुन्नार से सीखे मानेसर

5 सितम्बर को छोटे-छोटे समूहों में चलते हुये महिला मजदूर के डी एच पी लिमिटेड के मुख्यालय पर पहुँची। केरल में मुन्नार में चाय बागान मजदूरों की अपनी अद्भुत गतिविधियों का यह आरम्भ था।

स्वयं सोचते, स्वयं निर्णय लेते, स्वयं कदम उठाते चाय बागान मजदूरों की सँख्या शीघ्र ही सात हजार हो गई। सीटू, एटक, इन्टक आदि यूनियनों को छोड़ कर महिला मजदूरों ने आपस में तालमेलों को बढाया। प्रत्येक स्वयं की प्रतिनिधि बनी और जोड़ बनाने में हर एक सक्रिय हुई।

अक्टूबर-आरम्भ में के डी एच पी लिमिटेड चाय बागान में महिला मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। उत्पादन बन्द हो गया। हजारों महिला मजदूरों की सक्रियता की गूँज ने हलचलें बढा दी।

वाहवाही के लिये, अपने भाव बढाने के लिये, नाथ कर सौदा करने के लिये पार्टियों और यूनियनों के नेता ''समर्थन'' देने पहुँचने लगे। महिला मजदूरों ने हर रंग के लीडर को भगा दिया। सीटू लीडर से सी पी एम का विधायक बना बन्दा तो चप्पलों से पिटा। मजदूरों ने 150 नेताओं की सूची जारी की जो कम्पनी से कार, मकान, पैसे आदि लेते हैं।

डेढ महीने से जारी सक्रियता और दो सप्ताह से उत्पादन बन्द की स्थिति से निकलने का कम्पनी को कोई अन्य रास्ता नहीं मिला तब 18 अक्टूबर को मैनेजमेन्ट पीछे हटी। यूनियनों और के डी एच पी मैनेजमेन्ट के बीच दस प्रतिशत बोनस का जो समझौता हुआ था वह रद्द कर मजदूरों को बीस प्रतिशत बोनस की घोषणा की गई। संग ही संग कम्पनी ने वेतन में तीस प्रतिशत वृद्धि का ऐलान भी किया।

स्वयं की सोच, स्वयं के निर्णय, स्वयं के कदमों के इस परिणाम ने के डी एच पी लिमिटेड के आसपास के चाय बागानों के संग-संग रबड बागानों और इलायची बागानों में मजदूरों की सक्रियता बहुत बढा दी है। अखबारों, पत्रिकाओं, इन्टरनेट पर इसकी खूब चर्चा हो रही है। गूँज दूर-दूर तक सुनाई पड़ रही है। तमिल नाडु और कर्नाटक स्थित बागानों में मजदूरों में खुद की पहलकदमी के तेजी से बढने की रिर्पोटें हैं। उत्तर पूर्वी राज्यों के बागान मजदूरों में ऐसी गतिविधियों के समाचार हैं।

दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में इन पाँच वर्षों के दौरान मजदूरों की सोच और गतिविधियाँ वह गमक-धमक उत्पन्न कर रही हैं कि आशा-उत्साह-आनन्द-उल्लास हिलोरें लेने लगे हैं। यहाँ से दो हजार मील दूर मुन्नार में चाय बागान महिला मजदूरों की शुद्ध, परिष्कृत प्रतिध्वनि उत्सव की वेला है। फरीदाबाद, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, उद्योग विहार गुड़गाँव, आई एम टी मानेसर मजदूरों द्वारा आनन्द और उल्लास से मुन्नार मजदूरों से आये उपहार को ग्रहण करने का समय है यह।

फँस क्यों रहे हैं ब्रिजस्टोन मजदूर?

प्लॉट 11 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित ब्रिजस्टोन फैक्ट्री में मजदूरों ने 2013 में अपनी पहल पर उठाये कदमों से कम्पनी पर इतना दबाव बनाया था कि मैनेजमेन्ट ने अपने लिये कुछ राहत के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों को परमानेन्ट किया। इधर सफाई कर्मियों के अप्रैल माह में दो दिन फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने ने कम्पनी की हवा निकाली और मैनेजमेन्ट को ठेकेदार बदलना पड़ा। बगल की टालब्रोस फैक्ट्री में नेताओं के फेर में पड़ कर वहाँ के मजदूरों के चोट खाने को ज्यादा समय नहीं हुआ है। ऐसे में ब्रिजस्टोन वरकर लीडरों के फेर में क्यों पड़े?

फैक्ट्रियों के अन्दर स्थाई और अस्थाई मजदूरों के तालमेल मैनेजमेन्टों की नाक में दम किये रहते हैं। ऐसे हालात में इन एक-डेढ साल में ही बजाज मोटर, बैक्सटर, ऑटो लिव, मुंजाल किरियु में मजदूरों को यूनियनों की मदद से दो-तीन-चार महीने बाहर बैठा कर मैनेजमेन्टों की पुनः नियन्त्रण की पॉलिसी से औद्योगिक क्षेत्र के मजदूर परिचित हैं। ऐसे में यूनियन लीडरों के चक्कर में ब्रिजस्टोन मजदूर क्यों आये?

24 सितम्बर को हो जायेगा। फिर 30 सितम्बर को हो जायेगा। पक्का हो जायेगा 6 अक्टूबर को। इन्टक यूनियन लीडरों की एक के बाद दूसरी थोथी बात ब्रिजस्टोन मजदूर क्यों सुनते रहे?

रंग-बिरंगे लीडरों ने 12 अक्टूबर को 270 अस्थाई और 170 स्थाई मजदूरों के सम्मुख भाषणों में कहा था कि 16 अक्टूबर की तारीख पर फैसला नहीं हुआ तो सब यूनियनें मिल कर गुड़गाँव बन्द कर देंगी। औद्योगिक क्षेत्र में कई फैक्ट्रियों के गेटों पर यूनियनों के ऐसे ऐलानों की हवा निकल चुकी है। ब्रिजस्टोन मजदूरों ने 12 अक्टूबर और फिर 3 नवम्बर को नेताओं के ऐसे ऐलान क्यों सुने? मुन्नार की महिला मजदूरों की तरह लीडरों को भगाया क्यों नहीं?

और, मजदूर अपनी ताकत देखें। रंग-बिरंगे नेताओं द्वारा महीने-भर से शान्त रखे 450 मजदूरों से ब्रिजस्टोन कम्पनी और हरियाणा सरकार बहुत भयभीत हैं। मानेसर थाने की पुलिस फैक्ट्री के अन्दर और बाहर तैनात है। सरकार ने 17 अक्टूबर को एच एस आई आई डी सी अधिकारियों के साथ एक बस और दो

जिप्सी में नीली वर्दी वाले कमाण्डो भेजे, जे सी बी मशीन के साथ। एक तम्बू हटाने के लिये कमाण्डो और जे सी बी !

दिन-रात एकत्र हो कर बैठते ब्रिजस्टोन मजदूर जे सी बी से तम्बू रौंदने के बाद तिरपाल बिछा कर खुले में बैठे। इधर सरकारी अफसर और उधर कोर्ट से यूनियन लीडरों ने फोन से 3 दिन के स्टे की आड में 18 अक्टूबर को मजदूरों को तितर-बितर किया। नेताओं के 3 दिन 6 दिन बाद भी पूरे नहीं हुये। तो फिर 18 से 26 अक्टूबर के दौरान ब्रिजस्टोन फैक्ट्री के आसपास मजदूरों ने सन्नाटा क्यों रहने दिया? लीडरों की 26 अक्टूबर देख लो कि बातें सुनी ही क्यों ?

3 नवम्बर को 450 मजदूर श्रम विभाग में एकत्र थे। सहायक श्रम आयुक्त को बाहर बुलाओ की आवाजें उठी तब छोटे लीडरों की ''अन्दर बात चल रही है, शान्त रहो'' पर बवाल क्यों नहीं किया? कुछ अस्थाई मजदूरों ने मार्के की बात कही : ''अन्दर की बात अन्दर ही रह गई दो महीने से। अब जो होना है, सब के बीच में हो।'' इस पर नेताओं की लीपापोती को सहन क्यों कर लिया? और, रंग-बिरंगे यूनियन लीडरों की बकवास कि 9 नवम्बर के बाद सब यूनियनें मिल कर गुड़गाँव से बावल तक चक्का जाम कर देंगी, काली दिवाली मनायेंगे, सुन कैसे ली ? नेताओं को जाने कैसे दिया? मुन्नार की महिला मजदूरों की सुनें-गुनें-करें।

असंगत बन गये हैं कानून

कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। कानूनों का कार्य नहीं कर पाना, कानूनों का नाकारा हो जाना, कानूनों का असंगत बन जाना एक लक्षण है। यह इस बात का लक्षण है कि जिन सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर कानून खड़े हैं वे सामाजिक सम्बन्ध कार्य नहीं कर पा रहे, वे सामाजिक सम्बन्ध नाकारा हो गये हैं, वे सामाजिक सम्बन्ध असंगत हो गये हैं। सामाजिक सम्बन्ध और उसके कानूनों का असंगत होना नये सामाजिक सम्बन्ध की आवश्यकता की अभिव्यक्ति भी है, नये सामाजिक गठन की पूर्ववेला भी है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, खरीद-बिक्री, हानि-लाभ, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा वाले सामाजिक सम्बन्ध की जगह क्या? विश्व के सात अरब लोगों में इस पर मन्थन हो रहा है। हमें लगता है कि फैक्ट्री मजदूरों की इस सामाजिक मंथन में उल्लेखनीय भूमिका है।

मोडलामा मजदूर : '' प्लॉट 4 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री गेट पर 26 अक्टूबर को 20-25 स्त्री-पुरुष मजदूर जो वहाँ की नौकरी छोड़ चुके थे, वहाँ किये काम के पैसे लेने पहुँचे। गेट पर ठेकेदार मिला, पैसे नहीं दिये, स्त्री-पुरुष मजदूरों ने ठेकेदार के थप्पड़ मारे और जबरन फैक्ट्री के अन्दर घुस कर एच आर विभाग पहुँचे। वहाँ साहब घबरा गये और बोले कि बैठो-बैठो, पैसे देते हैं – 3 बजे सब को उनके पैसे दे दिये।''

कलमकारी श्रमिक : ''383 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 700 मजदूरों ने सितम्बर 2014 में दो दिन काम बन्द किया तब ई एस आई तथा पी एफ लागू की गई। इस वर्ष होली पर कम्पनी ने एडवान्स देने से इनकार किया तो मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। पूरे दिन काम बन्द किया तब दूसरे दिन एडवान्स दिया। बोनस नहीं देते। इधर 1 नवम्बर से वेतन वृद्धि का नोटिस कम्पनी ने लगाया है।''

भैरों सूट कामगार : '' सी-16 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 2 नवम्बर को साँय 4 बजे जाँच वाले आये। छत पर 400 मजदूर चाय पी रहे थे, मैनेजमेन्ट ने गेट बन्द कर सब मजदूरों को छत पर ही रखा। जब तक चैकिंग वाले रहे तब तक स्टाफ के अलावा किसी को नीचे नहीं आने दिया। रजिस्टर में हैल्परों को 9048 रुपये वाला न्यूनतम वेतन दिखाते हैं पर देते 6000 रुपये हैं।'' ***सुरक्षाकर्मी :*** ''एच एस आई आई डी सी ने आई एम टी मानेसर में रोड़, पानी की टंकी, ऑफिस के लिये सिंहनाद सेक्युरिटी के जरिये 32 गार्ड रखे थे। वह ठेका 30 सितम्बर को खत्म कर दिया। लेकिन एच एस आई आई डी सी के लिये ड्युटी कर चुके 32 गार्डों को अगस्त और सितम्बर की तनखायें 4 नवम्बर तक नहीं दी थी।''

टैन ग्रीन श्रमिक : '' प्लॉट 153 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 600 कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे 125 मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। यहाँ निर्यात के लिये चमड़े के जूते और चप्पल बनते हैं। जब ऑडिट वाले आते हैं तब मैनेजमेन्ट कैजुअलों और ठेकेदारों के जरिये रखों की छुट्टी कर देती है। सितम्बर-अन्त में ऑडिट वालों के सुबह आने की सूचना पर कम्पनी ने बिना ई एस आई व पी एफ वाले 725 मजदूरों को 11½ बजे आने को यह सोच कर कहा था कि तब तक ऑडिट वाले जा चुके होंगे। ऑडिट वाले सुबह 10½ से साँय 4½ तक फैक्ट्री में रहे थे इसलिये 11½ बजे मैनेजमेन्ट ने 725 मजदूर गेट से लौटा दिये थे। इधर 2 नवम्बर को मैनेजमेन्ट ने 725 मजदूरों को कह दिया कि 4 को ऑडिट वाले आयेंगे इसलिये उस दिन उनके के लिये गेट बन्द रहेगा।'' ***लारा इन्टरनेशनल कामगार:*** ''155 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में पाँच ठेकेदारों के जरिये 125 टेलर रखे हैं जिनमें 25 की ही ई एस आई व पी एफ हैं। टेलरों को बोनस नहीं देते। पीस रेट पर खींचातान में मजदूरों द्वारा 2-4 घण्टे काम बन्द करना आम बात है।''

दिसम्बर 2015

दो–तीन की बातचीत हजारों के साथ

तुम्हारे यहाँ 7600 लागू
कर दिया क्या ?

हाँ, लागू कर दिया यार। पर हम लोग तो
9000 पहले ही ले रहे थे। हमारे पैसे
नहीं बढाये।

हमारी बगल वाली फैक्ट्री में तो बहुत
मस्त किया है। सब ऑपरेटर बैठ कर
3000 बढाने की कह रहे हैं।

तूने हिसाब लगाया कि न्यूनतम वेतन
कितना बनता है ?

मेरे पड़ोसी ने हिसाब लगाया
था। बोल रहा था 44,000 बना।

मेरे हिसाब से तो 36,000 ही बना।
8,000 कहाँ मिस कर गया मैं?

यार, मेरे साथी लोग ठीक कह रहे हैं।
बढाने से बात शुरू करो।

मैनेजर कह रहा था शकरकन्दी
और अमरूद खाओ। ये कुछ
सूपर फूड होते हैं।

अच्छा सुन, तू अपनी सहेली के
फँसे हुये फण्ड के बारे में बता रही थी न।

हाँ, यार। वो कई लोग हैं। उनका
तीन साल का फण्ड फँसा है।

एक बुजुर्ग वरकर कह रहे थे
कि पैसे निकालने के उपाय हैं।
उन्होंने फँसे हुये पैसे निकाले हैं।

हूँ !!! पता कर।
अच्छी तरह से साफसुथरा
मैसेजे लिख कर भेज।
मैं आगे भेज दूँगी।

दो-तीन दिन टाइम दे। उन से मिल कर
पता करती हूँ। वैसे वो बाजरे की बड़ी
बड़ाई करते हैं। कहते हैं कि गेहूँ ने
बाजरा किनारे कर बहुत गड़बड़ कर दी।

मेरा ताऊ भी यही कहता है।
लग रहा है सुनना पड़ेगा।

कुछ पौधे खरीदने गया मैं।
बहुत महँगे चल रहे हैं।

हा ! हा !! हा !!! यार न्यूनतम वेतन
वाले हिसाब में पौधे होने चाहियें।

हमारा जो एक टीचर था न स्कूल में
वो वैसे तो काफी बोरिंग था पर एक
चीज बोलता रहता था जो अब भी
मन में घूमती रहती है।

?

वो कहते थे कि एक पौधे को
पानी देते-देते पेड़ बनते देखो तो
अपने में और दूसरों के अन्दर
बहुत कुछ देख पाओगे।

प्लास्टिक का पौधा खरीद ले
और कमरे में रख ले।

हा! हा!! हमारी कम्पनी के
डायरेक्टर के आफिस में तो
जंगल छपा बहुत बड़ा वॉलपेपर है।

हा! हा!! डरा दे कि
किसी दिन तू जंगल से
निकल कर उसके रूम
में बैठ जायेगा।

ऐसा तो होना बनता है।

श्रम विभाग दिल्ली

डी-5 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में निशा फैशन के एक मजदूर ने 22 मई को कम्पनी से 15 दिन की छुट्टी माँगी। प्रोडक्शन इन्चार्ज बोला कि घर जाना है तो इस्तीफा लिख कर जाओ। वरकर ने छुट्टी का आवेदन साहब की टेबल पर रखा और घर चला गया। छुट्टी से लौटने पर कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं लिया। वरकर ने श्रम विभाग में शिकायत की।

श्रम निरीक्षक फैक्ट्री आया। कम्पनी से कहा कि ड्युटी पर रख लो तो बोले कि हाँ, रख लेंगे। मई माह की तनखा दी और ओवर टाइम के पैसे टाल दिये। अगले दिन ड्युटी पर गया तो कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं रखा।

फिर श्रम विभाग गया। श्रम निरीक्षक, श्रम उपायुक्त, सहायक श्रम आयुक्त यही बोले कि केस करो, डिमाण्ड नोटिस दो। मजदूर ने माँग-पत्र देने से इनकार किया, अदालत में बरसों तारीखें भुगतने से मना किया, शिकायत पर कार्रवाई के लिये कहा। पुष्पा भवन, पुष्प विहार स्थित श्रम विभाग के 15 दिन चक्कर कटवाये। डिमाण्ड नोटिस, कोर्ट-कचहरी की राह मजदूर द्वारा ठुकरा दिये जाने पर अधिकारी बोले कि जहाँ जाना है चले जा, आयेगा हमारे पास ही।

श्रम आयुक्त को यह सब लिख कर दिया। लेबर कमिश्नर ने मामला पुष्पा भवन कार्यालय भेजा। पुष्पा भवन में पूछने पर बोले कुछ नहीं आया है और चक्कर कटवाये। इस पर श्रम आयुक्त कार्यालय गया। वहाँ से डायरी नम्बर दिया। डायरी नम्बर ले कर पुष्पा भवन पुहुँचा तब भी टालमटोल और तुझे कुछ नहीं मिलेगा वाली बातें। कागज नहीं पहुँचे की बात लिख कर दो को कहा तब कुछ नरम पड़ कर इधर-उधर ढूँढने लगे। तीन घण्टे बाद बोले कि कागज पहुँचने वाले दिन ही श्रम निरीक्षक को दे दिये थे।

श्रम निरीक्षक फिर सहायक श्रम आयुक्त के पास ले गया और लेबर कमीश्नर के पत्र का जिक्र किया। कहीं चला जा कहने वाले साहब ने लेबर इन्सपैक्टर से फैक्ट्री जा कर ड्युटी पर रखवाने को कहा। साँय को मैनेजमेन्ट श्रम निरीक्षक से फिर बोली कि हाँ, रख लेंगे और अगले दिन फिर ड्युटी पर नहीं रखा। श्रम निरीक्षक ने फिर वरकर से 15 दिन चक्कर कटवाये।

मजदूर ने लेबर कमिश्नर को फिर लिख कर दिया। श्रम आयुक्त से कागज फिर पुष्पा भवन पहुँचे। श्रम निरीक्षक अपनी कार में बैठा कर वरकर को ओखला औद्योगिक क्षेत्र ले गया। साहब फैक्ट्री में चला गया और उनके ड्राइवर ने इधर-उधर घुमाने के बाद फैक्ट्री के पास उतार दिया। इन्तजार कर रहे मजदूर के पास दस मिनट बाद फोन आया कि तूने मेरे ड्राइवर से कहा कि वसूली करता हूँ, जा तेरा कुछ नहीं करूँगा।

मजदूर ने फिर लिख कर श्रम आयुक्त को दिया। लेबर कमिश्नर ने फिर पुष्पा भवन भेजा। श्रम निरीक्षक ठण्डा पड़ गया। बोला कि तुम ने तो फोन भी नहीं किया। वरकर बोला कि बीस बार फोन किया पर उठाया ही नहीं। लेबर इन्सपैक्टर मजदूर को ले कर फैक्ट्री गया और अपने सामने साँय चार बजे ड्युटी पर रखवाया। तीन-चार घण्टे काम करते हो गये तब तुझे नहीं रखेंगे कह कर कम्पनी ने फैक्ट्री से निकाल दिया।

अगले दिन श्रम निरीक्षक मजदूर को ले कर सहायक श्रम आयुक्त के पास ले गया। साहब बोले, '' निकाल दिया तो मैं क्या करूँ। लिख कर दे। मैं रखवा दूँगा। कम्पनी फिर निकाल देगी। फिर लिख कर देना, फिर रखवा दूँगा, फिर निकाल देंगे। यह तो ऐसे ही चलेगा।''

मजदूर ने यह बातें 30 नवम्बर को लिख कर लेबर कमिश्नर और श्रम मन्त्री, दिल्ली सरकार को दी हैं।

पाँच महीने की यह कहानी है।

ओखला फेज-1 में डी-5 स्थित निशा फैशन/थीम एक्सपोर्ट फैक्ट्री में कार्यरत 1000 मजदूरों में 10 सैम्पलिंग टेलरों को ही दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। यहाँ हैल्परों की तनखा 7500-8000 और प्रोडक्शन टेलरों की 9500 रुपये है। एक हजार में 250 की ही ई एस आई व पी एफ हैं। महीने में 120 घण्टे के करीब ओवर टाइम जिसका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, 18-20 तारीख को। मजदूर यह बातें श्रम विभाग में कहता तो वो कहते कि तू इस सब को छोड़ और अपनी बात कर।

पहली नौकरी

एम.एस सी. करने के बाद खाली बैठे दस महीने होने को हो गये तब जान-पहचान के जरिये एक बड़ी फैक्ट्री में लगा। पहली बात : फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी। दूर है और फैक्ट्री आने-जाने में साइकिल से सवा घण्टा लग जाता है।

पहलेपहल दिन की ड्युटी रही और लगा कि फैक्ट्री में किसी वरकर के पास टाइम नहीं है। हर विभाग में सुपरवाइजर और इन्चार्ज चिल्लाते दिखते और कहते कि अपनी सोच बदलो। मैंने साथी मजदूरों से पूछा कि सोच में क्या बदलने को कह रहा है

साहब। उन्होंने बताया कि प्रोडक्शन बढाने की बात कर रहा है, हरामी है, पागल है, इसकी सुना मत करो। आराम से काम किया कर। मैंने सोचा कि क्या बदलूँ 12 घण्टे की ड्युटी में। मन तो करता है कि चिल्लाने वालों को मारूँ। एक दोस्त कह रहा था कि उनकी फैक्ट्री में नाइट में कई बार इतना ऊब जाते हैं स्टूल इधर-उधर फेंकने लगते हैं, खूब उधम करते हैं, सुपरवाइजर से हाथापाई की नौबत आ जाती है। कैजुअल वरकर किसी से नहीं डरते। दो दिन में ही मेरी कई डिपार्टों के लोगों से बातचीत होने लगी।

मैंने पहली बार कुछ महिलाओं को लाइन पर 12 घण्टे खड़े-खड़े काम करते देखा। काफी महिलायें 12 घण्टे बैठे-बैठे लाइनों पर काम करती देखी। पुरुष मजदूरों के महिला मजदूरों से बात करने पर मैनेजमेन्ट ने रोक लगा रखी है।

सब इसी इन्तजार में रहते हैं कि कब 12 घण्टे पूरे हों। सुबह 9 से काम शुरू होने के बाद मैं रात के 9 बजने का बेसब्री से इन्तजार करता। बहुत ज्यादा होते हैं 12 घण्टे। और कुछ वरकरों को जबरन 24 घण्टे भी रोक लेते हैं।

चार दिन बाद रात की 12 घण्टे की ड्युटी शुरू हुई। मन नहीं था फिर भी गया। काम करते-करते नींद आ रही थी। रात दो बजे लन्च के समय सब वरकर आधा घण्टा कैन्टीन में सो गये। गार्ड उठाते हैं। एक बन्दा तो शौचालय में जा कर डेढ घण्टे सो गया। दिन के तो 12 घण्टे फिर भी कट जाते हैं, रात वाले 12 घण्टे तो पूरे होते ही नहीं दिखते। प्रोडक्शन पूरा करने के चक्कर में सुबह पाँच बजे से हर डिपार्ट में बहुत-ही तेजी से काम करते हैं। मेरे नजदीक वाले मोल्डिंग डिपार्ट में सुबह आग लगी और दो मजदूर जल गये – एक अस्पताल में सात दिन से भर्ती है।

दूसरी शिफ्ट वाले पहुँच जाते हैं तब कार्यरत लोगों की छुट्टी करते हैं। रात की शिफ्ट वालों को 9 की बजाय छूटने में 9½ तो बज ही जाते हैं। घर पहुँचते 10½, नहाने-खाने में 11½ हो जाते हैं। एक दिन तो खाना खाते-खाते सो गया। नाइट ड्युटी में नींद पूरी होती ही नहीं। रात ड्युटी में कई लोग तो नींद में सोते-सोते काम करते हैं और बोलने पर चौंक जाते हैं।

शुक्रवार को रात की ड्युटी कर मैं शनिवार सुबह फैक्ट्री से निकला। मेरे आगे साइकिल पर फैक्ट्री का एक और वरकर था। सड़क पार करते समय अचानक उसे एक ट्रैक्टर ने टक्कर मारी। बुरी तरह घायल हो गया। ऑटो में रख कर कुछ दूर गये थे जब फैक्ट्री की एम्बुलैन्स पहुँची। अस्पताल में होश नहीं आया, दो दिन बाद मृत्यु हो गई।

लाइब्रेरी–जेनेसिस और साई–हब

कुछ मित्रों द्वारा मिल कर बनाई लाइब्रेरी- जेनेसिस और साई-हब इन्टरनेट पर दो साइट हैं जो ज्ञान-विज्ञान वाली सामग्री मुफ्त में पी डी एफ फाइल में उपलब्ध करवाती हैं। एक बड़ी धन्धेबाज प्रकाशक कम्पनी, एल्सेवियर ने अमरीका में न्यायालय में उन पर कॉपीराइट उल्लंघन का केस दायर कर करोड़ों रुपये हर्जाने की माँग की है ताकि लाइब्रेरी- जेनेसिस तथा साई-हब बन्द हो जायें और मुफ्त-फ्री-निःशुल्क की विश्व-व्यापी बयार-बयारा-बयारी को डरा कर रोका जा सके। निःशुल्क को, फ्री को बाँधने-बींधने के इस नये प्रयास के विरोध में 30 नवम्बर 2015 से एक चिट्ठी इन्टरनेट पर घूम रही है। इस पत्र को हिन्दी में पढ सकते हैं, सुन भी सकते हैं इन्टरनेट पर

<http://custodians.online/hindi.html> लेख, कविता, कहानी, उपन्यास, पाठ्यपुस्तक, गीत, संगीत, चित्र, चलचित्र की प्रतिलिपि, हबहू प्रतिरूप, पुनः उत्पादन की लागत आज बहुत-ही कम हो गई है। बात एक प्रति या सौ-दो सौ कॉपियों की नहीं है। बात एक स्थान, एक छोटे-मोटे दायरे की नहीं है। आज लाखों-करोड़ों प्रतियाँ संसार में किसी भी स्थान पर, कभी भी, क्षणों में, शून्य के निकट आती लागत में उपलब्ध हैं। किसी भी स्थान से दुनिया-भर में कहीं भी अत्यन्त कम लागत पर इन्हें सैकेण्डों में बहुत आसानी से पहुँचा सकते हैं।

भौतिक उत्पादन में, अनाज-कपड़ा-मकान-जूते के उत्पादन-पुनः उत्पादन में भी आज लागत बहुत कम हो गई है, तेजी से और कम हो रही है। फैक्ट्री में मजदूर अपनी लागत-अपनी दिहाड़ी चार-पाँच मिनट के कार्य में निकाल देते हैं।

ऐसे में खरीद-बिक्री, लाभ-हानि, रुपये-पैसे, मण्डी-मुद्रा दुखदायी मजाक बन गये हैं। भारत सरकार 15 रुपये किलो में अनाज खरीद कर अस्सी करोड़ लोगों को एक-दो रुपये किलो में बेचने के लिये सेना-पुलिस-प्रशासन पर लाखों करोड़ रुपये खर्च करती है।

लाइब्रेरी-जेनेसिस और साई-हब पर मुकदमे फूहड़ प्रहसन हैं क्योंकि लाखों-करोड़ों लोग हर रोज एक-दूसरे को इन्टरनेट पर मुफ्त में सामग्री उपलब्ध करवाते हैं। और, इस सन्दर्भ में घूम रही चिट्ठी इन्टरनेट पर निःशुल्क आदान-प्रदान को और प्रेरित कर रही है। भौतिक वस्तुओं का फ्री में आदान-प्रदान भी दुनिया में बढ रहा है, और तेजी से बढने की परिस्थितियाँ हैं। डर रेत की दीवार है। लालच रेत की दीवार है। हम सात अरब लोग आज एकमेव और एकमय के, unique and together के दौर में हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

डाक पता :

मजदूर लाइब्रेरी,

ऑटोपिन झुग्गी,

एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

(यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच नाले की बगल में है।)

शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।

आदान–प्रदान बनाम शास्त्रार्थ

प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में होती है।

जो है उसके किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति का हर समय वास्ता रहता है।

जो हैं वे भौतिक रूपों में हो सकती हैं; कौशल स्वरूपों में हो सकती हैं; विचारों के, धारणाओं के रूपों में हो सकती हैं; अथवा इनके अनेक मिश्रणों में हो सकती हैं।

जो हैं उनकी गतियाँ भिन्न हैं। उनमें होते परिवर्तनों की अवधि और गति भिन्न हैं। जो हैं वो (और जो थी तथा जिनके होने की सम्भावनायें हैं वो भी) एक-दूसरे को हर समय प्रभावित करती हैं।

स्पष्ट लगता है कि हम सब का वास्ता अत्यन्त जटिल और प्रत्येक क्षण परिवर्तन की स्थिति में जो हैं उन से रहता है। इसलिये यह भी लगता है कि हर एक के लिये हर समय आंकलन में चूकने की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। मेरा-तेरा गलती करना, गलत होना स्वाभाविक लगता है।

ऐसे में हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक लोगों के बीच बातचीतें, चर्चायें सर्वोपरि महत्व की लगती हैं। आज पृथ्वी पर फैले सात अरब मनुष्यों के बीच होते आदान-प्रदानों को बढाना प्रत्येक व्यक्ति के संगत रहने के लिये, अर्थपूर्ण जीवन के लिये एक प्राथमिक आवश्यकता लगती है।

जबकि शास्त्रार्थ में

हर व्यक्ति सामान्य तौर पर स्वयं को सही बताता है।

प्रत्येक अपने शास्त्र को सर्वोपरि कहती है।

शास्त्र की रचना ईश्वर-गॉड-अल्लाह ने की है कहने वाले हैं। अवतार, गॉड के पुत्र, नबी ने ईश्वरीय वाणी को शास्त्र-रूप में मानव प्रजाति को उसकी भलाई के लिये उपहार दिया है कहने वाले हैं।

शास्त्र की रचना महान मार्क्स ने, महान लेनिन ने, महान माओ ने, महान अम्बेडकर ने, महान..... ने की है कहने वाले हैं।

शास्त्रार्थ का सार : मैं-हम सही और तुम-वे गलत।

शास्त्रार्थ का परिणाम सामान्य तौर पर अनुयायी अथवा शत्रु होते हैं। मैं-हम-मेरे-हमारे-अपने-मित्र और वो-अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु की रचना-पुष्टि शास्त्रार्थ का चाहा-अनचाहा परिणाम होता है। वर्तमान में आंकलनों पर होता शास्त्रार्थ ही बहुत अधिक कटुता लिये रहता है। विगत के शास्त्रों के आधार पर शास्त्रार्थ.....

शास्त्री बनना है, बने रहना है और शास्त्रार्थ करना है अथवा आदान-प्रदान बढाना है ? इनमें प्रत्येक चुन सकती है, हर एक चुन सकता है।